शेक्सपियर

बारहवीं रात

अनुवादक: रांगेय राघव



बारहवीं रात

शेक्सपियर

'ट्वेल्फ़्थ नाइट' का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक : डॉ. रांगेय राघव

राजपाल

मूल्य : पैंतीस रुपये (Rs. 35.00)

ISBN : 81-7028-174-1
TWELFTH NIGHT (Play) by Shakespeare
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली
www.rajpalsons.com

शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेज़ी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफ़ोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐन्हैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी ऐलिज़ाबेथ के शासन-काल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यहीं आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाए। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्राय हो गए, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएं अलग। उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, राजा लियर, रोमियो जूलियट (दुःखान्त); ग्रीष्म-मध्य रात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एडू अबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान

(सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं। प्राय: उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भांति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं। जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती।

भूमिका

'बारहवीं रात' एक सुखांत नाटक है। इसका लेखन-काल अंतत्साक्ष्य और बहिस्साक्ष्य की परीक्षा के उपरांत १६०१ ई० माना जाता है। इस नाटक में दो कथाएं हैं—एक प्रेम की कथा, दूसरी है हास्य कथा। प्रथम का स्रोत इन ग्रन्थों से माना जाता है—एपोलोनियस और सिल्ला; ग्लि' इन्गन्नति तथा इन्गन्नि। बैण्डेलो के उपन्यासों के संग्रह में इसका प्रारंभिक रूप माना जाता है। बैण्डेलो की इतालवी भाषा की रचना से यह कुछ परिवर्तन के साथ बैलेफोरेस्ट द्वारा फ्रेञ्च में उतर आई। किन्तु इसकी हास्य कथा शेक्सपियर की अपनी ही है। वह मौलिक है। इन हास्य पात्रों का सृजन कवि की अपनी प्रतिभा का परिणाम है।

'बारहवीं रात' का दूसरा नाम और है—'जैसी तुम्हारी इच्छा हो'। उन दिनों के हल्की चीज़ों के देखने के शौकीन दर्शकों के लिए यह नाम काफी दिलचस्प था। बड़े दिन यानी क्रिसमस के बारह दिन बाद, अर्थात् ६ जनवरी को इंगलैंड में एक उत्सव हुआ करता था, जो क्रिसमस के बाद काफी महत्त्व रखता था। उस दिन कई खेल भी होते थे। सब मित्र और परि-वार के लोग इकट्ठे होते थे और केक काटा जाता था। उसे बांटने पर जिस पुरुष और स्त्री के केक के टुकड़ों में मटर और सेम पाए जाते थे उन्हें उस दिन राजा और रानी मान लिया जाता था। इस नाटक में भी तीन पति और पत्नियां बनती हैं। शायद इसीलिए इसका नाम बारहवीं रात रखा गया है। दूसरा नाम 'जैसा तुम चाहो' से बहुत मिलता है या इसका अर्थ है कि न यह पूरी तरह सुखांत नाटक है, न रोमांस ही है, न

दुःखान्त हो है, न है मास्क। वही मान लो—जैसी तुम्हारी इच्छा हो ।

१६०७ ई० में 'जैसी तुम्हारी इच्छा हो' नाम से मार्स्टन की भी एक कॉमेडी छपी थी।

नाटक का स्थान इलिरिया है, जो एक काल्पनिक स्थान है। वैसे ही जैसे शेक्सपियर के एक अन्य नाटक—'द विंटर्ज़ टेल' का स्थान 'बोहीमिया' है।

चरित्र-चित्रण के दृष्टिकोण से इसमें वायोला, मालवोलियो और सर टोबी—तीन पात्र ऐसे हैं जिनकी याद रह जाती है। विदूषक का पार्ट कोई विशेष नहीं है। किन्तु सम्पूर्ण दृष्टि से, व्यक्तिगत रूप से मुझे यह नाटक गहरा नहीं लगा, क्योंकि वायोला का अंतर्द्वन्द्व जो इस कथा का प्राण है, मुखर नहीं हो सका है।

कट्टर विशुद्धतावाद (Puritanism) का आंदोलन उन दिनों शेक्सपियर के आक्रमण का विषय बना है। मालवोलियो एक विशुद्धतावादी पात्र है, जिसमें ढोंग और अहंकार को दिखाया गया है। विशुद्धतावादी आंदोलन नाटक-घरों और आनन्द के साधनों पर सीधा प्रहार कर रहा था। शेक्सपियर के युग का अंत इन्हीं कट्टरपंथी ईसाइयों के विकास में हुआ था, जिन्होंने नाटक को काफी क्षति पहुंचाई थी। किन्तु इस नाटक के अतिरिक्त शेक्सपियर में अन्यत्र इन लोगों पर ऐसे प्रहार नहीं मिलते, वैसे शेक्सपियर में इनके प्रति कोई बुरी कट्टर भावना नहीं है। वह केवल दिल्लगी करता है, सहिष्णुता से काम लेता है। किन्तु वैसे यह भी निश्चय से नहीं कहा जा सकता। शेक्सपियर तो जैसा पात्र होता है, उसके अनुरूप ही उससे बात कराता है और इसीलिए उसकी कला इतनी गहरी उतर गई है क्योंकि वह तो मानव-स्वभाव का पारखी है। सर ऐण्ड्रू भी अनेक बातें कहता है, पर वह सब उसीका चरित्र है, शेक्सपियर का अपना कोई मत

वहां नहीं है।

शेक्सपियर में जो असाधारण घटनाएं मिलती हैं, जो उसकी नाटकीयता का प्राण हैं, वह यहां भी हैं, यहां भी वायोला और सैबैस्टियन—बहन और भाई एकदम इतने मिलते हैं कि एक ही सूरत, ऊंचाई, चौड़ाई, आवाज़, यहां तक कि कपड़े भी एक-से ! परंतु स्त्री के प्रति प्रेमभाव बड़ा विचित्र लगता है। वैसे है बड़े संघर्ष का क्षण, किन्तु फिर भी उसी प्रेम का अंत जब ओलीविया की भूल में बदल जाता है, तब हंसी आती है, और ओलीविया का चरित्र-गांभीर्य्य लुप्त हो जाता है। ऐसे ड्यूक का भी हाल होता है। एक स्त्री के पुरुष बन जाने से जो भूलें होती हैं, वह सब मज़ाक इस नाटक में प्रकट होते हैं।

किंतु कहीं-कहीं महान नाटककार ने ऐसे अमर वाक्य लिखे हैं कि पूरा नाटक उठ जाता है, और इसीलिए इसे इतना श्रेष्ठ नाटक माना जाता है। स्त्री के प्रति उसकी कलम बहुत सहृदयता दिखाती है, परंतु स्त्री के कुछ रूप उसे पसंद नहीं भी हैं। उनकी वह आलोचना भी करता है। संपूर्ण नाटक में कोई भी पात्र-पात्री बहुत ऊंचाई को नहीं छू पाते। ओलीविया का प्रेम तो चपलता है, परन्तु मित्र प्रेमी ऐण्टोनियो और सरला वायोला ही इसमें अपनी छाप छोड़ते हैं।

मैंने नाटक के अनुवाद में वाक्चातुर्य के प्रयोगों का प्रभाव देने के लिए कहीं-कहीं हिंदी के मुहावरों का प्रयोग किया है, वर्ना गति में खटक पड़ती थी। आशा है, पाठकों को मेरा परिश्रम लाभकर होगा।

—रांगेय राघव

पात्र-परिचय

ऑरसिनो	: इलिरिया का ड्यूक
सैबैस्टियन	: वायोला का भाई
ऐण्टोनियो	समुद्र के जहाज़ का कप्तान सैबैस्टियन का मित्र
एक कप्तान	: वायोला का मित्र
वैलैण्टाइन क्यूरियो	ड्यूक के कुलीन अनुचर
सर टोबी बैल्च	: ओलीविया का चाचा
सर ऐण्ड्रू ऐग्यूचीक	: एक सामन्त
मालवोलियो	
फेबियन फेस्टे, विदूषक	ओलीविया के सेवक
ओलीविया	: एक धनी काउण्टेस
वायोला	: सैबैस्टियन की बहिन
मेरिया	: ओलीविया की अनुचरी

[अन्य : लार्ड, जहाज़ी, अफसर, संगीतज्ञ और सेवक]



पहला अंक

दृश्य १

[ड्यूक के महल का कमरा]

[ड्यूक, क्यूरियो, अन्य लार्ड और संगीतज्ञों का प्रवेश]

ड्यूक : यदि संगीत ही प्रेम का पोषण करने वाला तत्त्व है, तो मुझे उसकी ऐसी अति प्रदान करो, इतना अधिक दो, कि मुझे उसका अजीर्ण हो जाये, उसकी भूख अपनी अतितृप्ति से सदा के लिए बुझ जाए। फिर वही तान ! उसकी लय ने मेरे रोम-रोम को फिर झंकृत कर दिया। मेरे कानों में वह माधुरी लहराकर गूंज गई जैसे ढेर-ढेर फूलों पर विभोर गंध झूम गई हो ! रोक दो। संगीत बदल गया है। अब इसमें वह मिठास नहीं, जो पहले थी। अरे ओ प्रेम के प्राण ! संगीत ! तू भी कितना जीवंत है, कितना सत्वर, सदैव नवीन है ! ओ सर्वव्यापी ! और वैसे कुछ भी नहीं ? देखने में कोई वस्तु कैसी भी बहुमूल्य और महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, तेरी तुलना में तो कुछ भी नहीं बैठता ! तू अन्यों से कितना ऊपर है ! प्रेम से स्फुटित कल्पना ही एक ऐसी आसक्ति है, ऐसी व्याप्त प्राप्ति है, जो तुझसे तुलनीय हो सकती है।

क्यूरियो : श्रीमान् ! आप शिकार पर जायेंगे ?

ड्यूक : एं ! क्या कहा क्यूरियो ?

क्यूरियो : श्रीमान् ! शिकार।[1]

ड्यूक : क्यों क्यूरियो ! क्या कहते हो ! मेरा हृदय सचमुच कुलीन है। आह ! जब मेरी आंखों ने पहली बार ओलीविया को देखा, मुझे

---

१. शिकार के लिए शेक्सपियर शब्द लिखता है। यहां hart ड्यूक उत्तर देता है तो एक ही उच्चारण के कारण (शिकार) hart को हृदय (heart) के रूप में पहले प्रकट करता है। हिन्दी में ऐसे शब्द नहीं जो हृदय और शिकार के लिए एक ही हों। अत: हम यहां दो अर्थों का सौन्दर्य नहीं दे सकते।

लगा वह अपने चारों ओर की वायु तक को पवित्र कर रही थी। मैं तो उसी क्षण शिकार हो गया। मेरी इच्छाएं लोलुप शिकारी कुत्तों की तरह तभी से मेरे हृदय का पीछा करने लगीं।

[वैलेण्टाइन का प्रवेश]

क्यों ? क्या उसका कोई संवाद आया है ?

वैलेण्टाइन : श्रीमान् ! क्रोध न करें। मैं उनके पास तक नहीं पहुंच सका। उनकी नौकरानी ने मुझे सन्देशा दिया है कि सात वर्ष भी उनकी वेदना को दूर नहीं कर सकेंगे। वे अपना मुख ढके रहेंगी जैसे कि गिरजे की ब्रह्मचारिणी ढके रहती है। नित्य वे आंसुओं से मुंह धोएंगी, श्रीमान् ! अपने भाई की मौत ने उन्हें ऐसा भयानक दुख पहुंचाया है, और वे उस वेदना को भूलना ही नहीं चाहतीं, यह उनका दृढ़ निश्चय-सा हो गया है।

ड्यूक : आह ! जिस स्त्री के विशाल हृदय में अपने भाई के लिए इतना प्रेम है, तो उस व्यक्ति को न जाने कितना प्रेम मिलेगा, जो काम के बाण से अन्य सबके उस हृदय में मारे जाने पर स्थान बनायेगा! जब मस्तिष्क और हृदय जैसे सिंहासनों पर पूर्ण प्रेम ही सम्राट् की भांति आसीन हो जायेगा। तुम चलो ! तुम चलो ! पथ दिखाओ! फूलों की सुन्दर क्यारियों की ओर ! कुंजों की सुषमा और सुगंधि में प्रेम के भाव और भी समृद्ध हो जाते हैं। (प्रस्थान)

दृश्य २

[समुद्र तीर]

[वायोला, कप्तान और जहाजियों का प्रवेश]

वायोला : मित्रो ! यह कौन-सा देश है ?

कप्तान : श्रीमती ! यह इलिरिया है।

वायोला : इलिरिया में मुझे क्या करना है ? मेरा भाई तो एलीशियम[1] में है। मैं अकेली रह गई हूं। ऐसा भी तो लेकिन हो सकता है कि

१. स्वर्ग

वे डूबे नहीं हैं ! क्यों जहाज़ियो ! बोलते क्यों नहीं ?

कप्तान : यही क्या कम है कि तुम किसी प्रकार जीवित रह गई हो ; डूबी नहीं हो !

वायोला : हाय ! मेरे भाई ! पर ऐसा भाई का भी हाल हो तो सकता है ! नहीं हो सकता ?

कप्तान : तुम ठीक कहती हो श्रीमती ! इस सौभाग्य में आशा का संतोष क्या थोड़ा है ? मैं तुम्हें निश्चयपूर्वक बता दूं कि तुमने अपने भाई को स्वरक्षा करते हुए देखा था। वह वीर था और प्राणपण से चेष्टा करता रहा था। जब हमारा जहाज़ टूट गया और तुम्हें और इन थोड़े-से लोगों को बचाया जा रहा था, उस जर्जर छोटी नाव को भयानक लहरों पर खेया जा रहा था, तुम्हारा वीर भाई खतरे में तनिक भी न घबराकर बढ़ा और उसने पानी पर बहता मस्तूल पकड़ लिया, पर उसके बाद मुझे वह नहीं दिखा। लहरें उसे बहा ले गईं जैसे डोलफिन की पीठ पर ओरियन बह गया था।[1] बस, मैं इतना ही देख सका।

वायोला : इस सुखवह संदेश के लिए यह सोना लो (**देती है**), मेरा बच जाना ही मेरे भाई के बच जाने की आशा दिला रहा है। क्या तुम इस देश को जानते हो ?

कप्तान : श्रीमती ! खूब जानता हूं। मैं जहां पैदा हुआ, जहां पला, वह जगह यहां से तीन घण्टे के सफर के फासले पर है।

वायोला : उस जगह किसका शासन है ?

कप्तान : एक ड्यूक हैं। उनका हृदय वैसा ही अच्छा है जैसा उनका नाम।

वायोला : क्या नाम है उनका ?

कप्तान : ऑरसिनो!

वायोला : ऑरसिनो ! यह नाम तो मैंने अपने पिता के मुंह से सुना है। तब तो वे क्वांरे थे।

कप्तान : क्वांरे तो वे अब भी हैं। या कहिये, हाल तक तो थे। मुझे

---

१. ओरियन: प्राचीन काल का एक संगतीज्ञ। डोलफिन उसका रक्षक। एक पुरानी कथा का संदर्भ।

यहां से गये एक महीना ही तो हुआ है। पर तब यह सुनाई पड़ता था, तुम तो जानती ही हो कि जो बड़े आदमी करते हैं, छोटे लोग उसकी कानाफूसी किया करते हैं, कि वे सुन्दरी ओलीविया के प्रेम में पड़ गए थे।

वायोला : वह कौन है ?

कप्तान : एक उदार और पवित्र कुमारी है, एक काउण्ट की पुत्री। पिता को मरे साल-भर हुआ। कन्या को वे उसके भाई के आश्रय में छोड़ गए थे। वह भी कुछ समय बाद चल बसा। कहते हैं, भाई की मौत के दुख से वह कुमारी ऐसी पीड़ित हो गई है कि उसने साथ रहना तो क्या, मनुष्यों को देखना भी छोड़ दिया है।

वायोला : काश, मैं उनकी सेविका बन पाती और तब तक संसार को मुख न दिखाती, जब तक मेरी परिस्थिति सुधर न जाए ! मेरी क्या हालत हो गई है !

कप्तान : ऐसा होना कठिन है, क्योंकि वह कोई अर्ज़ी न लेगी, और ड्यूक तक की तो वह सुनती नहीं आजकल !

वायोला : कप्तान ! तुम्हारा व्यवहार इतना अच्छा है कि मैं तुमपर विश्वास करूंगी। हालांकि मैं जानती हूं कि ऊपरी भोलेपन के नीचे भयानक कुटिलता भी छिपी रहती है, पर तुम्हें देखकर तो यही लगता है कि तुम जितने ऊपर से देखने में अच्छे और सच्चे हो, वैसे ही भीतर भी अवश्य होगे। मैं प्रार्थना करती हूं, मेरी सहायता करो। तुम इस सत्य को छिपा जाओ कि मैं एक लड़की हूं। मुझे ऐसे वस्त्र पहनाकर मेरा वेश बदल डालो, जैसे मैं चाहती हूं ताकि मेरी मनोकामना पूर्ण हो सके ! मैं तुम्हें इसका बड़ा पुरस्कार दूंगी। मैं कुलीन ऑरसिनो की सेवा में लगूंगी और तुम परिचय करा देना, पुरुषरूप में नौकर रखवा देना मुझे। तुम्हारा इसमें कोई नुकसान नहीं होगा ; क्योंकि मैं तो उन्हें खूब गाना सुनाकर खुश कर दूंगी, और वे मुझे अपनी नौकरी में रखने लायक ही पाएंगे। आगे क्या होगा, यह तो भविष्य के हाथ में है, बस तुम मेरे रहस्य की रक्षा करना और बाकी सब मेरी बुद्धि पर

छोड़ दो।

कप्तान : तो फिर ड्यूक के यहां तुम नपुंसक बनकर नौकरी करना। मैं तुम्हारे साथ गूंगा बनकर रहूंगा। यदि मैं तुम्हारे रहस्य को प्रकट कर दूं तो अंधा हो जाऊं।

वायोला : धन्यवाद ! सौ-सौ धन्यवाद ! चलो मुझे ले चलो। (प्रस्थान)

दृश्य ३

[ओलीविया के घर का कमरा]

[सर टोबी बेल्च और मेरिया का प्रवेश]

सर टो० : भाई की मौत का ऐसा मातम मनाकर मेरी भतीजी क्या मुसीबत खड़ी करना चाहती है। इतना दुख तो ज़िन्दगी को ले बैठेगा !

मेरिया : सच कहती हूं सर टोबी ! आप जल्दी लौट आया करिए रात को ! आपकी भतीजी, मेरी मालकिन, आपके देर से लौटने का बड़ा रंज करती हैं।

सर टो० : अरे जिसे हमेशा से टोका जाता रहा है, उसे ही टोकना है, तो फिर उसे भी मन भर लेने दो !

मेरिया : वह तो ठीक है, लेकिन आपको हद के भीतर तो रहना चाहिए !

सर टो० : भीतर रहना चाहिए। किसके ! मैं तो बस इन कपड़ों के भीतर रहता हूं जो पहनता हूं। और शराब पीने के वक्त यह ठीक रहते हैं। मेरे जूते और कपड़े, मैं समझता हूं, बिल्कुल ठीक हैं। अगर नहीं हैं, तो मैं इन्हें फीतों से टांग दूंगा।

मेरिया : यह बेशुमार शराब पीना तो आपको बरबाद ही कर देगा। श्रीमती इसके बारे में कल कहती थीं। आप उनके लिए एक मूर्ख सामंत को भी तो लाए थे, उनकी शादी के लिए ?

सर टो० : कौन ? सर ऐण्ड्रू ऐग्यूचीक !
मेरिया : जी हां, वही !
सर टो० : वह शायद जितना लम्बा है, उतना सारी इलिरिया में न होगा।
मेरिया : तो उसका इस मामले से क्या ताल्लुक हुआ ?
सर टो० : क्यों ? तीन हज़ार ड्यूकैट[1] की उसकी सालाना आमदनी है।
मेरिया : हो सकता है, पर साल-भर और रहेगी यह आमदनी। जैसा वह बेवकूफ़ और खर्चीला है, उससे तो यही लगता है।
सर टो० : धिक्कार है जो उसके लिए ऐसा कहती हो ! वह ऐसा उम्दा बाजा बजाता है। तीन-चार भाषाओं में पारंगत है और प्रकृतिदत्त सारे गुण उसमें विद्यमान हैं।
मेरिया : प्रकृति के ही दिए हैं। उसके अलावा तो वह बेवकूफ और झगड़ालू है। अगर झगड़े के वक्त कायरता का गुण न होता तो लोग कहते हैं कि उसे इनाम में एक कब्र जल्दी ही मिल जाती।
सर टो० : मुझे पहले यह बताओ कि वे लोग कौन हैं जो उसके बारे में ऐसा कहते हैं, वे लुच्चे हैं, बेकार बदनाम करते हैं।
मेरिया : वह तो और भी कहते हैं कि आप और वह दोनों हर रात खूब शराब उड़ाते हैं।
सर टो० : वह तो हम इसलिए पीते हैं कि अपनी भतीजी की कल्याण-कामना करते हैं।[2] और जब मेरे गले में छेद है, मैं पियूंगा और इलिरिया में ही। जो मेरी भतीजी के स्वास्थ्य के लिए नहीं पियेगा, वह कमीना और नीच है। इतना पीना चाहिए कि सिर घूम जाये। अभी क्या समझती है तू ! ले देख ! वे स्वयं आ भी पहुंचे। सर ऐण्ड्रू एग्यूचीक।

[**सर ऐण्ड्रू एग्यूचीक का प्रवेश**]

---

१. सिक्के।

२. यूरोप में शराब का दौर शुरू करने के पहले किसीकी तन्दुरुस्ती की बढ़ोतरी की कामना की जाती है।

सर ऐ० : सर टोबी बैल्च ! कहिये ! मिज़ाज तो अच्छे हैं सर टोबी बैल्च !

सर टो० : मेहरबानी है। सर ऐण्ड्रू !

सर ऐ० : और स्त्री ! अच्छी है ?

मेरिया : श्रीमान् की कृपा है।

सर टो० : सर ऐण्ड्रू ! लो ओ दो ! सलामी ! सलामी ![1]

सर ऐ० : क्या मतलब ?

सर टो० : यह मेरी भतीजी की खास नौकरानी है !

सर ऐ० : श्रीमती सलामी ! नमस्कार ! आपसे तो परिचय हुआ अहोभाग्य समझूं।

मेरिया : श्रीमान् ! मेरा नाम मेरी है !

सर ऐ० : कुमारी मेरी सलामी !

सर टो० : नहीं-नहीं सर ऐण्ड्रू ! आप गलती कर रहे हैं। सलामी माने है इसकी सलामी, इसको स्नेहपूर्ण व्यवहार का पात्र बनाना। प्रेम करना !

सर ऐ० : पर ऐसा मैं आपके रहते कैसे कर सकता हूं ! क्या सलामी का अर्थ ऐसा होता है ?

मेरिया : नमस्कार ! महाशयो नमस्कार !

सर टो० : अगर आप इसे ऐसे चले जाने देंगे तो सर ऐण्ड्रू ! मैं समझता हूं आपको अपनी तलवार खींचना ही छोड़ देना चाहिए।

सर ऐ० : और देवी ! तुम ऐसे जा रही हो कि मैं अब तलवार ही नहीं खींच सकूंगा। क्या तुम समझती हो, तुम्हारा मूर्खों से पाला पड़ा है ?

मेरिया : आपसे मेरा पाला ही कहां पड़ा है श्रीमान् !

सर ऐ० : वह तो शीघ्र पड़ जायेगा। लो पकड़ो मेरा हाथ।

मेरिया : अब सर ऐण्ड्रू ! मैं जो चाहे सोच सकती हूं। लेकिन··· लेकिन श्रीमान् ! अच्छा हो यह हाथ शराबखाने में जाकर आपको खूब शराब पिलाये।

---

१. वह कहता है सलामी दो, पर वह उसका नाम सलामी समझता है।

सर ऐ० : ऐसा क्यों कहती हो प्रिये ! तुम्हारी उपमा किससे है ?
मेरिया : इस (हाथ) पर तो खुश्की आ गई है श्रीमान् !
सर ऐ० : क्यों ? हां, ठीक है ! मैं क्या ऐसा गधा हूं कि हाथ भी सूखा न रख सकूं ! लेकिन मज़ाक क्या है ?
मेरिया : बड़ा खुश्क मज़ाक है !
सर ऐ० : और तुममें वह बहुत है ?
मेरिया : क्या पूछना ! उंगलियों की पोरों पर लिए हूं। लो, मैं आपका हाथ छोड़ती हूं। सब आपको दे चली।

[मेरिया का प्रस्थान]

सर टो० : अरे सर ऐण्ड्रू, आपको ज़रा शराब की ज़रूरत है ! मैंने कभी आपको ऐसा हारते नहीं देखा।
सर ऐ० : कभी नहीं, ज़िन्दगी में नहीं, जब तक शराब मुझे बेहोश न कर दे। मुझे लगता है, कभी-कभी मुझमें उतनी भी अक्ल नहीं रहती, जितनी एक मामूली आदमी में होती है। लेकिन मैं गाय का गोश्त बहुत खाता हूं और मुझे ऐसा लगता है जैसे उससे मेरी अक्ल ठस हो जाती है।
सर टो० : इसमें भी क्या शक होगा।
सर ऐ० : अगर यह बात है तो मैं इसे छोड़ ही दूंगा। सर टोबी, मैं कल घर लौटूंगा।
सर टो० : पौरकोई[1] ? मेरे दोस्त !
सर ऐ० : क्या मतलब ! हां या ना ? काश, मैंने तलवार चलाने, नाचने और भालुओं की लड़ाई देखने में जितना समय लगाया, उतना ही भाषाएं सीखने में लगाया होता ! काश, मैंने कलात्मक विषय पढ़े होते, विशेष कर विदेशी भाषाएं !
सर टो० : तो कम से कम आपके सिर के बाल कहीं ज्यादा घुंघराले होते।
सर ऐ० : अच्छा ! उससे बालों को फायदा होता है ?

---

१. मूल में सर टौबी क्यों (why) न कहकर फ्रेंच भाषा का शब्द पौरकोई (pourquoi) कहता है।

सर टो० : इसमें क्या शक है ! आप नहीं जानते कि कुदरतन आपके सिर के बाल घुंघराले नहीं हैं ?

सर ऐ० : लेकिन आपका क्या खयाल है ? यह मुझे फबते तो हैं ?

सर टो० : वाह क्या पूछना ! ऐसे लटकते हैं जैसे ताने पर ऊन, सपाट !

सर ऐ० : वाह ! पर मैं कल लौट जाऊंगा सर टोबी ! आपकी भतीजी तो दर्शन ही नहीं देतीं। फिर मिलें भी तो मेरा पलड़ा तो बहुत हल्का हो चुका है। काउण्ट भी तो उनके लिए कोशिश कर रहा है।

सर टो० : काउण्ट से उसे क्या लेना-देना। अपनी हैसियत से ऊंचे से वह शादी न करेगी, उसने कई बार प्रतिज्ञा की है। मैंने कहते सुना है, न उम्र का बड़ा फर्क, न अक्ल का, न धन का। भले आदमी, सुनते हो ! वह नहीं चाहती। निराश क्यों होते हो अभी से ?

सर ऐ० : अच्छा एक महीने और ठहरता हूं । मैं भी दुनिया में बड़ी अजीब अक्ल लेकर आया हूं । कभी-कभी तो मैं नाच-गानों में, नाटकों में ही डूबा रह जाता हूं।

सर टो० : तुम्हें नाच भी खूब आता है ?

सर ऐ० : कोई हमउम्र हो, मेरी औकात का हो, तो सारी इलिरिया में चुनौती दे ले। बद के आ जाये। मैं नहीं डरता। पर मुझसे बड़ा हो, उम्रदार हो, उससे मैं अपनी तुलना नहीं कर सकता।

सर टो० : जानदार नाच में क्या कमाल करोगे, बताओ।

सर ऐ० : वाह ! मैं ऊंची उछाल लगा जाऊं।[1]

सर टो० : तब तो फिर मैं भी गोश्त-सा काट दूंगा।

सर ऐ० : और पलट घूमने में मुझ जैसा ताकतवर इस इलिरिया में और कौन होगा ?

सर टो० : पर यह सारे गुण अभी तक क्यों छिपा रखे थे ? इनपर पर्दा क्यों डाल रखा था ? क्या यह भी श्रीमती माल की तस्वीरें हैं कि धूल लगते ही बिगड़ जायेंगी।[2] जोशीले ढंग से नाचते हुए गिरजे क्यों

१. दूसरा शब्दार्थ है केपट-सॉस जिसका उबले हुए बकरे के गोश्त से ताल्लुक है।

२. किसी स्त्री का संदर्भ जो अपने चित्र ढककर रखती थी।

नहीं जाते और लौटते वक्त नया नाच क्यों नहीं दिखाते ? मैं होता तो मेरी तो चाल ही नाच बन जाती ? क्या कहता हूं ? क्या दुनिया ऐसी है जिसमें अपने गुण छिपाये जाएं ? अरे आपके तो पैरों की सुन्दर बनावट देखकर ही समझ गया था कि यह तो उस ग्रहदशा में बनाये गये थे, जब किसी नाचने वाले का सिरजन होता है।

सर ऐ० : और जब इनपर मैं चमकीले मोज़े पहन लेता हूं, तब देखिये। क्या बात हो जाती है ! तो क्या कोई मास्क किया जाये ?[1]

सर टो० : और इससे अच्छी क्या बात होगी ? क्या टारस[2] राशि में हमारा जन्म नहीं हुआ ?

सर ऐ० : अच्छा हां। जिसका दिल और पसलियों से संबंध है !

सर टो० : नहीं जी ! पैरों और जांघों से। ज़रा वह नाच तो दिखाना। (**सर ऐण्डू नाचता है**) हा ! और ऊंचे ! हा ! हा ! वाह ! वाह! शाबाश ! कमाल कर दिया ! (**प्रस्थान**)

दृश्य ४

[ड्यूक के महल का कमरा]

[वैलैण्टाइन और पुरुष वेश में वायोला का प्रवेश]

[सिज़ैरियो वायोला का वर्तमान नाम है।]

वैलैण्टाइन : सिज़ैरियो ! यदि ड्यूक तुम पर ऐसे ही प्रसन्न रहें जैसे अब हैं तो निश्चय ही तुम उन्नति करोगे।

वायोला : या तो तुम समझते हो कि लापरवाह हूं ; या ये कि उनका मिज़ाज ठीक नहीं है, वर्ना उनकी मेहरबानी के एक-से बने रहने

---

१. मास्क : नाटक। इसमें चेहरे पर नकाब रहता था।

२. एक राशि जिसका गर्दन, गले और स्वर से सम्बन्ध है। दोनों ही उसके बारे में कुछ नहीं जानते, यही शेक्सपियर का भाव है। इस दृश्य में विदेशी नृत्यों के नाम हैं पर हमने उनके विभेद नहीं लिखे क्योंकि उससे नाटक की गति में रस-भंग होता। शेक्सपियर भाषा के दो अर्थों के मज़ाक बहुत रखता है, और इसीलिए वह अनुवाद के समय निकृष्ट साबित होता है।

पर तुम्हें शक न होता। क्या उनका मन एक-सा नहीं रहता, दृढ़ चित्त नहीं हैं वे ?

वैलैण्टाइन : नहीं, मुझपर पूरा यकीन रखो, सो बात नहीं है।

वायोला : तो फिर क्या डर है। लो काउण्ट इधर ही आ रहे हैं।

[**ड्यूक, क्यूरिओ और सेवकों का प्रवेश**]

ड्यूक : सिज़ैरियो कहां हैं ?

वायोला : हाज़िर हूं श्रीमान् !

ड्यूक : एकांत।

[**सब हटते हैं।**]

सिज़ैरियो ! मैं तुमसे सब कह चुका हूं। तुम्हारे सामने अपना दिल खोल चुका हूं। तुम्हें अपने भीतर तक के भावों से अवगत करा चुका हूं ! अच्छे लड़के ! अब तुम मेरी देवी के पास जाओ। उसके द्वार पर डट जाओ और कहो कि तुम वहां जमे रहोगे तब तक, जब तक कि उसके सामने नहीं पहुंचा दिये जाते।

वायोला : किन्तु श्रीमान् ! यदि जैसा कहा जाता है कि वे अत्यन्त दुखी हैं, यह सत्य है, तो वे एक अपरिचित से मिलने को कभी तैयार न होंगी।

ड्यूक : तुम विरोध में आवाज़ ऊंची करना। अपनी प्रार्थना दुहराने से न रुकना, अरे बल्कि विनम्रता की सीमा का भी उल्लंघन कर जाना, लेकिन बिना काम पूरा किए किसी भी तरह न लौटना।

वायोला : अच्छा मान लीजिये, मुझे भीतर प्रवेश करने की आज्ञा मिल गई और दर्शन भी मिल गए तो मैं फिर करूं भी क्या ?

ड्यूक : ओह ! यदि वह तुम्हें वह सौभाग्य प्रदान करे, तो मेरे उत्कट और गम्भीर प्रेम को उसके सामने खोल देना, मेरे सारे भावों और आशाओं को उसके सामने उंडेल देना, उसके हृदय को अचानक ही घेरकर जीत लेना। मेरे प्रिय सिज़ैरियो ! मेरे प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने को उपयुक्त एक तुम ही दूत हो, क्योंकि यह कार्य तुम्हें ठीक फबता है, और तुम जैसे तरुण के मुख से वह यह संवाद कहीं अधिक चाव से सुनेगी, बजाय इसके कि किसी

बूढ़े मुंह से या अधिक आयु वाले से सुने।

वायोला : श्रीमान् ! कहीं भूल तो नहीं कर रहें, मुझे भय है।

ड्यूक : नहीं तरुण ! विश्वास करो ! कोई नहीं कह सकता कि तुम्हारे यौवन के दिन निकल गये। देवी डायना (चन्द्रमा) की भांति ही तुम्हारे अधर सुन्दर और गुलाबी हैं। अभी तक तुम्हारी आवाज़ संगीतात्मक है जैसे किसी लड़की की हो। तुम्हारा सारा रूप इतना कोमल और सुन्दर है जैसे किसी स्त्री का हो। मुझे तो यकीन होता जा रहा है कि तुम्हारा जन्म किसी ऐसी दशा में हुआ है जो ऐसे सन्देश ले जाने की बेला ही थी। (मुड़कर) सिज़ैरियो के साथ अनेक नौकर जायें। सिज़ैरियो ! तुम चाहे सबको ले जाओ। मैं तो एकांत में बहुत सुख पाता हूं। यदि तुमने यह कार्य सफलता से सम्पादित कर दिया तो मैं तुम्हारी जीवन-भर ऐसी ही सेवा करूंगा जैसे अपनी करता हूं। तब तक जब तक मैं जीवित रहूंगा।

वायोला : मैं आपकी प्रिया को जीतने में कोर-कसर नहीं रखूं, यही मेरी साधना होगी (स्वगत), कितना कठिन संघर्ष है। पराई से कहूंगी कि इससे विवाह कर, जब कि मुझे अवसर मिले तो सौ बार वारी जाऊँ। (प्रस्थान)

दृश्य ५

[ओलीविया के घर का कमरा]

[मेरिया और विदूषक का प्रवेश]

मेरिया : नहीं। या तो मुझे बता कि तू कहां गया था, या सोच ले कि तेरी तरफदारी में मेरा मुंह इतना भी न खुलेगा कि हवा भी उसमें घुस जाए। तेरी गैरहाज़िरी से मालकिन इतनी नाराज़ हैं कि तुझे कड़ी सज़ा देने पर तुली हुई हैं।

विदू० : अरे फांसी पर चढ़ा देंगी मुझे ! जो लटक ही गया इस दुनिया

में, उसे किसी रंग का डर ही क्या ?

मेरिया : यह क्या ? मतलब !

विदू० : ऐसे को डर ही किसका ? मर गया सो आज़ाद हो गया।

मेरिया : खूब ! क्या लचर बात कहता है ! अरे मुहाविरा भी मालूम है ? रंग का डर क्या है, पता है ?

विदू० : बताओ मेरी ! बताओ ! तुम बड़ी अच्छी हो।

मेरिया : युद्ध में चलता है यह ! दुश्मन का झंडा होता है न ? उसे ही रंग कहते हैं। यह तो तब कहा जाता है जब कोई डर ही न हो। मूर्ख, वैसे ही बक रहा है।

विदू० : बस ! मैं तो यही कहूंगा कि जिनमें अक्ल है वे तो अक्लमंद रहेंगे ही, पर जिनमें नहीं है, उन्हें बातों की चतुराई लगानी पड़ेगी।

मेरिया : लेकिन तुझे गैरहाज़िर रहने के लिए लटकाया ज़रूर जायेगा। या निकाल दिया जाएगा, वह तो फांसी से भी बढ़कर होगा।

विदू० : कई अच्छी फांसियां बुरी शादियों को रोक देती हैं। और निकाले जाने की बात तो गर्मी की ऋतु में ठीक जंचती है।

मेरिया : तो यह तूने निश्चय कर लिया है ?

विदू० : बिलकुल नहीं। पर दो बातों का मैंने बिल्कुल निश्चय कर लिया है।

मेरिया : एक टूटे तो दूसरी बना दे और दोनों गईं तो पतलून खिसक जाएगी नीचे।

विदू० : वाह-वाह ! क्या कहना है। जब सर टोबी शराब पीना छोड़ देंगे तो सारी इलिरिया में तुम सबसे अक्लमंद औरत हो जाओगी।

मेरिया : बके मत बदमाश ! खबरदार जो फिर कहा। ले मालकिन आ रही हैं। अब अपनी बात को खूब संवारकर कह ले। अब भी संभल ! (**प्रस्थान**)

विदू० : ओ अक्ल ! जाग उठ ! ऐसी सुझा कि कमाल की बेवकूफी

उछाल दूं। अपने को चतुर समझने वाले अक्सर उल्टे ही साबित होते हैं। मैं मानता हूं, मैं चतुर नहीं हूं, तो फिर कोई चतुराई खेलूं। कहावत भी है, मौके को बोल जाने वाला मूर्ख उस चतुर व्यक्ति से अच्छा है, जिसे मौके पर नहीं सूझती।

[ओलीविया और मालवोलियो का प्रवेश]

विदू० : ईश्वर आपको सुखी रखे मालकिन।

ओलीविया : इस बेवकूफ को यहां से निकालो।

विदू० : अरे सुनते नहीं हो तुम लोग! मालकिन को यहां से निकालो।

ओलीविया : अरे जा! खुश्क बेवकूफ। तेरा तो भेजा सूख गया है। अब तेरा यहां काम नहीं। और फिर, अब तू बेईमान भी हो गया है।

विदू० : दो कुसूर! मालकिन! पर यह तो अच्छी सलाह और शराब पीने से दूर हो सकते हैं। अगर किसी खुश्के को शराब पिलाई जाए तो फिर वह रूखा नहीं रहता। अगर बेईमान को अच्छी सलाह दे दी जाये तो वह भी अच्छा हो जाता है। और फिर भी काम न चले तो चमार से टांके लगवा दो, क्योंकि मरम्मत की चीज़ तो ऐसी ही होती है। जो भलमनसाहत गुनाह करती है, वह गुनाह से और गुनाह जो ठीक होता है वह भलमनसाहत से। यदि यह सहज तर्क काम न दे तो चारा ही क्या है? विदूषक की गलती जानबूझ कर की गई है, और वही मुसीबत है। जैसे रूप क्या है, एक फूल। मालकिन ने कहा, मूर्ख को निकालो, लिहाज़ा मैं फिर कहता हूं कि इन्हें ले जाओ।

ओलीविया : मैं फिर कहती हूं कि मैंने इनसे कहा था कि यह तुम्हें निकाल दें।

विदू० : ऐसी गलती! और मालकिन करें! क्यों भला! टोपे से साधू नहीं बनता, कहते हैं न? बस यही मेरा हाल है। मैं अपना रंगीन चोगा[1] दिमाग में नहीं पहनता। अच्छी मालकिन! मुझे आज्ञा

१. विदूषक चोगा पहनते थे, भड़कीला, रंगीन।

दूं कि मैं अपने को मूर्ख प्रमाणित कर सकूं।'[1]
ओलीविया : अच्छा तो ऐसा भी कर सकते हो ?
विदू० : बहुत चतुराई से श्रीमती !
ओलीविया : अच्छा देखें।
विदू० : तो मैं आपसे सवाल करूंगा मालकिन ! आपको हाज़िरजवाब देने होंगे।
ओलीविया : अच्छी बात है। फुर्सत है तो यही सही।
विदू० : अच्छा मालकिन ! आप क्यों मातम मनाती हैं ?
ओलीविया : ओ मूर्ख ! अपने भाई की मौत पर !
विदू० : तो मालकिन ! उनकी आत्मा नरक में होगी।
ओलीविया : मूर्ख ? वह स्वर्ग में है।
विदू० : तब तो श्रीमती ! आप ही बड़ी मूर्ख हैं क्योंकि आप भाई की आत्मा के स्वर्ग में होने पर मातम बना रही हैं। भाइयो ! बेवकूफ को बाहर निकालो।
ओलीविया : मालवोलियो ! तुम्हारा इस बेवकूफ के बारे में क्या खयाल है ? इसने कुछ तरक्की की है ?
मालवोलियो : क्यों नहीं ? की है और मौत तक करता जाएगा। मगर बुढ़ापा आता है तो अक्लमंद सठिया जाते हैं, मूर्ख और मूर्ख हो जाता है, बस यही इसकी तरक्की है।
विदू० : तो बुढ़ापा तुमपर शीघ्र आये ताकि तुम्हारी जल्दी तरक्की हो। सर टोबी कसम खाकर कहेंगे कि मुझमें अक्ल नहीं है, मैं चालाक नहीं हूं। पर वे दमड़ी भी शर्त पर लगाने को इसलिए तैयार नहीं होंगे कि भूल से भी कह दें कि तुम अक्लमंद हो।
ओलीविया : इस बारे में तुम्हारी क्या राय है मालवोलियो ?
मालवोलियो : सच ! मुझे ताज्जुब होता है मालकिन ! कि आप ऐसे बेवकूफ लुच्चे की बातें सुनकर ऊब नहीं जातीं। अभी कुछ ही दिन

---

१. अंग्रेजी में विदूषक को मूर्ख (Fool) भी कहते थे। यहां दो अर्थ हैं। उसके कहने का तात्पर्य है कि विदूषक का चोगा मैं देह पर धारण करता हूं, दिमाग पर नहीं, यानी मैं दरअसल मूर्ख नहीं हूं।

हुए मैंने इसको एक निहायत बेवकूफ से भी बातचीत में हार जाते देखा था। अब आप देखिये, मैं ही इसकी बोलती बंद करा दूंगा। असल में इसके पास कहने को कुछ है थोड़े ही! आप कोई शुरू न करें तो यह तो बोल भी नहीं सकता। मैं, मेरी राय तो यह है, साफ कहता हूं, जो इन पेशेवर विदूषकों को इतने ऊंचे दर्जे पर रखते हैं, वे खुद इन विदूषकों के भी नकलची होते हैं।

ओलीविया : मालवोलियो! लगता है तुम अपने को ही सब कुछ समझते हो, तभी बाकी सब तुम्हें ऐसा विकृत दिखाई देता है। विशाल हृदय व्यक्ति साधारण बातों को साधारण ही समझते हैं। विदूषकों को तो विशेष अधिकार होते हैं। वे तो कुछ भी कह सकते हैं। उनकी बात का क्या कोई बुरा मानता है? ऐसे ही जैसे बुद्धिमान की नसीहत और डांट का कोई बुरा नहीं मानता।

विदू० : देवता मर्करी[1] तुम्हारे मुख में शब्द भरें मालकिन! क्योंकि तुम विदूषकों की प्रशंसा कर रही हो।

[**मेरिया का प्रवेश**]

मेरिया : मालकिन! द्वार पर एक तरुण उपस्थित है जो आपसे बात करना चाहता है।

ओलीविया : काउण्ट ऑरसिनो का आदमी है?

मेरिया : पता नहीं मालकिन! अच्छा सुन्दर जवान है, संग में कई नौकर हैं।

ओलीविया : तो मेरा कौन-सा नौकर जाकर उसे रोके है?

मेरिया : सर टोबी, आपके चाचा हैं मालकिन!

ओलीविया : अरे उन्हें ले आओ! जाओ। जल्दी करो! वे तो पागलों-सी बातें करते हैं। धिक्कार है उन्हें।

[**मेरिया का प्रस्थान**]

मालवोलियो! तुम जाओ! अगर काउण्ट के पास से आया हो तो कहना बीमार हैं। या घर पर नहीं हैं। जो चाहे कहकर टाल

१. मर्करी देवता है, जो बहुत चपल माना जाता है। मतलब है कि जल्दी-जल्दी और [illegible] बोलो।

देना।

[मालवोलियो का प्रस्थान]

(फिर विदूषक से) हां जी, देखते हो ! तुम्हारे मज़ाक कैसे पुराने पड़ गये हैं और लोग उनसे ऊबने लगे हैं।

विदू० : मालकिन ! अभी तो आप हमारी ऐसी तारीफ कर रही थीं जैसे अपने ही कुंदज़ेहन लड़के की ! मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आपके पुत्र चतुर सुजान हों, क्योंकि आखिर तो एक मैं हूं आप ही के परिवार का सदस्य, जिसका दिमाग निहायत लचर है।

[सर टोबी का प्रवेश]

ओलीविया : मुझे यकीन है, इन्हें आधा नशा चढ़ा ही होगा। सर टोबी ! बाहर कौन आया है ?

सर टो० : एक शरीफ आदमी।

ओलीविया : एक शरीफ आदमी ! कैसा शरीफ आदमी ?

सर टो० : एक जवान। लानत हो इन बेवकूफों पर। एं ! बेवकूफ ! विदूषक !

विदू० : कहिए सर टोबी ! मिज़ाज ?

ओलीविया : सर टोबी ! आप दिन के वक्त इतने थके-ढीले-से क्यों हैं ?

सर टो० : थकान की कहती हो ! मारो भी ! कोई द्वार पर खड़ा है।

ओलीविया : हां, वह कौन है ?

सर टो० : शैतान ही होगा, मुझे मतलब ? हमें परमात्मा में भरोसा रखना चाहिए। बस ! फिर कुछ भी हो !

ओलीविया : विदूषक ! बोलो तुम नशे में पड़े आदमी की किससे तुलना करोगे ?

विदू० : एक पागल से, एक ऐसे आदमी से जिसकी अक्ल गुम हो चुकी हो, एक डूबे हुए आदमी से। पी-पीकर मूर्ख हुए, नशे ने अक्ल गुम कर दी और तीसरी घूंट ने डुबो दिया।

ओलीविया : तो जाओ, लाश ले जाने वाला ले आओ। चाचा पर वह उसका हक हो। क्योंकि वे शराब में डूबे हुए हैं। तीसरी सीढ़ी पर पहुंचे हुए हैं। चलो इन्हें पहुंचाओ।

विदू० : अभी तो वे पागल हुए हैं। और मैं मूर्ख इस गुम अक्ल की देख-रेख कर लूंगा। (प्रस्थान)

[मालवोलियो का प्रवेश]

मालवोलियो : मालकिन ! वो नौजवान तो कसम खाता है कि बिना आपसे बातें किए लौटेगा ही नहीं। मैंने कहा कि आप बीमार हैं, वह बोला कि मैं जानता था और इसीलिए तो देखने आया हूं। मैंने कहा कि आप सो रही हैं। तो बोला कि मैं जानता था तभी तो मिलने आया हूं। अब मैं उससे क्या कहूं ? वह तो किसी भी बात का विरोध करने को तुला है। उसपर तो बूंद नहीं टिकती।

ओलीविया : बस, कह दो मैं बात नहीं करना चाहती।

मालवोलियो : यह तो मैं उससे कह चुका। पर वह कहता है वह टस से मस न होगा, जैसे मैजिस्ट्रेट के द्वार पर खंभे गड़े रहते हैं न ? या जैसे ढाल पर तस्वीरें अंकित होती हैं ? कहता है, बस, ऐसे ही अड़ा रहूंगा।

ओलीविया : है कैसा वह ?

मालवोलियो : आदमी है।

ओलीविया : पर कैसा ?

मालवोलियो : बड़ा उद्दण्ड-सा है, पर देखिए न, आपकी मर्ज़ी के खिलाफ आपसे मिलना चाहता है !

ओलीविया : कैसा लगता है ? बुड्ढा है या जवान ?

मालवोलियो : न बूढ़ा, न जवान, अधपका है। जैसे कोई सेव हो ! दहलीज़ पर खड़ा है। न लड़का, न आदमी ! है बड़ा सुन्दर और बोलता बड़ी तीखी आवाज़ में है, जैसे कोई औरत हो। देखकर लगता है अभी-अभी तो मां के दूध की गंध आती होगी इसके मुंह से।

ओलीविया : आने दो ! मेरी अनुचरी को बुला दो।

मालवोलियो : मेरिया ! मालकिन बुलाती है। (प्रस्थान)

[मेरिया का पुनः प्रवेश]

ओलीविया : मेरा घूंघट दे। मेरे चेहरे को ढंक दे।[1] आ फिर! ऑरसिनो के दूत की बातें सुनें।

[वायोला और सेवकों का प्रवेश]

वायोला : इस घर की मालकिन कौन हैं?

ओलीविया : मुझसे बात करो। मैं ही उनकी प्रतिनिधि हूं। तुम क्या चाहते हो?

वायोला : ओ सुन्दरी! ओ रूपश्री! किन्तु पहले बताओ, मेरी प्रार्थना है, कि असली मालकिन से बोलने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा हूं? मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। इस बहुत धीरज से तैयार की हुई स्तुति को मैं किसी और के सामने नष्ट नहीं करना चाहता। यह बहुत सुन्दर बनी है, बल्कि इसे रटने में मुझे काफी समय लगा है। ओ सुन्दरियो! मेरे दूतत्व का उपहास न करो। मैं तनिक से भी अपमान से आहत हो जाता हूं।

ओलीविया : तुम कहां से आये हो?

वायोला : मैं वही कह सकता हूं, जो मुझे रटाया गया है। और इस प्रश्न का मेरे पास उत्तर नहीं है। यह मेरा अभिनेय नहीं है। मुझे कुछ विश्वास दिलायें कि आप ही मालकिन हैं ताकि मैं अपना संवाद प्रारम्भ करूं।

ओलीविया : तो क्या तुम अभिनेता हो?

वायोला : नहीं, प्रिय देवी! वह तो नहीं हूं जो दीखता हूं। आप ही घर की मालकिन हैं?

ओलीविया : हां, मैं ही मालकिन हूं। शायद मैं गलत नहीं कहती।

वायोला : यदि तुम मालकिन हो तो निश्चय ही तुमने वह जगह हड़प ली है, जो तुम्हारी नहीं है। तुम एक ऐसी गुण को छिपाए हो, जिसे प्रकट कर सकती थीं। किन्तु मैं इसपर अधिक नहीं कहूंगा क्योंकि यह मेरे सन्देशे में नहीं है। पहले मैं तुम्हारी स्तुति सुना दूं। फिर मतलब की बात कहूंगा।

---

१. यह भारतीय घूंघट नहीं। झीना-सा कपड़ा होता था, जिसे चेहरा ढकने को लगाया जाता था। अमूमन यह शिरोवस्त्र था, जिसे बालों में फंसा लिया जाता था।

ओलीविया : स्तुति छोड़ो ! मतलब की बात पर सीधे ही उतर आओ।

वायोला : ओह ! मैंने बड़ी मेहनत से याद की है, बड़ी कवित्व-भरी है।

ओलीविया : तभी तो वह झूठी होगी। उसे रखो। रहने दो। मुझे बताया जा चुका है कि तुम मेरे द्वार पर बहुत उद्दण्डता से व्यवहार कर रहे थे, और मैंने तुम्हें जो भीतर आने दिया वह तुम्हें देखने को कि कौन है, न कि स्तुति या सन्देश सुनने को। अब, अगर अक्ल है तो चले जाओ। कायदे की बात करनी हो तो कहो, वर्ना मैं बेकार की बातें नहीं सुनना चाहती।

मेरिया : इधर रास्ता है, पाल खोलिए और तैर जाइये।

वायोला : अभी नहीं, प्रिय देवी ! तुम जहाज़ झाड़ती हो न ? ज़रा और ठहरो ! पहले, मालकिन ! तुम्हारी इस दैत्य सेविका को तो सन्तुष्ट कर दूं !

ओलीविया : तुम्हारे यहां आने का मकसद क्या है ?

वायोला : सन्देश लाना।

ओलीविया : तुम्हारा संदेश भी भयानक होगा, क्योंकि तुम्हारे बोलने का ढंग ही अजीब है। अच्छी बात है, कहो।

वायोला : वह केवल आपके लिए है और किसीके लिए नहीं। मैं किसी लड़ाई की बात नहीं लाया हूं, न आपसे समर्पण चाहता हूं। मेरा सन्देशा बड़ा शांतिपूर्ण है और मेरे शब्दों में बड़ा महत्त्व और बड़ी गंभीरता है।

ओलीविया : पर तुम्हारे शब्दों में बड़ा गर्व था पहले। तुम क्या हो ? और यहां क्या चाहते हो ?

वायोला : हो सकता है श्रीमती, पहले मैं उद्दण्ड लगा होऊं, पर मेरा जैसा स्वागत हुआ था, मैंने उसीसे शिक्षा ली थी। मेरा संवाद केवल आपके लिए है। आपके लिए वह पवित्र है, अन्यों के सामने उसे कहना अपवित्रता होगी।

ओलीविया : एकान्त दो हमें, हम इसकी पवित्र बात सुनें।

[मेरिया का प्रस्थान]

हां जी, कहो !

वायोला : ओ परम सुन्दरी······

ओलीविया : आत्मा को बड़ा संतोष देने वाली बात है, और इसपर तो बहुत कुछ कहा जा सकता है। अपनी बात कहो। वह कहां से शुरू होती है ?

वायोला : ऑरसिनो के हृदय से।

ओलीविया : उसके हृदय से ? उसके किस भाग से ?

वायोला : सबसे पहले हिस्से से श्रीमती !

ओलीविया : ओह ! वह तो मैं सुन चुकी हूं। वह बहुत अपवित्र है। बस यही तुम्हारा संदेश है ?

वायोला : सुन्दरी ! मुझे अपना चेहरा तो देखने दो !

ओलीविया : क्या तुम्हारे मालिक ने मेरे चेहरे को कोई संदेश भेजा है ? अपनी बात से भटको मत ! जो हो, मैं चेहरे को दिखा दूंगी। यह तस्वीर देख लो ! देखते हो मुझे ; कैसी तस्वीर है ?

[**घूंघट हटाती है।**]

वायोला : बहुत सुन्दर ! यदि यह सब प्राकृतिक ही है।

ओलीविया : निश्चय ही, यह रंग कृत्रिम नहीं, प्राकृतिक ही है। यह प्रत्येक ऋतु झेलकर ऐसा ही रहेगा।

वायोला : माता प्रकृति ने ही श्वेत और लालिमा का यह चतुर सम्मिश्रण किया है कि अपूर्व और पूर्ण लावण्य उतर आया है। देवी ! आप संसार की सबसे कठोर हृदय स्त्री होंगी, जो इस पृथ्वी पर आप ऐसे ही सुन्दर चित्र की एक अनुकृति छोड़े बिना चली जायेंगी।

ओलीविया : अरे नहीं ! मैं इतनी निष्ठुर क्यों बनूंगी ? मैं तो इन सबकी एक सूची बनाऊंगी ; जैसे दो होंठ—अच्छे और गुलाबी ; दो आंखें भरी, दो पलकें, एक गर्दन, एक ठोड़ी और बस यों ही, तफसील से हर चीज़ का ब्यौरा छोड़ जाऊंगी। पर क्या तुम्हारा संदेश मेरे रूप की प्रशंसा करना ही था ?

वायोला : अब मैं आपका असली स्वभाव देख रहा हूं। आपमें एक ही

दोष है, वह है घोर अहंकार ! आप स्वयं शैतान ही क्यों न हों, परन्तु हैं अत्यन्त सुन्दर ! मेरे मालिक ड्यूक को आपसे इतना प्रेम है कि यद्यपि आप सर्वमान्य रूप से सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मान ली गई हैं, फिर भी उस गंभीर प्रेम पर अपने को समर्पित कर देने में आप कुछ बहुत अधिक नहीं दे देंगी।

ओलीविया : अच्छा बताओ। वे मुझसे कितना प्रेम करते हैं ?

वायोला : वे आपकी पूजा करते हैं देवी ! वे आपके लिए रोते हैं और आपकी उपेक्षा उनको काट-काट जाती है कि कराह उठते हैं, लम्बी सांसें भरा करते हैं !

ओलीविया : तुम्हारे स्वामी मेरा निश्चय जानते हैं कि मैं उन्हें प्रेम नहीं कर सकती। मैं जानती हूं वे एक कुलीन सज्जन हैं, उच्च पदस्थ हैं और उनके पास विशाल सम्पत्ति है, वे अभी तक सुन्दर और युवक हैं। सब उनकी प्रशंसा करते हैं। वे दयालु, वीर, बड़े विद्वान और सुन्दर पुरुष हैं, देखकर ही भव्य और सीधे लगते हैं। किन्तु यह सब मेरा हृदय नहीं जीत सकते। मैं उन्हें प्रेम नहीं कर सकती। वे जानते हैं। और शायद उन्हें इसका विश्वास भी हो चुका होगा।

वायोला : यदि मैं तुमसे इतनी ही आसक्ति से प्रेम करता होता, जितना स्वामी करते हैं, यदि मेरी प्रेम-वेदना उनकी ही-सी तीव्र होती, तो मैं तो तुम्हारी अस्वीकृति की चिन्ता न करता, मेरे लिए उसका कोई अर्थ ही न होता और मुझपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

ओलीविया : तुम ऐसे में क्या कर लेते ?

वायोला : मैं तो तुम्हारे घर के पास एक फूलों का कुन्ज बनाकर रहता ; तुमसे, अपनी प्रिया से प्रार्थना किया करता ; तुम्हारी दीवालों के पास रहता। तुम्हारी तारीफ में गाने लिखता, अपना प्रेम प्रकट करता, जिससे तुम्हें घृणा होती और हर समय प्रत्येक ऋतु में तुम्हें वे गाने गाकर सुनाया करता। वायु में पुकारकर तुम्हारा प्यारा नाम गुंजाया करता, यहां तक कि हर पहाड़ी से वही प्यारी आवाज़ गूंजने लगती और फिर हर गूंज उसे दुहराती

चली जाती। तुम्हें चैन न लेने देता ओलीविया ! पृथ्वी और आकाश में भी ! मुझपर दया करो।

ओलीविया : तुम होते तो कर भी डालते ! तुम किस कुल में जन्मे हो ?

वायोला : जिस जगह आज हूं उससे ऊंचे कुल में ! वैसे यह भी क्या बुरी जगह है। मैं कुलीन हूं।

ओलीविया : अपने स्वामी से जाकर कहो कि मैं उन्हें कभी प्रेम नहीं कर सकती। कहना, अब मुझे और संदेश भेजने की जरूरत नहीं। भले ही तुम आकर खुद बता जाना कि मेरी बात से उनपर क्या असर होता है ! बिदा ! तुमने जो कष्ट किया है, उसके लिए यह मैं तुम्हारा आभार मानती हूं। और यह उपहार भी स्वीकार करो !

वायोला : मैं किराये का दूत नहीं। उपहार अपने पास रखें। ड्यूक को उपहार दें देवी ! मुझे नहीं। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि आपका प्रेम किसी ऐसे पत्थर-दिल से हो जो आपकी चिंता न करे, न आपके प्रेम को स्वीकार करे। आपका प्रेम ठुकराया जाए जैसे आपने मेरे स्वामी का प्रेम ठुकराया है। बिदा, हृदयहीन सुन्दरी ! **(प्रस्थान)**

ओलीविया : 'तुम किस कुल में जन्मे हो ?' 'जिस जगह आज हूं, उससे ऊंचे कल में। वैसे यह भी क्या बुरी जगह है ? मैं कुलीन हूं।' निश्चय ही तुम कुलीन हो। तुम्हारी बोली, चेहरा, शरीर, हिम्मत, काम, सब यही घोषणा कर रहे हैं। धीरज धर हृदय, शीघ्रता मत कर ! धीरे ! धीरे ! काश तुम ही स्वामी की जगह होते ! अरे यह क्या हुआ मुझे ! क्या मेरे हृदय को भी वही आग लग गई ? आह ! इस युवक के गुण मुझपर कैसा प्रभाव डालते चले जा रहे हैं ? आंखों का ही अपराध है। जाने दो। मालवोलियो ! सुनो !

[**मालवोलियो का पुनः प्रवेश**]

मालवोलियो : जी, मालकिन, हुक्म ?

ओलीविया : वह मस्त बेफिक्र नौजवान जो अभी आया है, ड्यूक का

दूत। उसके पीछे जाम्रो ! वह ज़बर्दस्ती अपनी यह अंगूठी मुझे दे गया है। मेरी मर्ज़ी की परवाह न करके ! उससे कहना, यह मैं नहीं रखूंगी और कहना कि वह अपने स्वामी को झूठे दिलासे देकर न बहकाए रखे। मैं कभी उनकी नहीं होऊंगी। अगर वह नौजवान कल इधर आए तो मैं उसे कारण बता दूंगी। जल्दी जाम्रो माल-वोलियो !

मालवोलियो : बस अभी गया। (**प्रस्थान**)

ओलीविया : मैं क्या कर रही हूं ! मैं नहीं जानती इतका नतीजा क्या होगा ? उसके रूप की बावली आंखें तो मन को हर बैठीं। मेरा तर्क कहां गया ? अरे ! भाग्य ! खेल ! अपना खेल तू खेल ! हम कुछ भी नहीं हैं। हमें तो पूर्वनिर्णीत के आगे केवल सिर झुकाना है। तो क्या यही मेरे लिए होने को था ? (**प्रस्थान**)

दूसरा अंक

दृश्य १

[समुद्रतीर]

[ऐण्टोनियो और सैबैस्टियन का प्रवेश]

ऐण्टो० : क्या तुम और नहीं रुकोगे ? क्या मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूं ?

सैबै० : क्षमा करो। रहने दो ! इस समय मेरी ग्रहदशा ठीक नहीं है। अगर तुम मेरे साथ चलोगे तो हो सकता है मेरी खोटी किस्मत का तुमपर भी असर पड़े। इसीसे विनती करता हूं कि मुझे मेरे दुर्भाग्य को अकेले भोगने दो। यदि मैं तुम्हें भी मुसीबत में डालूं तो इससे बढ़कर तुम्हारी अच्छाई का बुरा बदला चुकाना और क्या होगा ?

ऐण्टो० : तो मुझे यह बता दो कि तुम जाना कहां चाहते हो ?

सैबै० : नहीं बताऊंगा, सच कहता हूं। मैं स्वयं अपनी यात्रा की मंज़िल नहीं जानता। बस भटकना है। पर तुम कितने करुण-हृदय हो कि ऐसे प्रश्न भी पूछते हो जिनका मैं उत्तर तक नहीं देना चाहता। इसीलिए मुझे विवश होकर सब कुछ बताना पड़ेगा। ऐण्टोनियो ! मेरा नाम सैबैस्टियन है, जो मैंने तुम्हें रोडरिगो बताया था। मेरे पिता मैसेलिनी के सैबैस्टियन कुल में से थे, जिनका तुमने शायद नाम सुना होगा। वे मुझे और मेरी एक बहिन को छोड़कर स्वर्ग-वासी हुए। मृत्यु के समय ही वह बलिका जन्मी थी। सच, भगवान की भी कैसी इच्छा थी, हम भाई-बहिन एकसाथ ही मरने को थे। लेकिन तुमने सारी योजना ही बदल दी क्योंकि जब तुमने मुझे लहरों से बचाया तब मेरी बहिन एक घंटे पहले ही जलमग्न हो चुकी थी।

ऐण्टो० : कैसा अभागा दिन था !

सैबै० : मेरी बहिन यद्यपि मुझसे बहुत मिलती-जुलती थी, फिर भी स्त्रियों में वह सुन्दरी थी। मैं तो इस अतिप्रशंसा से सहमत नहीं,

परन्तु तुम्हें यह बता दूं जिसका कोई विरोध नहीं कर सकता कि स्वभाव और प्रकृति में वह इतनी मधुर, इतनी अच्छी थी कि ईर्ष्यालु लोग भी इसे स्वीकार करते थे। वह इसी समुद्र के खारी जल में खो चुकी है, और मैं इस जल को अपने खारी आंसुओं से बढ़ाने के अलावा और करता क्या रहा हूं ?

ऐण्टो० : क्षमा करो मुझे, मैं कितना क्रूर हूं ! जो सब पूछ रहा हूं !

सैबै० : नहीं। मेरे मित्र एण्टोनियो। जो कष्ट मैंने तुम्हें दिया है उसके लिए मुझे क्षमा करो।

ऐण्टो० : यदि तुम मेरे प्रेम के लिए मेरी हत्या नहीं करना चाहते, तो मुझे अपने साथ चलने दो।

सैबै० : ऐसी आशा मुझसे न करो ! क्या, पहले जैसी दया तुम मुझ-पर अब नहीं करना चाहते ? बिदा ! बिदा दो अब ! मेरा हृदय कृतज्ञता से भर आया है। मैंने माता का स्वभाव पाया है, तनिक भी वेदना मेरी आंखों में आंसू भर लाती है। मैं ड्यूक आॅरसिनो के दरबार में जा रहा हूं बिदा। (**प्रस्थान**)

ऐण्टो० : देवताओं की समस्त दया तुम्हारे साथ रहे ! मैं भी शीघ्र आॅरसिनो के महल को जाता, काश मेरे वहां इतने शत्रु न होते। लेकिन जो कुछ भी हो, मेरा प्रेम मुझे वहीं ज़ाने को विवश करेगा और यह खतरे मुझे एक खेल-से ही लगेंगे। मैं जाऊंगा। (**प्रस्थान**)

दृश्य २

[**पथ**]

[**वायोला का प्रवेश। मालवोलियो पीछे है**]

मालवोलियो : क्या आप ही अभी काउण्टेस ओलीविया के यहां से नहीं लौटे हैं ?

वायोला : हां, क्यों ? मैं धीरे-धीरे यहीं तो आया हूं, सीधा वहीं से !

मालवोलियो : श्रीमान् ! मेरी मालकिन ने यह अंगूठी वापिस कर दी

है। अगर आप इसे जैसा वे चाहती थीं, वैसे अपने साथ ही ले आते, तो मुझे दौड़-धूप नहीं करनी पड़ती। उन्होंने कहा है कि आप अपने स्वामी से कह दें कि उनका प्रेम प्राप्त करने की व्यर्थ चेष्टा छोड़ दें। और कहा है कि आप भी फिर आने की हिम्मत न करें, अगर केवल यही कहना हो कि आपके स्वामी ने मेरी मालकिन की अस्वीकृति को स्वीकार कर लिया है, तो आ सकते हैं। यह लीजिए अंगूठी।

वायोला : उन्होंने मुझसे यह अंगूठी स्वीकार कर ली थी, मैं इसे वापिस नहीं लूंगा।

मालवोलियो : जी नहीं ! इसे आपने उन्हें ज़बर्दस्ती दे दिया था और वे चाहती हैं कि यह आपको उसी दुर्व्यवहार के साथ लौटा दी जाए। यह पड़ी है। देख लीजिए। झुककर उठा लीजिए । चाहें तो ! वर्ना जिसे मिलेगी वह ले जाएगा (**प्रस्थान**)

वायोला : मैंने तो इस स्त्री के पास कोई अंगूठी नहीं छोड़ी ! उसका मतलब क्या है ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह मेरे रूप पर रीझ गई है ? वह मुझे बड़े गौर से देख रही थी। ऐसे डूबकर देख रही थी कि कभी-कभी बोलना भी भूल जाती थी और बोलती भी थी तो उसके शब्द टूटे-फूटे-से निकलते थे। सचमुच वह मेरे प्रेम में पड़ गई है और प्रेम की चाल के बतौर ही उसने इस मूर्ख दूत को भेजा है। वह कहती है कि वह मेरे मालिक की अंगूठी नहीं रखेगी। पर मेरे मालिक ने उसे भेजी कौन-सी थी ? वह मुझे चाहती है और यदि यह सच है, जो है तो सच ही, तो फिर वह किसी स्वप्न पर ही क्यों नहीं रीझ जाती ? यदि मैं छद्मवेश में न होती तो यह भूल क्यों होती ? मनुष्य की कुटिलता तनिक भी अवसर प्राप्त होते ही प्रकट हो जाती है। आह ! सुन्दर और धोखेबाज़ लोगों के लिए स्त्रियों के कोमल हृदय को बहकाना कितना सहज है। हाय ! यह हमारी निर्बलता का दोष है, हमारा नहीं। हम बनी ही ऐसी नरम धातु की हैं कि जो हैं उसे छिपा भी नहीं सकतीं। अब इस मामले का होगा क्या ? ड्यूक ऑरसिनो इस स्त्री से अत्यन्त प्रेम करते हैं।

काउण्टेस मुझे नहीं जानती और मैं ड्यूक को कितना चाहती हूं। इस सबका होगा क्या ? मैं तो कुलीन सेवक वेश में हूं, पुरुष हूं, ड्यूक मुझसे कैसे प्रेम करेंगे ? और हूं जो मैं सचमुच स्त्री, तो बेचारी ओलीविया कैसी लंबी-लंबी सांसें भरेगी मेरे लिए ! मैं तो इसका कोई हल नहीं निकाल सकती। समय ही निकालेगा ! (**प्रस्थान**)

दृश्य ३

[**ओलीविया के घर का कमरा**]

[**सर टोबी बैल्च और सर ऐण्ड्रू ऐग्यूचीक का प्रवेश**]

सर टो० : आइए सर ऐण्ड्रू ! आधी रात बाद जागना तो सुबह जल्दी उठ जाने के बराबर है। और जल्दी उठना—आप जानते हैं···

सर ऐ० : नहीं, सच ! मैं नहीं जानता ! इतना जानता हूं कि अगर हम देर तक जागें तो देर में ही जागते हैं।

सर टो० : गलत। इस तरह के सारांश से मैं वैसी घृणा करता हूं जैसे शराब के खाली पात्र से ! आधी रात बाद नया दिन होता है और सुबह होती है। यानी अगर हम आधी रात तक रुकें और तब सोने जाएं, तो हम जल्दी सोने चले गए। क्या आप नहीं मानते कि पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल, इन चार तत्त्वों से हमारे शरीर का निर्माण हुआ है ?

सर ऐ० : निश्चय लोग ऐसा कहते हैं। पर मैं समझता हूं खाने और पीने से निर्माण हुआ है।

सर टो० : आप बड़े विद्वान् हैं। लिहाज़ा हमें खाना-पीना चाहिए। मेरिया ! सुनो ! शराब लाओ।

[**विदूषक का प्रवेश**]

सर ऐ० : विदूषक आ गया।

विदू० : कहिए मित्रो ! क्या हाल है। 'हम तीन' का चित्र तो देखा

है न ?[1]

सर टो० : स्वागत गधे ! आओ एक गीत हो जाए।

सर ऐ० : सच ! विदूषक की आवाज़ कितनी अच्छी है ! इसकी-सी सुन्दर टांग और आवाज़ मुझे मिल जाय तो मैं तो चालीस शिलिंग तक दे दूं। सच ! मूर्ख ! रात तुमने जब वेपियनों की कहानी में पिग्रोग्रोमिटस की बात सुनाई तब मज़ा आ गया था। मैंने तुम्हारी प्रियतमा को भिजवाने को तुम्हें ६ पेन्स[2] का एक उपहार भेजा था। मिल गया ?

विदू० : हां, मुझे आपकी भेंट मिल गई। और नौकर की नाक कोड़े का हत्था नहीं, प्रिया का हाथ सफेद है और ट्रॉययुद्ध में ऐचिलोस के नेतृत्व में जाने वाले कठोर मरमिडान शराब की दुकान भी नहीं।[3]

सर ऐ० : वाह! यह सर्वश्रेष्ठ विदूषक है। अच्छा एक अब गीत हो जाए।

सर टो० : अच्छी बात है। यह लो ६ पेन्स ! गीत हो जाए।

सर ऐ० : यह ६ पेन्स मेरी तरफ से। अगर सामंत देता है । तो···फिर मैं भी !

विदू० : प्रेम-गीत या सुन्दर जीवन का गीत ?

सर टो० : प्रेम-गीत ! एक प्रेम-गीत !

सर ऐ० : नहीं, नहीं, सुन्दर जीवन-वीवन नहीं।

विदूषक : [गीत]

मेरी प्रिये तुम कहां कर रही हो विचरण ?
अरी यहां आओ बैठो तो, आता है देखो साजन !
वह आरोहन अवरोहन सब गाता है,
भटको और न सुन्दरि आओ सम्मोहन !
है यात्रा का अन्त वहीं है जहां मिलन
हर सुजान का पूत जानता यह हर क्षण !

---

१. शराबघर का चिन्ह।

२. लगभग ६ आने (सैंतीस पैसे)।

३. अनर्गल बात।

सर ऐ० : वाह ! वाह ! क्या बात है !
सर टो० : अच्छे रहे ! अच्छे रहे !
विदूषक : [गीत]

अरे प्रेम क्या है, जो है सो वर्त्तमान है,
फिर की जाने कौन, अरे अब, अब का सुख है,
आने वाला है अनजाना, जाने क्या है ?
रे विलंब में क्या समृद्धि है, आओ सुन्दरि !
बीस वर्ष की युवती मेरा लो चुम्बन त्वर !
यौवन क्या यह सदा रहेगा ? जाने क्या है ?

सर ऐ० : अपने सामंतीय गौरव की कसम, गज़ब की मिठास है आवाज़ में !
सर टो० : अजी मन को छू जाए ऐसी आवाज़ है।
सर ऐ० : क्या छूत है आवाज़ में। मिठास तो है ही !
सर टो० : अगर नाक से सुना जाए तो खुशबू आती है। पर क्या अब इतना गाएं कि आकाश गूंज उठे ? क्या हम ऐसा गाएं कि रात का पहरेदार उल्लू जाग उठे और हमारे गीत से देव-स्तुतियां गाने वाले बुनकर की तीनों आत्माएं[1] एक हो जाएं ? बोलो करें ऐसा ?
सर ऐ० : अगर आप मुझे खुश करना चाहते हैं तो ज़रूर ! मैं तो तान पकड़ने में कुत्ता हूं, फौरन पकड़ता हूं।
विदू० : पर श्रीमान्, होते हैं, कुछ कुत्ते पकड़े भी जाते हैं।
सर ऐ० : बस ! ठीक है। हमारा गाना हो—लुच्चा !
विदू० : श्रीमान् ! क्या आपका मतलब उससे है जो शुरू होता है—"चुप रह चुप रह लुच्चे दबके !" मुझे मजबूर होकर उसमें आप को लुच्चा कहना पड़ेगा।
सर ऐ० : तो यह कोई मेरे लिए ऐसा सुनने का पहला मौका नहीं है।

---

१. तीन आत्माएं : शेक्सपियर के समय में अरस्तू के दर्शन का प्रचार था, जो हर व्यक्ति में तीन आत्माएं मानता था—वनस्पति, पशु और बौद्धिक। बुनकर भी उस काल में समरस माने जाते थे। उनमें से कई तो फ्लेमिश कांलविनिस्ट थे जो आल्वा के ड्यूक के अत्याचारों के कारण भाग गए थे और देव-स्तुतियां गाया करते थे।

हां विदूषक ! शुरू करो। (**शुरू होता है।**) चुप रह, चुप रह।

विदू० : अगर मैं चुप रह गया तो शुरू कैसे होगा ?

सर ऐ० : भई वाह ! यह तो ज़ोर की रही। हां, चलो शुरू करो।

[**गाते हैं।**]

मेरिया : (**प्रवेश कर**) यह क्या धमाचौकड़ी मचा रखी है ! मैं कहती हूं काउण्टेस ने मालवोलियो को तुम सबको यहां से निकाल भगाने को भेजा है।

सर टो० : मेरी श्रीमती चीनी चोर, उसका नौकर गीत पुराना। हम हैं राजकाज के दूरंदेश समझने वाले। और तीन की मिल बैठी है तिकड़म ! मैं क्या हूं कोई परदेसी ! वही खून है मेरे भीतर ! बकबक मत कर !

[**गाता है।**]

प्रिये ! प्रिये !

रहता था बेबीलौन में कोई एक !

विदू० : सच कहता हूं, आज सर टोवी में कमाल की चतुराई आ गई है।

सर ऐ० : ज़रा जी लगे न, तो हम दोनों की बस पूछो मत। इनकी तो अक्ल पैनी हो जाती है, पर मैं तो ज़रा तड़क-भड़क में नहीं जाता।

सर टो० : [**गाता है।**]

ओ हो हो······

दिसम्बर का बारहवां दिन······

मेरिया : भगवान के लिए चुप रहिए।

[**मालवोलियो का प्रवेश**]

मालवोलियो : श्रीमान् ! क्या आप लोग होश में नहीं हैं ? आपको हो क्या गया है ? क्या कायदे उठ गए और भले आदमियों का रहन-सहन जाता रहा ? यह आधी रात इस कदर शोरगुल मचाने के लिए है ? क्या आपकी राय में श्रीमती ओलीविया का मकान कोई सराय है, जहां आप गला फाड़कर फोश गाने गा सकते हैं ? क्या जगह, वक्त और मौके का आपको कोई ध्यान नहीं रह गया है ?

सर टो० : आप क्या समझते हैं गाने में हमें वक्त पर उतार-चढ़ाव का खयाल नहीं ? भाग जाओ !

मालवोलियो : सर टोबी ! अब मैं साफ खोलकर कहता हूं। मालकिन ने कहा है कि आप उसके रिश्तेदार हैं इसलिए वे आपको यहां रखे हैं। मगर वे आपकी बुरी आदतों को नहीं सह सकतीं। अगर आप इन्हें छोड़ दें तो मज़े से रहिए, वर्ना, उन्हें मजबूर होकर आपसे पीछा छुड़ाना ही होगा।

सर टो० :

बिदा, प्यारे मीत, अब तो
जाना ही होगा !

मेरिया : नहीं, सर टोबी ! नहीं।

विदू० : इनकी आंखें बताती हैं कि अब दिन आ गए पास !

मालवोलियो : ऐसी बात है ?

सर टो० : पर मैं कभी भी मरूंगा, नहीं !

विदू० : सर टोबी ! यह झूठ है।

मालवोलियो : वाह क्या तमीज़ है !

सर टो० : क्या मैं इसे जाने को कहूं ?

विदू० : उसका नतीजा ही क्या ?

सर टो० : तो इसे बिना रहम के भेज दूं ?

विदू० : नहीं, नहीं, ऐसा न करें।

सर टो० : तो फिर सोचकर कैसे कहा कि हम बेसुरे हैं ! तुम ज़रूर यह सोचते हो कि तुम कोई ज़रूरी आदमी हो। और तुम यह समझते हो कि यह खुशी और मस्ती तुम्हारी सख्ती से खत्म हो जाएगी।

विदू० : नहीं ! सच ! हम अब भी चाहें तो मसालेदार शराब पी सकते हैं।

सर टो० : बिलकुल ठीक ! चले जाइए जनाब ! अपनी नौकरी की ज़ंजीर को चमकाने में वक्त निकालिए। मेरिया ! ज़रा शराब लाना।

मालवोलियो : अगर मालकिन के बारे में ज़रा भी सोचती हो मेरिया ! तो तुम इनके शर्मनाक कामों में मदद मत करना। मैं श्रीमती ओलीविया को सूचना दे दूंगा। (प्रस्थान)

मेरिया : जा-जा ! गधा !

सर ऐ० : इसे द्वन्द्व के लिए ललकारा जाए तो क्या बात रहे ! और फिर लड़ा न जाए। कैसा उल्लू बन जाएगा।

सर टो० : यह ठीक रहेगा सर ऐण्ड्रू ! मैं तुम्हारे लिए इन्तज़ाम करूंगा। लिखकर दे दूं या ज़बानी ही कह दूंगा।

मेरिया : अच्छा सर टोबी ! आज रात अपने ऊपर काबू रखिए। ड्यूक का भेजा नौजवान आया था न ? तब से मालकिन आज कुछ परेशान नज़र आती हैं। श्रीमान् मालवोलियो को तो मैं अकेली समझा लूंगी। मैं तो उसे ऐसा बेवकूफ बनाऊंगी कि सारा ज़माना उसपर न हंस पड़े तो देखना। यह मत समझो कि बस बिस्तर पर चारों खाने चित्त हो जाने-भर की अक्ल है मुझमें। देखना क्या करती हूं।

सर टो० : बताओ, हमें बताओ ! हमें समझाओ !

मेरिया : श्रीमान् ! वह बड़ा पवित्र बनता है, बिल्कुल ब्रह्मचारी।

सर ऐ० : अगर यह सच है तो मैं इसे इतना मारूं जितना कुत्ते को।

सर टो० : किसलिए ? पवित्र होने के कारण ? कोई खास वजह भी तो होगी ?

सर ऐ० : कोई खास तो नहीं, वैसे वजह तो है ही।

मेरिया : वह वैसे पवित्रतावादी नहीं, वह तो कुछ भी नहीं है, मौका-परस्त है, बस चाहता यह है कि लोगों में उसे ऊंचे दर्जे का समझा जाए। वह तो दरअस्ल बेवकूफ है, पर बनता जाने क्या है अपने को, जैसे जो है सो वही है। अपने को जाने समझता क्या है, और यह तो उसके दिल में जमी बैठी है कि जिसने भी उसपर नज़र क्या डाली, उसकी शराफत, मिलनसारी, मिठास पर कुर्बान होके रहेगा। मैं इसकी इसी कमज़ोरी का फायदा उठाऊंगी और देखना कैसा बदला लेती हूं।

सर टो० : कैसे ? क्या करोगी ?

मेरिया : मैं कुछ उड़ती-उड़ती बातों के प्रेम-पत्र लिखकर इधर-उधर छोड़ दूंगी, जिन्हें वह पा जाए। उसमें लिखा ऐसा जाएगा कि जिस रंग-रूप-हुलिया का बयान होगा, वह खुद उसीके-से होंगे। और मैं तो मालकिन की लिखावट जैसा ही लिखती हूं। कभी-कभी तो हम दोनों बाद में यह भी नहीं बता पातीं कि यह हम दोनों में से किसकी लिखावट है।

सर टो० : शाबाश ! बहुत अच्छे ! सब साफ हो रहा है।

सर ऐ० : समझ रहा हूं।

सर टो० : पत्रों को पढ़कर उसे लगेगा मेरी भतीजी उसके प्रेम में पड़ गई है, उसीने लिखे हैं……

मेरिया : बस ! बस ! मेरा मतलब यही था।

सर ऐ० : और तुम उसे बेवकूफ बनाना चाहती हो।

मेरिया : बेवकूफ बनने में क्या शक है। बनके रहेगा।

सर ऐ० : क्या दिल्लगी रहेगी !

मेरिया : अजी बड़े ठाठ की दिल्लगी रहेगी, मैं कहती हूं। मैं जानती हूं यह नुस्खा उसपर काम कर जाएगा। जब सब हो जाएगा तो आप दोनों और विदूषक को ऐसी जगह ले जाऊंगी जहां से आप उसे पत्र उठाते हुए देख सकें। देखना क्या रंगत बदलेगी। अब सोने जाइए और अपनी योजना के शुभ परिणाम के स्वप्न देखिए। नमस्कार। (प्रस्थान)

ार टो० : नमस्ते ! अजूबों की रानी !

र ऐ० : सच कहता हूं, बड़ी अच्छी औरत है।

र टो० : अच्छे घर की है, और मुझे बहुत मानती है। लेकिन इससे होता भी क्या है ?

र ऐ० : कोई थी जो मेरे बारे में भी बड़ा ऊंचा खयाल रखती थी !

र टो० : सोने चलिए श्रीमान् ! आपने और धन मंगाया है न ?

र ऐ० : अगर आपकी भतीजी मेरी नहीं होती तो बेकार मेरा इतना धन नष्ट हो जाएगा।

सर टो० : नहीं, आपको और धन मंगाना चाहिए। आप अन्त में उसे प्राप्त न करें तो मुझे बेवकूफ कहिएगा।

सर ऐ० : और अगर वह न मिली तो फिर मुझपर कभी भरोसा न कीजिए, जो कुछ भी हो जाए।

सर टो० : बस, बस ! मैं ज़रा शराब गर्म करूं। अब इतनी रात गए क्या सोना ? चलिए, चलिए। (प्रस्थान)

दृश्य ४

[ड्यूक के महल का कमरा]

[ड्यूक, वायोला, क्यूरियो तथा अन्यों का प्रवेश]

ड्यूक : सुन्दर प्रभात है। आओ मित्रो ! मुझे कुछ संगीत सुनने दो। अच्छे सिज़ैरियो ! वही पुराना और प्यारा रात वाला गीत ! उसने कल कितनी सांत्वना दी थी ! जीवन के वर्तमान हलचलों से भरे संघर्षों से कितने परे ! एक ही कड़ी सही ! सुनवा दो वही हृदयहारी गीत !

क्यूरियो : रात वाला गायक उपस्थित नहीं है श्रीमान्।

ड्यूक : वह कौन था ?

क्यूरियो : विदूषक फेस्टे श्रीमान् ! वह श्रीमती ओलीविया के पिता के समय में उनके पास उनका बड़ा मनोरंजन करता था। यहीं कहीं होगा।

ड्यूक : उसे ढूंढ़ो और वही गत बजने दो कुछ देर।

[क्यूरियो का प्रस्थान]

[संगीत]

यहां आओ सिज़ैरियो। सुन्दर युवक ! यदि तुम कभी किसी स्त्री के प्रेम में पड़ जाओ तो प्रेम की सुखद यातना सहते समय अपने स्वामी के बारे में भी सोचना। सच्चे प्रेमी में जो वेदना होती है, उसे मुझमें देखो। प्रेमी बेचैन, चंचल, क्षण-क्षण में परिवर्त्तित-मनस होता है, किन्तु उसका प्रिया-चिंतन कभी नहीं डोलता, वह

स्वामी रहता है। यह संगीत कैसा लगता है तुम्हें ?

वायोला : प्रेम के सिंहासन हृदय को जाकर झंकार उठता है।

ड्यूक : तुम तो खूब बोलते हो ! मुझे विश्वास है कि यद्यपि तुम इतने तरुण दिखते हो, फिर भी तुम्हारी आंख किसी ऐसे मुख पर अटक चुकी है, जो तुम्हें अत्यन्त प्रिय लगता है। ठीक बात है ? बताओ।

वायोला : कुछ सीमा तक श्रीमान्।

ड्यूक : जिससे तुम प्रेम करते हो वह कुमारी कैसी है ?

वायोला : श्रीमान् ! वह कुछ आपसे मिलती-जुलती है।

ड्यूक : तब उसकी तुलना में तुम कहीं ज़्यादा अच्छे हो। क्या उम्र है उसकी ?

वायोला : श्रीमान् की उम्र ही होगी।

ड्यूक : तब तुम्हारे लिए तो वह बहुत बड़ी है। स्त्री का विवाह सदा उससे बड़े पुरुष से होना चाहिए।[1] यदि पुरुष बड़ा हो तो तरुणी उसके अनुकूल गुरुता धारण कर लेती है, इस प्रकार स्त्री को पति-प्रेम से वंचित नहीं होना पड़ता। कितना भी शक्ति और स्थिरता का गर्व क्यों न किया जाए फिर भी यह सत्य है कि पुरुष की प्रकृति स्त्री की तुलना में इस विषय में अधिक चंचल और परिवर्तनशील होती है।

वायोला : हां, श्रीमान् ! मेरा भी यही विचार है।

ड्यूक : तो अपने से छोटी स्त्री ढूंढ़ो ! वर्ना तुम देखोगे कि तुम्हारा प्रेम घटकर दूसरी दिशाओं में बह निकलेगा, क्योंकि स्त्री का रूप तो फूल का-सा रूप है, जो देखने वालों को अपने माधुर्य से क्षण-भर मोह लेता है और फिर मुरझा जाता है।

वायोला : हाय ! कितना सत्य है ! यह कितनी दुख की बात है कि वह अपनी पूर्ण सौन्दर्य वेला में भी कभी-कभी मार जाती है।

[क्यूरियो और विदूषक का प्रवेश]

ड्यूक : अरे आ गए ! रात वाला गाना फिर गाओ। सिज़ैरियो ! सुनना ! पुराना है, सरल है, अक्सर गिरजे की ब्रह्मचारिणियां और बुनकर

---

१. स्वयं शेक्सपियर की पत्नी उससे उम्र में बड़ी थी।

इसे द्वारों पर बुनते बैठे हुए गाते हैं। कसीदा काढ़ती कोमल लड़कियों में भी चलता है। कितना सहज सत्य है इसमें ! प्राचीन काल के मनुष्यों में जैसा चलता था, वैसा ही कोमल प्रेम ! कितना छू जाता है मन को।

विदू० : श्रीमान् आज्ञा है ?

ड्यूक : हां, प्रारम्भ करो।

[संगीत]

विदूषक : [गीत]

आ री मृत्यु निकट आ मेरे,
आ री मेरे पास !
वन की लकड़ी का सुन्दर ताबूत बने रे
उसमें मेरा तन यह लेटे शांत बने रे,
व्यर्थ विलय में लय हो जाओ
ओ मेरे उच्छ्वास !
निष्ठुर रूपसि प्रेयसि का मारा है ये मन,
श्वेत वस्त्र फूलों पत्तों से रच दो निर्मम
मेरे जीवन की अंतिमतम
शय्या का सुखवास !
मृत्यु सत्य है मेरे मन को जितनी प्रियतम
उतनी नहीं किसीको देगी पीड़ा अनुपम
मेरे इस ताबूत स्याह के
कुसुम न धरना पास।
कोई मत रोना हे मितवा ! मेरे शव पर,
मुझे कब्र में शांति चाहिए अप्रतिहतवर,
कोई मत बिखेरना मुझ पर
अपने व्याकुल श्वास !
विरह वेदना में कोई भी हृदय हार कर
सच्चा प्रेमी वहां न रोये धैर्य ढूँढ कर,
मैं इस प्रेम व्यथा का मारा
पीड़ा का अधिवास !

ड्यूक : अपने परिश्रम का यह उपहार लो।
विदू० : कोई कष्ट नहीं किया मैंने श्रीमान् ! मुझे तो गाने में आनंद आता है।
ड्यूक : तो उस आनन्द की ही भेंट समझो।
विदू० : सच कहते हैं श्रीमान् ! सारे आनंदों का देर-अबेर करके पुरस्कार अवश्य मिलता है।
ड्यूक : अच्छा, अब तुम मुझे छुट्टी दो।
विदू० : वेदनामय देवता आपकी रक्षा करे। आपके वस्त्र ऐसे धूपछांही रेशम के हों जो आपके अंतस्थ भावों की परिवर्तनशीलता को व्यक्त करते रहें। आप जैसी मनस्थिति के व्यक्ति को समुद्र-यात्रा पर जाना चाहिए, जो वांछित दिशा में न बह सकें तो कहीं और सही, एक लक्ष्य न मिले, तो दूसरा ही प्राप्त कर लें। (**प्रस्थान**)
ड्यूक : एकांत !

[**क्यूरियो और सेवकों का प्रस्थान**]

सिज़ैरियो ! मैं तुमसे फिर प्रार्थना करता हूं कि एक बार फिर उस निष्ठुरता की रानी के पास जाओ। उससे कहना कि मैं उससे उसकी संपत्ति और धन के लिए प्यार नहीं करता। उससे कहना कि उसका वैभव मेरे लिए कोई मूल्य नहीं रखता। वह तो उसका रूप है जिसने मेरी आत्मा पर अपना सम्मोहन डाल दिया है।
वायोला : और यदि आपसे प्रेम न करे श्रीमान् ?
ड्यूक : मैं यह विश्वास नहीं कर सकता।
वायोला : किन्तु सत्य यही है श्रीमान् ! आपको इसे स्वीकार करना ही होगा। मान लीजिए एक स्त्री आपसे प्रेम करती है, शायद एक ऐसी है भी, और जैसे आप काउण्टेस के लिए व्याकुल हैं, वैसे ही वह आपके लिए है, और मान लीजिए आप इसे जान जाते हैं और उससे कह देते हैं कि आप उससे प्रेम नहीं करते, तो वह क्या करेगी ? क्या आपका उत्तर स्वीकार नहीं कर लेगी ?
ड्यूक : मेरे हृदय में ओलीविया के प्रति प्रेम की दारुण पीड़ा की शक्ति, जो मेरे अंतस् को इस प्रकार झकझोर रही है, कोई स्त्री इस संसार

में नहीं झेल सकती। इतने विशाल और गंभीर प्रेम को कोई स्त्री अपने हृदय में समेटकर धैर्य धारण कर ले, इतना बड़ा हृदय वह कहां से लाएगी ? स्त्री का प्रेम प्रेम का आस्वादन प्राप्त करना मात्र है उसमें व्यक्ति की संपूर्ण उत्कट लालसा नहीं होती, वह एक बुभुक्षा है जो शीघ्र ही तृप्त हो जाती है, मन भर आता है, उचट जाता है, और अन्त में विद्रोह कर उठता है। और दूसरी ओर, मेरा प्रेम एक समुद्र है जो तृप्त नहीं हो सकता, चाहे वह कितना भी क्यों न भर दिया जाए। ओलीविया के प्रति मेरे प्रेम की किसी स्त्री के प्रेम से तुलना नहीं की जा सकती।

वायोला : हां, किन्तु मुझे निश्चय है······मैं जानता हूं······

ड्यूक : क्या जानते हो ?

वायोला : स्त्री का प्रेम पुरुष के प्रेम से कम उत्कट नहीं होता। वे वास्तव में पुरुषों की भांति ही सच्ची होती हैं। मेरे पिता की एक लड़की थी, जिसे एक पुरुष से बहुत प्यार था, और शायद ऐसा जैसा मुझे आपसे होता, यदि मैं स्त्री होता।

ड्यूक : और उस प्रेम का इतिहास क्या है ?

वायोला : कुछ नही श्रीमान् ! उसने कभी अपना प्रेम व्यक्त नहीं किया, भीतर ही भीतर मुरझाती रही, उसका सुलगता प्रेम भीतर ही भीतर उसके रूप को सुलगाकर नष्ट करता रहा, जैसे गुलाब को कीड़ा लग गया हो, यहां तक कि उसकी माधुरी विलीन हो गई। उसने धैर्य और सहिष्णुता से सारी वेदना को सहन किया, और संसार ने केवल उसका मुस्कराता हुआ चेहरा देखा। क्या आप उसे सच्चा प्रेम नहीं कहेंगे ? हम पुरुष अपने प्रेम-व्यवहार में बड़े गर्वीले होते हैं, किन्तु हमारी अभिव्यक्ति केवल शब्दों का आडम्बर होता है, शायद ही हमारे कर्तव्य उनकी ऊंचाइयों को छू पाते हैं।

ड्यूक : तो क्या तुम्हारी बहिन की प्रेम में मृत्यु हो गई ?

वायोला : मेरे घर में मेरे सिवाय कोई लड़की नहीं, न कोई भाई। मैं नहीं कह सकता। शायद यह सब गलत है। श्रीमान् ! क्या मैं

काउण्टेस के पास आपका सन्देश ले जाऊं ?

ड्यूक : हां। वही मैं कहना चाहता था। शीघ्र जाओ उसके पास। यह अमूल्य भेंट लेते जाओ। उससे कहना कि उसके प्रति मेरा प्रेम कभी भी नहीं हटेगा, न झुकेगा, न वह अस्वीकृति को ही सह सकेगा। (**प्रस्थान**)

दृश्य ५

[**ओलीविया का प्रस्थान**]

[**सर टोबी, सर ऐण्डू और फेबियन का प्रवेश**]

सर टो० : फेबियन ! हमारे साथ आओ।

फेबि० : आ रहा हूं श्रीमान् ! मैं तो मर जाऊंगा जो इस दिल्लगी में से कुछ भी मेरे देखने से छूट गया।

सर टो० : क्या इस घृणित लुच्चे और नीच को अपमानित होते देखकर तुम्हें हार्दिक प्रसन्नता नहीं होगी ?

फेबि० : क्या कहते हैं ! खुशी दिल में न समाएगी। भालू को भड़काने के तमाशे के वक्त इस नीच ने मुझे काउण्टेस के सामने बड़ा नीचा दिखाया था।

सर टो० : तो उसे चिढ़ाने को हम फिर भालू को ले आएं। और फिर उसका तब तक गहरा मज़ाक उड़ाएं। क्या राय है सर ऐण्ड्रू ?

सर ऐ० : अगर हम ऐसा नहीं करते, तो हमारे लिए इससे बड़े दुख की क्या बात हो सकती है !

सर टो० : यह आ गई शैतान !

[**मेरिया का प्रवेश**]

कहो क्या हाल है हिन्दुस्तान की धातु ![1]

मेरिया : आप तीनों झाड़ी के पीछे छिप जाइए। मालवोलियो इधर ही आ रहा है। पूरे आध घंटे उसने धूप में खड़े होकर अपनी छाया

---

१. हिन्दुस्तान उन दिनों बहुत धनी देश माना जाता था।

में अपने बड़े-बड़े पहलू बदलकर अपना अध्ययन किया है। उसे देखने में तो मजाक की इंतहा है। मुझे यकीन है जो खत मैंने उसके लिए डाला है, उसे पढ़कर तो वह बिल्कुल उल्लू हो जाएगा। छिप जाइए, वर्ना मज़ा किरकिरा हो जाएगा। (पत्र फेंककर) यहां गिरा ! मछली इधर ही से लासे पर आ रही है। कांटा अब लग जाना चाहिए।

[मालवोलियो का प्रवेश]

मालवोलियो : मौके की बात है, महज़ मौके की। मेरिया ने मुझसे एक बार कहा था कि काउण्टेस का रुझान मेरी तरफ है। वह तो यह भी कहती थी कि अगर मालकिन किसीको पसन्द करेंगी, तो ऐसे को जो मुझ जैसा लगता होगा। और फिर, यह तो सच है कि उसकी जो ऊंची राय मेरे बारे में है वह और किसी नौकर के बारे में नहीं। तो मैं इस सबका मतलब क्या निकालूं ?

सर टो० : इस बदमाश का हौसला तो देखो।

फेबि० : श ! श ! चुप ! उसका घमंड कैसा उसे फुला रहा है, क्या मुर्गे की-सी अकड़ी हुई चाल चल रहा है ?

सर ऐ० : कसम से इस लुच्चे की तो ऐसी पिटाई करूं !

सर टो० : शांत रहिए !

मालवोलियो : और मैं काउण्ट मालवोलियो बन गया तो ?

सर टो० : अरे बदमाश !

सर ऐ० : गोली मार दो, इसमें गोली !

सर टो० : चुप ! चुप !

मालवोलियो : यह नहीं कि ऐसे पहले कभी नहीं हुआ। स्टार्ची की मालकिन ने वस्त्रागार के अफसर से विवाह किया था।

सर ऐ० : मारो इस नीच को ! शैतान !

फेबि० : शांति ! कैसे गौर से सोच रहा है वह। देखो तो कैसे हवा में उड़ रहा है।

मालवोलियो : शादी के तीन महीने बाद जब मैं ठाठ से बैठूंगा······

सर टो० : गलेल होती तो आंख फोड़ देता इसकी।

मालवोलियो : मखमल का ठाठ का चोगा पहनकर, अपने अफसरों को बुलाता हुआ मैं, शयनागार से निकलकर, जहां मैं ओलीविया को छोड़कर आया होऊंगा……

सर टो० : बिजली गिरे, ओले पड़ें !

फेबि० : ज़रा चुप रहिए।

मालवोलियो : और तब अधिकार का सुख पाऊं। और तब गंभीरता से हर एक को देखकर, मैं उनके सामने ऐसा बनूंगा कि अब हमारे संबंध बदल गए, और उन्हें अपनी औकात समझनी चाहिए। तब मैं अपने चचिया ससुर टोबी को बुलाऊंगा।

सर टो० : तबियत करती है इसे जेल में डाल दूं।

फेबि० : चुप रहिए न ? चुप रहिए।

मालवोलियो : और तब, मेरे अनेकों नौकर उसे लेने दौड़ेंगे, तबतक मैं गंभीर बन जाऊंगा, या अपनी घड़ी या अपने किसी कीमती हीरे को उंगलियों में घुमाता रहूंगा। तब सर टोबी पास आएगा और मुझे सलाम करेगा।

सर टो० : इसका तो कत्ल कर देना चाहिए।

फेबि० : खामोश ! हमें पकड़ में नहीं आना चाहिए, चाहे कितनी ही भड़काने वाली बात क्यों न हो।

मालवोलियो : तब मैं अपना हाथ उसके सामने बढ़ाऊंगा और अपनी सहज मुस्कान छोड़कर कठोर बन जाऊंगा।

सर टो० : और टोबी तेरे मुंह पर फौरन तमाचा न जड़ देगा ?

मालवोलियो : कहूंगा, मेरे अच्छे सम्बन्धी ! भाग्य ने जो मुझे तुम्हारी भतीजी के पति के स्थान पर होने का अवसर दिया है, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं।

सर टो० : अच्छा !

मालवोलियो : तुम्हें अपनी शराबखोरी की हरकतें ठीक करनी चाहिए।

सर टो० : ओ गुण्डे !

फेबि० : ज़रा ठहरिए न ? वर्ना हमारा खेल चौपट हो जाएगा।

मालवोलियो : और तुम अपना कीमती वक्त उस बेवकूफ सर के साथ गंवाते हो !

सर ऐ० : मुझसे मतलब है इसका ?

मालवोलियो : हां, सर ऐण्ड्र ही !

सर ऐ० : मैं जानता था वह मेरा नाम लेगा। मुझे बहुत-से लोग बेवकूफ कहते हैं।

मालवोलियो : (**पत्र देखकर**) यह क्या मामला है ?

फेबि० : अब मुर्गा जाल के पास आ गया।

सर टो० : चुप रहो ! काश वह ज़ोर से पढ़े तो लुत्फ आ जाए !

मालवोलियो : (**पत्र लेकर**) कसम से ! यह तो श्रीमती की लिखावट है। यह तो अक्षर-अक्षर उनका ही है। वह ऐसे ही तो लिखती हैं। इसमें कोई शक नहीं।

सर ऐ० : क्या मतलब ?

मालवोलियो : (**पढ़ता है।**) "अनजाने प्रिय ! मेरी शुभकामनाएं लो।" ठीक उनकी ही बात है। मैं मुहर तोड़ता हूं। हां ! उन्हींकी मुहर है इसपर। यह तो काउण्टेस का ही पत्र है। पता नहीं, किसको लिखा गया है !

फेबि० : यह पत्र तो इसका दिल फड़का देगा।

मालवोलियो : (**पढ़ता है।**) "प्रेम का देवता जानता है मैं उससे प्रेम करती हूं, पर उसका नाम न लूंगी। मेरे होंठो, भूल न कर बैठना !" नाम न लूंगी। आगे क्या है ? छंद बदल गया अब। होंठो, भूल न कर बैठना ! तो क्या मालवोलियो ! यह तेरे लिए ही लिखा गया है ?

सर टो० : अरे बदमाश को फांसी लगनी चाहिए !

मालवोलियो : (**पढ़ता है।**)

मेरा कैसा भाग्य है कि जहां मुझे
पूजा करनी चाहिए,
वहां मैं आज्ञा देती हूं।
मेरी मजबूर खामोशी मेरे दिल को

काट-काट जाती है।
मेरा शरीर, आत्मा, सब पर
एम० ओ० ए० आई०[1] का
सम्पूर्ण अधिकार है।

फेबि० : क्या सिड़ीपन की पहेली है।

सर टो० : कमाल की औरत है मेरिया, मैं कहता हूं।

मालवोलियो : एम० ओ० ए० आई० ने तो मुझ पर अधिकार कर लिया। सोचूं तो सही।

फेबि० : उसने इसे पचाने को कैसा ज़हरीला खाना दिया है।

सर टो० : अब देखो शिकार गंध पाके कैसे उड़ा जा रहा है!

मालवोलियो : "जहां मुझे पूजा करनी चाहिए, वहां मैं आज्ञा देती हूं।" क्यों? वह मुझे आज्ञा क्यों नहीं दे सकती? मेरी मालकिन है। क्या मैं उसकी नौकरी में नहीं हूं? इसका मतलब तो ज़ाहिर है। कोई मामूली आदमी भी समझ सकता है। कोई उलझन नहीं है। इन सारे खतों का मकसद क्या है! ठहरो! एम० ओ० ए० आई०।

सर टो० : अब घबराया। देखें कैसे तोड़ता है इसे।

फेबि० : शिकारी कुत्ता तो भौंकेगा ही, जैसे असली शिकार सूंघ लिया हो।

मालवोलियो : एम–मालवोलियो! एम–मेरे नाम का पहला अक्षर।

फेबि० : मैंने कहा था न यही कहेगा? कैसी गलत गंध पाई है कुत्ते ने?

मालवोलियो : एम पर आगे क्या है? यह तो ठीक नहीं। ए आना चाहिए था, ओ ए पहले कहां से आ गया?

फेबि० : अरे आखीर में ओ नहीं ओह ही सुनाई पड़ेगा।

सर टो० : ज़रूर। वर्ना मैं इसे तब तक ठोंकूंगा जब तक यह ओह न कर जाए!

मालवोलियो : और उसके बाद आई!

फेबि० : हां। और देख तो कितनी लगी हैं पीछे आंखें यहां आई। अभी

---

1. M. O. A. I. अंग्रेजी के अक्षर।

जो बेइज़्ज़ती होगी। वह तेरी खुशहाली के पीछे ही चली आ रही है।

मालवोलियो: एम० ओ० ए० आई०। यह तो कुछ मामला जमा नहीं—पहले तो सीधा मामला था। लेकिन सोचकर देखूं, यह मुझ पर लागू तो होता है, क्योंकि मेरे नाम में यह सारे अक्षर हैं। अरे कविता के बाद गद्य भी लिखा है। (**पढ़ता है।**) "अगर यह तुम्हारे हाथों में पड़े तो सोचो! भाग्य ने मुझे ऊंची जगह दी है, परन्तु महानता से डरो मत। कुछ महानता में जन्म लेते हैं, कुछ उसे प्रयत्न करके प्राप्त करते हैं और किसी-किसी पर वह जबरन लाद दी जाती है। भाग्य तुम्हारी ओर है। संपूर्ण तन्मयता से उसका स्वागत करो। और नये जीवन के अनुकूल बनने के लिए अपना संकोच छोड़ दो। अपनी लघुता का त्याग करो। एक चाचा के प्रकट विरोधी बनो, नौकरों से कठोर बन जाओ, और भारी-भारी शब्दों और विचारों से अपनी भाषा को गम्भीर बनाओ। तुम्हें वही सलाह दे रही है जो तुम्हें चाहती है। मत भूलो किसने तुम्हारे पीले मोज़ों की तारीफ की थी और किसने कहा था कि उसके सामने जाओ तो सदा गेटिस को आड़ी करके पहनो। विश्वास करो, सौभाग्य निश्चित है, यदि तुम स्वीकार करो। अन्यथा सेवक बने रहो और स्वीकार करो कि तुम उन्नति करने में समर्थ नहीं हो। विदा। वह, जो अपनी जगह तुम्हें देकर, तुम्हारी जगह लेना चाहती है। तुम्हारी भाग्यशीला- अभागिनी।"

अरे कितना स्पष्ट है, दिन के उजाले में और क्या दिखेगा? अब मैं गर्व करूंगा, बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ूंगा और सर टोबी का विरोध करूंगा, अपने नीच मित्रों को दबाऊंगा और वही करूंगा जो पत्र में लिखा है। यह कोई कल्पना नहीं, मैं बेवकूफ नहीं बन रहा हूं। न मैं अपने को छल रहा हूं। यह तो साफ है कि काउण्टेस मुझे चाहती है। उसने हाल में मेरे पीले मोज़ों की तारीफ भी की और आड़ी गेटिसों की भी। और अगर अब मैं यह आदतें जारी रखूं तो वह खुश होगी! ओ अच्छे ग्रहो! इस सौभाग्यप्रदान के लिए मेरा

धन्यवाद ग्रहण करो ! मैं गर्वीला, कठोर हो जाऊंगा, पीले मोज़े, आड़ी गेटिस पहनूंगा, और शीघ्र ही। जूपीटर देवता और ग्रहो ! "तुम सत्य हो ! अरे अभी कुछ और भी लिखा है। (पढ़ता है।) "तुम मुझे न पहचान सको यह असंभव है। यदि तुम्हें मेरा प्रेम स्वीकार है तो मुस्कानों से प्रकट करो। मुस्कान तुम्हें कितनी जंचती है। हमेशा मुस्काया करो, मेरे प्रियतम, सदैव, जब भी सामने आओ !" धन्य जूपीटर ! मैं सदा मुस्कराऊंगा। मैं तुम्हारी हर बात मानूंगा ! (प्रस्थान)

फेबि० : फारस के शाह की दौलत कोई मुझे दे तब भी मैं इस दिल्लगी को देखे बिना न रहूंगा।

सर टो० : मैं तो इस ज़बर्दस्त मज़ाक से कायल होकर इस मेरिया से शादी करूंगा।

सर ऐ० : मैं भी यही कर सकता हूं।

सर टो० : और, बस ऐसी एक और दिल्लगी कर दिखाए, इससे ज़्यादा मैं उससे कुछ चाहता भी नहीं।

सर ऐ० : यही मेरा हाल है।

फेबि० : देखो ! वह आई बेवकूफों के लिए जाल डालने वाली।

[मेरिया का प्रवेश]

सर टो० : इधर आ जाओ मेरी तरफ।

सर ऐ० : नहीं मेरी ओर।

सर टो० : मैं तुम्हारे लिए अपनी आज़ादी खो सकता हूं। तुमने मुझे कैद कर लिया है।

सर ऐ० : बस यही मेरा हाल है।

सर टो० : तुमने उस गरीब के सामने क्या सुपने फैला दिए हैं, जब उसे लगेगा यह सब झूठ था तो वह पागल हो जाएगा।

मेरिया : सच कहो ? चाल चल गई ? बैठी !

सर टो० : अरे शराब चढ़ जाए जैसे दाई पर !

मेरिया : अगर मज़ाक का नतीजा देखना है तो उसे तब देखो जब वह काउण्टेस के सामने जाए। वह पीले मोज़े पसन्द नहीं करती और

वह वही पहनेगा। और आड़ी गेटिसों से तो उसे सख्त नफरत है। और फिर वह मुस्कराएगा, मुस्कान तो काउण्टेस की परेशानी की हालत में उन्हें ताज्जुब और गुस्से, दोनों से भर देगी। देखना चाहते हो तो मेरे पीछे चले आओ !

सर टो० : अरी चल प्यारी शैतान, हम तो इसे देखने नरक में भी चलें।

सर ऐ० : मैं भी चलता हूं। (प्रस्थान)

तीसरा अंक

दृश्य १

[ओलीविया का उपवन]

[वायोला और बाजे के साथ विदूषक का प्रवेश]

वायोला : भगवान तुम्हारा भला करे दोस्त ! क्या तुम गा-बजाकर अपनी रोजी कमाते हो ?

विदू० : नहीं श्रीमान् ! मुझे गिरजे से मिलती है।

वायोला : तो क्या तुम पादरी हो ?

विदू० : नहीं श्रीमान् ! मुझे गिरजे से रोज़ी इसलिए मिलती है कि मैं गिरजे के पास रहता हूं।

वायोला : इस तरीके की बात से मतलब निकला कि बादशाह भिखारी के पास सोता है, अगर भिखारी कहीं पास रहता हो तो ! है न ? या कहो गिरजा तुम्हारे ढोल के पास बसा है ?

विदू० : बिलकुल श्रीमान् ! आजकल तो दुनिया बड़ी चतुर हो गई है। लोग बातों की ऐसी खाल निकालते हैं कि मुलायम दस्तानों की तरह लफ्ज़ों को चाहे जिधर मोड़ देते हैं।

वायोला : बिल्कुल ठीक ! जिन्हें लफ्ज़ों से खेलने की आदत हो वे तो आसानी से चकमा दे जाते हैं।

विदू० : अगर ऐसा है तो मेरी तो यह इच्छा है कि मेरी बहन का कोई नाम ही न हो।

वायोला : ऐसी इच्छा क्यों करते हो ?

विदू० : क्योंकि उसका नाम भी एक शब्द होगा, और तुम कह ही चुके हो उससे खेला जा सकता है। पर आजकल सब शब्द असल में झूठे हो गए हैं, उनपर भरोसा नहीं किया जा सकता।

वायोला : साबित करो इसे।

विदू० : बात तो यह है श्रीमान् ! मैं साबित तब तक नहीं कर

सकता जब तक शब्दों का प्रयोग न करूं और शब्द हैं धोखेबाज़, तो ठीक प्रमाणित करने को मैं उनका प्रयोग नहीं कर सकता।

वायोला : सचमुच ! तुम तो बड़े मस्त और मज़ेदार आदमी हो, जो कुछ चिंता नहीं करता कि क्या होगा, क्या हो रहा है !

विदू० : नहीं श्रीमान् ! यह गलत है। कुछ चीज़ों की फिक्र मैं करता हूं, पर कसम से आप उनमें से नहीं हैं। मैं तो यही चाहता हूं कि जो मैं आपको कुछ नहीं समझता, वह आपको कुछ न समझने लायक ही बना दे, क्योंकि फिर आपको देखने की परेशानी से भी मैं बच जाऊंगा।

वायोला : क्या तुम श्रीमती ओलीविया के मूर्ख नहीं हो ?

विदू० : नहीं श्रीमान्। कतई नहीं। श्रीमती ओलीविया में मूर्खता कहां। वे मूर्ख क्यों रखें ? जब तक उनकी शादी न हो जाए ! ! पतियों के लिए मूर्ख ऐसे ही हैं, जैसे बड़ी मछली के लिए छोटी, दोनों एक-सी। पति ठहरे बड़े ! मैं असल में उनका मूर्ख नहीं, मैं तो उनके पास शब्दों से खिलवाड़ करने वाला हूं।

वायोला : मैंने तुम्हें हाल ही में ड्यूक ऑरसिनो के यहां देखा था।

विदू० : मूर्खता पृथ्वी पर कहां नहीं है ! मुझे तो यह सुनकर बड़ा दुख होगा जो मैं सोचूं कि वह मेरी श्रीमती के पास अधिक और आपके मालिक के यहां कम रहती है। क्या मैंने आपको बुद्धिमान ड्यूक के समीप ही नहीं देखा था ?

वायोला : अरे, तुम तो मुझी पर हमला कर बैठे ! मुझे छोड़ो ! यह लो अपनी भेंट !

[**एक सिक्का देती है।**]

विदू० : हे भगवान् ! अगली बार जब बाल बंटें तो इनको एक दाढ़ी दे देना।

वायोला : सच ! मैं कहूं, मुझे तो एक के बिना बड़ी बेचैनी रहती है। (**स्वगत**) हालांकि मैं नहीं चाहती कि मेरी ठोड़ी पर बाल उग आएं ! (**प्रकट**) तुम्हारी मालकिन भीतर हैं ?

विदू० : क्या यह दो भेंटें कुछ नहीं कर दिखाएंगी ?

वायोला : बशर्ते तुम उनका इस्तेमाल करो।

विदू० : जरूर करूंगा ! तुम्हारी खबर मालकिन को देता हूं और प्रयत्न करूंगा कि मालकिन का मालकिन से मेल हो जैसे फ़िज़िया के पैण्डोरस ने ट्रोइलस का क्रेसिडा से कराया था।

वायोला : ओह ! अब समझा ! किस सफाई से मांग पेश की गई !

[सिक्का देती है।]

विदू० : कोई मुश्किल काम नहीं श्रीमान् ! मैंने मांगा ही क्या है ? ट्रोइलस से मिलाप कराने को क्रैसिडा[1] को मांगना, एक भिखारी से भीख मांगना ही तो है, क्योंकि क्रैसिडा भिखारिन ही तो थी। पहला सिक्का ट्रोइलस था, दूसरा अब मंगैत का क्रैसिडा का। मालकिन के पास जाऊंगा, घर ही हैं वे, उनसे कहूंगा आप कहां से आए हैं, आपका नाम क्या है, क्या काम है, अजी मैं अपने रास्ते के बाहर जाकर बोलूंगा। (प्रस्थान)

वायोला : यह भी खासा विदूषक है। इस काम को निबाहने के लिए एक सीमा तक चतुरता की आवश्यकता तो है। विदूषक जिस दर्जे के लोगों से मिलता है, उसे उन्हींके दर्जे के लफ्ज़ों का इस्तेमाल करना पड़ता है। मौका देखकर मज़ाक करना पड़ता है। उनका मिज़ाज, तबियत, सब देखना पड़ता है। शिकवे की तरह हर मौके पर झपटना भी तो पड़ता है उसे। इस साधना में क्या किसी अन्य कला की विशेषता जानने के परिश्रम से किसी तरह की कमी है ! बुद्धिमान विदूषक की मौके की चोट नायाब होती है, किंतु वे बुद्धिमान जो मूर्खता में डोल गए हैं, उनकी मूर्खता का प्रदर्शन कर दिया जाए तो बहुत आहत हो उठते हैं।

[सर टोबी और सर ऐण्ड्रू का प्रवेश]

सर टो० : भगवान् तुम्हारी रक्षा करें।

वायोला : और आप की भी।

सर ऐ० : ईश्वर आपको बचाए।

---

१. प्रेमी ट्रोइलस—क्रैसिडा प्रेमिका—शेक्सपियर ने इन पर अलग से नाटक लिखा है। यह ग्रीक थे। प्राचीन।

वायोला : और आपको भी। मैं आपका विनीत सेवक हूं।

सर ऐ० : ठीक है आप ऐसे ही रहें। और मैं आपका हूं।

सर टो० : आप घर में जाएंगे भीतर ? श्रीमती ओलीविया ने आपको भीतर जाने की आज्ञा दी है, यदि आपको कुछ काम हो।

वायोला : मैं उधर ही जा रहा हूं श्रीमान्। आपकी भतीजी ही मेरी यात्रा की मंज़िल है।

सर टो० : तो फिर पांवों का प्रयोग करो युवक ! चलाओ।

वायोला : मेरे पांव मुझे अच्छे चलाते हैं, आपका अर्थ झेलने से अधिक ! उनका क्या प्रयोग करूं।

सर टो० : मेरा मतलब था आप प्रवेश करने में उनका प्रयोग करें।

वायोला : तो लीजिए उत्तर है—गति और प्रवेश। पर वे तो यहीं आ गईं।

[**ओलीविया और मेरिया का प्रवेश**]

हे परम योग्या रमणी ! स्वर्ग तुमपर अपनी समृद्धि की वर्षा करता है।

सर ऐ० : यह नौजवान दरबारों की चटकीली ज़बान जानता है। समृद्धि की वर्षा। सुना आपने !

वायोला : जो संवाद मैं लाया हूं वह आपसे ही और एकान्त में ही कहा जा सकता है।

सर ऐ० : मैं इसकी हर बात पर गौर कर रहा हूं। मौके पर उनका प्रयोग भी करूंगा अपने लिए।

ओलीविया : मुझे एकान्त चाहिए। उपवन का द्वार बन्द कर दो।

[**सर टोबी, सर ऐण्ड्रू और मेरिया का प्रस्थान**]

मैं आपका स्वागत करती हूं।

वायोला : मेरी विनीत और कर्त्तव्यपरायण सम्मान भावना को स्वीकार कीजिए।

ओलीविया : आपका नाम क्या है ?

वायोला : श्रीमती ! सेवक का नाम सिज़ैरियो है।

ओलीविया : नहीं श्रीमान् ! संसार को इस निम्न कोटि की चाटुकारिता

ने कभी आनन्दित नहीं किया। आप मेरे सेवक नहीं। आप ड्यूक के सेवक हैं।

वायोला : अतएव आपका सेवक हूं श्रीमती, क्योंकि ड्यूक आपके विनम्र सेवक हैं। अतः मैं जो उनका सेवक हूं, आपही का सेवक तो हुआ।

ओलीविया : जहां तक ड्यूक का प्रश्न है, मैं उनकी नहीं सुनना चाहती, और उनके बारे में तो मैं सोचती भी नहीं। कभी नहीं चाहती कि उनके दिमाग में मेरा खयाल भी टिके।

वायोला : प्रिय श्रीमती ! मेरे यहां आने का उद्देश्य यही है कि आप उनके बारे में कुछ मुलायमियत से सोचें, मैं आपको उसकी ओर प्रेरित करूं।

ओलीविया : क्षमा करिए। मैं प्रार्थना करती हूं। क्या मैंने पहले ही आपसे नहीं कह दिया कि ड्यूक के बारे में मैं आपसे कोई बात नहीं करूंगी ! यदि आपकी प्रार्थना का कोई दूसरा विषय हो, तो मैं स्वर्ग की सुमधुर ध्वनियों का तिरस्कार करके भी उसे सुनने को तत्पर हूं।

वायोला : श्रीमती……

ओलीविया : ठहरिए। मुझे कहने दीजिए। आपके यहां से जाने पर, जब आपने मुझ पर जादू कर दिया, मैंने अपने मुख्य सेवक को आपके पीछे अंगूठी देकर भेजा, उसे धोखा दिया और आपसे मैंने ऐसा व्यवहार किया जो शोभनीय शायद नहीं है। आप मेरे बारे में कैसी भी कठोर धारणा क्यों न बना लें मैं आपकी दया पर हूं। मैंने जो चालाकी से अंगूठी भेजी थी, वह आपकी न थी, पर आपने ले ली, मैंने विवश किया था न ? आप मेरे बारे में क्या सोचते होंगे ? कहीं आपने मेरे चरित्र को दूषित तो नहीं समझा ? कहीं उसीपर आप कड़ा प्रहार तो नहीं करना चाहते ? मैंने बहुत कह लिया ! आपके सामने सब खोल दिया। आपकी आंखों के सामने मेरा हृदय है, देखिए आरपार ! झीने रुमाल-सा ! मैंने स्वीकार किया है, आप अपनी कह दें।

वायोला : मुझे आपके लिए घोर शोक है।
ओलीविया : यह तो मेरे प्रति प्रेम का एक पग और है न ?
वायोला : नहीं, एक भी नहीं। यह तो साधारण-सी बात है कि हम शत्रु के लिए भी दुख मनाते हैं।
ओलीविया : तब मैं आपसे दया की भीख नहीं मांगूंगी ! मैं संसार को प्रसन्नमुख दिखाऊंगी। अहंकार और अभाव संसार में बहुधा साथ-साथ दिखाई देते हैं। किन्तु यदि हमें पराजित ही होना है, तो वही धन्य भाग्य कि शत्रु भी समर्थ और श्रेष्ठ हो जिसका हम सम्मान कर सकें। (**घंटा बजता है।**) गुज़रता वक्त डांटता है कि क्यों मैं आपके साथ उसे नष्ट कर रही हूं। नौजवान ! डरो मत ! मैं तुम्हें नहीं चाहती। फिर भी जब तुम तनिक और बड़े हो जाओगे, और तुम्हारी बुद्धि का भी विकास हो जाएगा, जिस युवती से भी तुम विवाह करोगे, संभवतः उसे एक बहुत सुन्दर पति प्राप्त होगा। अब आप जा सकते हैं। पश्चिम की ओर आपका रास्ता है।
वायोला : तो पश्चिम को चलूं ! श्रीमती ! तुम समृद्ध हो। तो क्या ड्यूक ऑरसिनो को कोई संवाद नहीं भिजवाओगी ?
ओलीविया : तनिक ठहरो। मुझे सच बताना, मैं प्रार्थना करती हूं, तुम्हारी मेरे बारे में राय क्या है ?
वायोला : यही कि तुम्हें अपने बारे में मुग़ालता है और तुम अपने को जो समझती हो, वास्तव में उससे बिलकुल अलग हो।
ओलीविया : ठीक यही मैं तुम्हारे बारे में सोचती थी।
वायोला : तुम बिलकुल ठीक हो। मैं जो दिखता हूं, वह मैं सचमुच नहीं हूं।
ओलीविया : काश ! तम वह होते जो मैं चाहती हूं।
वायोला : तो क्या जो अब हूं उससे वह अच्छा होता ? हो सकता है, क्योंकि इस समय तो मैं आपके लिए एक विदूषक ही हूं।
ओलीविया : आह ! गुस्से में कितनी खूबसूरती आ गई है ! नफरत की यह निगाह कितनी दिलफरेब है ! चाहे प्रेम को कोई कितना ही छिपा ले, लेकिन हत्या की तरह वह तो प्रकट होकर रहता है।

दिन की धूप की तरह निकलता है, चाहे उसे अंधेरे में ही क्यों न छिपाने का यत्न किया जाए। मैं कहती हूं युवक ! स्त्री को जो भी प्रिय हो सकता है, फूलों की सुन्दरता, कौमार्य्य की पवित्रता, समस्त गुण और विशुद्धता, जो भी तुम सोच सकते हो, मैं उससे अधिक, तुम्हें प्यार करती हूं, कि न तो मेरा विवेक, न मेरी नारीत्व की चतुरता ही उसे छिपा सकती है। चाहे तुम कितनी भी घृणा क्यों न करो ! पर यह न कहना कि क्योंकि मैंने प्रेम प्रकट किया है इसलिए तुम मुझे प्यार नहीं करोगे ! अपनी घृणा को समेट लो युवक ! प्रेम का सदैव मूल्य देना चाहिए ! अयाचित का भी प्रत्युत्तर है, परन्तु जब वह स्वयं समर्पण बनकर आया हो, तब तो उसका महत्त्व कहीं अधिक बढ़ जाता है।

वायोला : श्रीमती ! अपनी ओर से यही कहूंगा कि मेरे समस्त अस्तित्व में एक विचार है, एक स्नेह है, और उसका लक्ष्य कोई स्त्री नहीं है, कोई रमणी कभी मेरे मन को विचलित नहीं कर सकेगी, मैं ही अपने को विचलित करने में समर्थ हूं। विदा, श्रीमती ! अब कभी अपने स्वामी पर दया दिखाने की प्रार्थना मैं आपसे नहीं करूंगा।

ओलीविया : पर फिर आना। कहीं ऐसा ही हो कि शायद तुम मुझे उसी ओर प्रेरित कर सको, जिसे अब मेरा हृदय घृणा करता है। (**प्रस्थान**)

दृश्य २

[ओलीविया के घर का कमरा]

[सर टोबी, सर ऐण्ड्रू और फेबियन का प्रवेश]

सर ऐ० : कसम से, अब यहां ज़रा भी नहीं रुक सकता।

सर टो० : वाह क्या ज़हर है ! कोई वजह भी है ?

फेबि० : सर ऐण्ड्रू ! आखिर बात तो बताइए ?

सर ऐ० : अजी मैंने तुम्हारी भतीजी को काउण्ट के भेजे आदमी पर

उस इश्क की बौछार करते देखा जो मुझपर होनी चाहिए थी। वहीं उपवन के कुंज में।

सर टो० : तो उसने तुम्हें वहां देखा ? यह बताओ।

सर ऐ० : ऐसे देखा, जैसे मैं तुम्हें यहां देख रहा हूं।

फेबि० : तब तो तुम्हारे प्रति उनका प्रेम है, यह इसका सबूत है।

सर ऐ० : कैसा सबूत ? मुझे गधा बनाना चाहते हो ?

फेबि० : देखिए मैं इसे तर्क देकर समझाता हूं। ऐसा उचित समझ लेंगे न, तब कहिएगा।

सर टो० : और देखिए, तर्क और न्याय, यह दो चीज़ें तब से पृथ्वी पर हैं जब नूह ने प्रलय में बजड़ा बनाया था।[1]

फेबि० : श्रीमती ने उस तरुण से आपकी मौजूदगी में प्रेम प्रकट किया, केवल आपके क्रोध को उभाड़ने, आपके सोते पौरुष को जगाने, और आपको एक उत्कट प्रेमी बनाने के लिए। वह आपके लिए सुयोग था कि आप साहस करके बढ़ते, उनसे बातें करते, और चतुर बातों से अपने प्रतिद्वंद्वी को, नये मज़ाकों से, चुप कर देते और श्रीमती को प्राप्त करने की योग्यता प्रमाणित करते। उन्हें आपसे इतनी आशाएं थीं और आपने उन्हें निराश कर दिया। आपने उचित और योग्य अवसर खो दिया और वे शब्द भी जो मौके पर फबते। आपने काउण्टेस की कृपा का अवसर खो दिया और अब उसका फिर से मिलना कठिन ही है। शायद आप अब बाहर ही छूट जाएं, बशर्ते कि आप उनकी, उनकी चाहना में फिर न उतर जाएं, कोई ऐसा कमाल न कर दिखाएं जो उनको मोह ले।

सर ऐ० : पर यह यदि मैं करूं भी तो कोई वीरता का काम करना पड़ेगा। योजना बनाना, चालें सोचना, मुझे इस सबसे घृणा है। मुझे विशुद्धतावादी ब्राउनवादी[2] बनना मंजूर है, षडयंत्रकारी

---

१. ईसाइयों में प्रलय में एकमात्र बच जाने वाला नूह था, जैसे हिन्दुओं में मनु को माना जाता है। अर्थात् मनुष्यों के आदिकाल की ओर यहां इंगित है।

२. विशुद्धतावादी (Puritans) थे, जो कठोर ब्रह्मचर्य आदि का पालन करने के पक्ष में थे। एलिज़ाबेथ के समय में राबर्ट ब्राउन के अनुयायी—विशुद्धतावादी—गिरजों में नहीं जाते थे, क्योंकि राष्ट्रीय गिरजे की सत्ता को परमात्मा की आज्ञा के विरुद्ध आचरण मानते थे।

नहीं।

सर टो० : तो कोई बात नहीं। वीरता से ही काम लो ! उस नौजवान को चुनौती भेज दो और द्वन्द्व में उसकी डटकर ठुकाई उड़ाओ; काउण्टेस को पता चलेगा ही। यह याद रखो, कोई स्त्री प्रेमी की याचना से आधी भी विचलित नहीं होती, जितनी इससे होती है कि उसका पुरुष वीरता के लिए प्रसिद्ध है।

फेबि० : जी हां। सर ऐण्ड्रू ! आपका तो बस एक ही मौका रह गया है।

सर ऐ० : तो सर टोबी, या तुम फेबियन ! मेरी चुनौती उस तक पहुंचा दोगे ?

सर टो० : अरे मर्दानगी से जाकर लिखो। बस संक्षिप्त मगर साफ। कैसी भी चतुराई न ही सही ! हो दबदबे की, जोशीली चीज़ ! कलम-स्याही से अपनी घृणा दर्शाओ ! अच्छा हो तीन-चार जगह 'तू' लिखो, बस काम बन जाएगा। जितने झूठे अभियोग सोच सको लगा दो, चाहे क्यों न इतने ही बड़े कागज़ की ज़रूरत पड़ जाए जितना लंदन के पास वेयर की सराय का वह मशहूर बिस्तर है, जिसपर बारह आदमी सो सकते हैं।[1] लिख डालो ! बतख के पंख की कलम होगी, पर कहीं शब्द भी बतख के दिमाग के न हों। ऐसे चुभीले लिखना चुन-चुन कर कि हां ! बस पहले यही करो !

सर ऐ० : अच्छा, तो पत्र मैं लिखता हूं, पर फिर मुलाकात किस जगह होगी ?

सर टो० : हम आपके कमरे में आएंगे। आप जाइए।

[सर ऐण्ड्रू का प्रस्थान]

फेबि० : सर टोबी यह भी आपके अमूल्य आदमी हैं।

सर टो० : अरे मैं इसको अमूल्य हूं[2] ! जब से यह यहां है, तब से इसके

---

१. ऐसा एक बिस्तर उन दिनों था।

२. डियर माने प्यारा भी है, महंगा भी। वह प्यारा कहता है। यह महंगे बनते हैं। हिन्दी में अमूल्य का प्रयोग मैंने किया है। अमूल्य भी प्रिय होता है, और महंगा भी। वही भाव भी आ जाता है यद्यपि मूल की चुभन नहीं आती।

करीब दो हज़ार पाउण्ड ख़र्च हो गए हैं।

फेबि० : क्या लाजवाब चुनौती लिखेगा यह ? आप यह तो नहीं चाहते कि पत्र अपने पते पर पहुंच ही जाए।

सर टो० : अरे वाह, क्यों नहीं। मैं चाहता हूं। मैं तो चाहता हूं कि किसी तरह से भड़ककर वह नौजवान इसे मंज़ूर कर ले। बैल भी वर्त्तों से बांधकर इन्हें आमने-सामने नहीं कर सकते। मैं शर्त बदता हूं जो इस ऐण्ड्रू में हिम्मत की एक बूंद भी हो ! तुम उसके मरने के बाद उसकी चीरा-फाड़ी करा लो। जो एक भी बूंद मिल जाए तो मैं सारी लाश खाने को तैयार हूं।

फेबि० : और उसका प्रतिद्वन्द्वी तरुण ! उसमें भी कठोरता का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता !

[**मेरिया का प्रवेश**]

सर टो० : यह हमारी छोटी-सी चिड़िया आ गई।[1]

मेरिया : अगर आप चाहें कि हंसते-हंसते पेट में बल पड़ जाएं, आंखों में पानी आ जाए तो मेरे साथ आएं और अपने उल्लू मालवोलियो को देखें, जो इस समय बड़ा अधार्मिक बन गया है, क्योंकि सहज बुद्धि का साधारण ईसाई भी अच्छे-बुरे की इतनी तमीज़ रखता है कि कभी ऐसी अनहोनी ऊटपटांग बात पर भरोसा नहीं कर बैठता। उसने सचमुच पीले मोज़े पहन लिए हैं।

सर टो० : तो आड़ी गेटिसें भी लगा ली होंगी ?

मेरिया : निहायत बेहयाई से ! ऐसा लगता है जैसे गिरजे के स्कूल का मास्टर हो ! मैंने तो उसपर ऐसी लगातार आंख रखी है जैसे मैं उसकी हत्या करने का मौका देख रही होऊं। वह जो मैंने उसे छलने को पत्र डाला था न, उसकी हर बात पर अमल कर रहा है। बड़ी देर तक मुस्कराता है; वह जो हिन्दुस्तान की खोज की यात्राओं का नया नक्शा बना है, उससे भी ज़्यादा लकीरें पड़ती हैं उसके चेहरे पर ! ऐसा तो आप लोगों ने क्या कभी कुछ देखा होगा !

---

१. इंगलैंड में छोटी-सी रॅन चिड़िया ६ अंडे देती है। नवां सबसे कमज़ोर होता है। उससे जन्मी चिड़िया बहुत प्यारी और छोटी-सी होती है।

बमुश्किल रोकती हूं अपने को, उसपर कुछ फेंककर मारने से। मुझे मालूम है, मालकिन ही मारेंगी उसे। वह नाराज़ होंगी, वह मुस्कराएगा, और समझेगा उसपर बड़ी कृपा हो रही है।

सर टो० : चलो, जल्दी ले चलो‍ह में वहीं। दिल्लगी देखेंगे। (प्रस्थान)

दृश्य ३

[पथ]

[सैबैस्टियन और ऐण्टोनियो का प्रवेश]

सैबै० : मैं कभी पसन्द नहीं करता कि तुम मेरे साथ मुसीबतें उठाते रहो, पर तुम तुले बैठे हो। अब तुम्हें डांटकर, तुम्हारा बोझ हल्का करने की बजाय क्यों बढ़ाऊं और ?

ऐण्टो० : तुम जब चले आए तो मुझसे रहा न गया। तुम्हारे साथ रहने की मेरी इच्छा किसी तलवार की धार से पैनी हो गई। प्रेम ही सब कुछ न था। उसमें कुछ भय और शंका भी थी। प्रेम अकेला ही ऐसी लंबी यात्रा के लिए काफी था। मैंने सोचा, तुम परदेसी, अकेले बेआसरा, कहां क्या करोगे ? मुझे शंका हुई कहीं यहां के निवासी, जैसे अक्सर होता है, तुमसे क्रूरता से व्यवहार न कर बैठें। प्रेम को इन चिन्ताओं ने उकसाया और मैं तुम्हारे पीछे चल पड़ा।

सैबै० : मेरे प्रिय मित्र ऐण्टोनियो ! मैं तुम्हें बार-बार धन्यवाद दिए जाऊं, इसके अतिरिक्त और कर भी क्या सकता हूं ? मैं जानता हूं ऐसी दया का उत्तर केवल आभार स्वीकृति के शब्दों द्वारा ही दिया जाता है, और इस प्रकार बिना मोल की वस्तु देकर ही इस अमूल्य देन को चुकाने का प्रयत्न लोग करते हैं, पर मैं ऐसा नहीं कर सकूंगा। किन्तु मेरे दृढ़ हृदय की भांति यदि मेरी समृद्धि भी कभी दृढ़ हो गई, तो मैं बदला दूंगा। अब हम लोगों को करना क्या चाहिए ? क्या हम लोग इस जगह की दिलचस्प और पुरानी चीज़ें देखने चलें ?

ऐण्टो० : बेहतर होगा कि पहले कोई टिकने की जगह तलाश कर ली जाए, नगर कल देखा जाएगा।

सैबै० : पर रात होने में घंटों हैं। मैं ज़रा भी नहीं थका हूं। मेरे साथ आओ, मानो तो ! अच्छी-अच्छी जगहों को देखकर मज़ा लूटें। और यह शहर तो पुराने स्मारकों के लिए प्रसिद्ध ही है।

ऐण्टो० : मुझे तो माफ ही करो, क्योंकि मैं यहां सड़कों पर ज़्यादा दिखा और खतरा मुझपर झूला। कुछ दिन पहले ऐसा हुआ कि मैंने सफलता से ड्यूक ऑरसिनो का जहाज़ युद्ध में हराया था। और उसमें मैं ज़ाहिर हो गया और ऐसा कि चाहे कुछ भी दण्ड भरूं, लेकिन अगर पकड़ा गया तो छोड़ा नहीं जाऊंगा।

सैबै० : लगता है तुमने उसके कई आदमी मार डाले !

ऐण्टो० : नहीं। ऐसा नहीं हुआ। वैसे मौके पर खून खराबा तो हुआ ही था। लूट का बहुत कुछ माल लौटाने से काम बन सकता था, और व्यापार के नज़रिये से नगर के करीब-करीब सारे व्यापारी ऐसा करने को तैयार भी हो गए थे। मैं ही इन्कार करके अड़ा रहा और अगर अब मैं पकड़ा गया तो कभी भी माफ नहीं किया जाऊंगा।

सैबै० : तब तो यही सबसे उचित होगा कि तुम प्रकट होने से अधिकाधिक दूर रहो।

ऐण्टो० : हां, मुझे ऐसा ज़ाहिरा निकल जाना ठीक न होगा। पर मुझसे अलग होने के पहले ठहरो। तुम मेरे रुपये ले जाओ। तब तक मैं जाता हूं और हाथी नाम की सराय में भोजन भेजने को कह आता हूं। सराय नगर की हद पर ही है, ठहरने के लिए अच्छी जगह। तुम शहर देखने में वक्त निकालना, अपना ज्ञान तरह-तरह की देखने योग्य वस्तुओं के निरीक्षण से बढ़ाना। जब तुम लौटोगे तो मुझे सराय में ही पाओगे।

सैबै० : पर मैं तुम्हारा धन क्यों लूं ?

ऐण्टो० : हो सकता है, कुछ खरीदने की तबियत आ जाए ! और तुम्हारे पास इतना धन नहीं कि उसमें से बेज़रूरत की चीज़ें ले सको !

सैबे० : अच्छी बात, है मंजूर ? तुम्हारा धन ले लूंगा। और ज़रा घूम

आऊंगा।

ऐण्टो० : याद रखना, सराय का नाम है—हाथी।

सैबे० : नहीं भूलूंगा। (**प्रस्थान**)

दृश्य ४

[**ओलीविया का उपवन**]

[**ओलीविया का प्रवेश**]

ओलीविया : मैंने उसे बुलवाया है और उसने मेरा निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अब मैं यह सोच रही हूं कि जब वह आए तो मैं उसका स्वागत कैसे करूं? क्या उपहार दूं मैं उसे? तू जानती है, यौवन उधार और भीख से नहीं मिलता, खरीदा जाता है। अरे मैं कहीं बहुत जोर से तो नहीं बोल रही! मेरिया! तूने मालवोलियो को देखा? उसका गांभीर्य्य और धैर्य मेरी जैसी परिस्थिति के व्यक्ति के लिए नितांत उपयुक्त है। वह है यहां?

मेरिया : श्रीमती! वह आता ही होगा। मगर उसमें तो कुछ अजीब-सी बात हो गई। मुझे लगता है उसका दिमाग खराब है।

ओलीविया : क्यों? क्या बात है? क्या वह बकवास करता है?

मेरिया : नहीं मालकिन! लेकिन यह तो सिर्फ और बराबर मुस्कराया करता है। कुछ उसके दिमाग पर असर ज़रूर पड़ा है। आप उसे यहां बुलाएं तो अच्छा हो, अपनी हिफाज़त करने को अपने पास ज़रूर रखें।

ओली० : अरे! खैर! बुला तो सही।

[**मेरिया का प्रस्थान**]

मेरे दिमाग पर असर है, उसीके क्या! क्या बुद्धि पर दुःख और आनन्द का एक-सा प्रभाव भी पड़ सकता है?

[**मेरिया का मालवोलियो के साथ प्रवेश**]

मालवोलियो!

माल० : हा-हा! श्रीमती?

ओली० : अरे तुम बड़े खुश हो मालवोलियो ! मैं तुमसे एक गंभीर विषय पर बात करना चाहती थी।

माल० : हां श्रीमती ! मैं भी गंभीर हो जाता, लेकिन यह जो आड़ी गेटिसें घुटनों से होकर कमर के पीछे कस गई हैं, तो इससे मेरे खून के बहाव में कुछ रुकावट-सी पड़ती है, लेकिन जब तक इससे उसे खुशी होती है, जो इसे देखना चाहता है, मैं इस परेशानी की ज़रा भी परवाह नहीं करता। किसी कवि ने कहा है कि, मेरी आंखों में जब तक, जिसे मैं प्रसन्न करना चाहता हूं, वह खुश है, तो बस काफी है। एक को खुश करके सबको खुश कर डाला।

ओली० : मालवोलियो ! मामला क्या है ? क्या बात है ?

माल० : मेरे पांव पीले हैं[1], पर दिमाग में स्याही नहीं। हां ! वह मुझे मिला और हर आज्ञा का पालन तो करना ही होगा। वह इतालवी हाथ का लेख पहचाना, वह नाज़ुक लिखावट ! क्या मुश्किल था !

ओली० : तुम जाकर सो जाओ मालवोलियो !

माल० : सोने चलना है ! प्रिये !

ओली० : अरे ! भगवान इसकी रक्षा करे। यह मुस्कराना, यह हाथों का चूमना ! इसका मतलब क्या है ?

मेरिया : मालवोलियो ! बात क्या हो गई ?

माल० : सच ! क्या कह दूं ? ठीक है। कभी तो कोयल को भी कौए को जवाब देना पड़ता है।

मेरिया : तुमने काउण्टेस के सामने इस तरह आने की हिम्मत कैसे की ?

माल० : उच्च पद के लिए आकांक्षा करते हुए डरो मत। ठीक, बिल्कुल ठीक।

ओली० : इस सबका मतलब क्या है जी ?

माल० : कुछ जन्म से महान् होते हैं।

ओली० : होते हैं ! हां तो !

माल० : कुछ को अपने प्रयत्नों से महानता प्राप्त होती है।

ओली० : तुम कह क्या रहे हो ?

---

१. मोजे पीले हैं न !

माल० : और कुछ वे हैं जो परिस्थितियों के कारण महान् बना दिए जाते हैं।

ओलीविया : अरे, इसकी तो अक्ल बिगड़ गई !

माल० : मत भूलो किसने पीले मोज़ों की तारीफ की थी।

ओली० : तुम्हारे पीले मोज़ों की ?

माल० : और किसने आड़ी गेटिसें देखनी चाहीं !

ओली० : आड़ी गेटिसें !

माल० : यदि नहीं तो वहीं, इसी हालत में रहो, जिसमें हो……

ओली० : मेरी किस्मत पर कहा ?

माल० : अन्यथा नौकर ही रहो !

ओली० : यह तो पागलपन की हद हो गई।

[**नौकर का प्रवेश**]

नौकर : मालकिन ! काउण्ट ऑरसिनो के दरबार के तरुण लौट आए हैं। हालांकि उन्हें लौटाकर लाने में मुझे काफी मेहनत करनी पड़ी। बड़ी मुश्किल से आए हैं। वे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ओली० : मैं जाती हूं (**नौकर का प्रस्थान**) मेरिया ! इस आदमी की देख-भाल पर किसीको लगाओ ! सर टोबी कहां है ? देखना कोई इसकी ठीक से देख-रेख करे। इसे कोई नुकसान न हो जाए, पैसों की फिक्र नहीं है।

[**ओलीविया और मेरिया का प्रस्थान**]

माल० : ओह ! हो ! कितने पास आ रही है ! अपने निकटस्थ सर टोबी को मेरी सेवा में लगाया है कि मेरा कोई नुकसान न हो। यही तो पत्र में भी लिखा था ! अब मुझे उससे कठोरता और कड़ाई से पेश आना है, तभी तो वह मुझे ऐसा सुअवसर दे रही है। उसने लिखा था—"अपनी दीनता को छोड़ दो और मेरे एक रिश्तेदार के विरोध के लिए तैयार हो जाओ। अपने से नीचों पर कठोरता करो और तुम्हारे शब्दों में भारीपन, गांभीर्य्य और विचारशीलता भर जाए जो तुम्हारे गर्व को प्रकट करे !" और अब वह मुझे रास्ता बता रही है कि मैं ऐसा कैसे करूं ? अब मुझे गंभीर

होना है और बड़े आदमियों की तरह चलना है, धीरे और नपे-तुले लफ्जों में बातें करनी हैं, और मुझे अपनी वेश-भूषा भी किसी बड़े आदमी की-सी बनानी है। वह तो मेरे जाल में फंस गई। लेकिन सब भगवान की मर्ज़ी है और मैं……मैं, हे भगवान, तेरे प्रति कितना कृतज्ञ हूं। और अब भी जब वह गई है उसने कहा है : "इस आदमी की देख-भाल पर किसीको लगाओ।" नौकर तो नहीं कहा। मेरी इज़्ज़त रखी। आदमी, जैसे बराबर, वह है औरत। सारी बातें मुझे बढ़ावा दे रही हैं और इसमें अब क्या शक हो सकता है, कुछ रुकावट नहीं; क्या है जिसपर अविश्वास किया जाए ! और मुझे चाहिए भी क्या ? अब मेरे और उसके बीच में कोई बाधा नहीं। प्रेम का देवता ही यह करने वाला है, मैं नहीं : और उसीका लाख-लाख धन्यवाद है।

[**मेरिया का सर टोबी और फेबियन के साथ प्रवेश**]

सर टो० : कहां है वह, बताओ, भगवान के लिए बताओ। यदि अंधकार के सारे प्रेत इकट्ठे कर दिए जाएं तो वह मालवोलियो है, मैं उससे बातें तो करूं।

फेबि० : देखिए ! वह रहा। क्या हाल है जी ? अच्छे तो हो ?

माल० : चले जाओ ! मैं तुमसे कुछ भी नहीं कहना चाहता। मुझे एकांत चाहिए। चले जाओ !

मेरिया : अरे ! इसकी आवाज़ में शैतान का सुर बोल रहा है। मैंने कहा था न ? सर टोबी ! मालकिन ने कहा है आप इसकी देख-भाल करें।

माल० : आह ! हा ! कहा था उसने !

सर टो० : बस-बस ! धीरे-धीरे। हमें इससे स्नेह से व्यवहार करना चाहिए। देखो मैं सब ठीक करता हूं। कहिए जनाब ? क्या हाल है ? मिज़ाज तो ठीक है ? हिम्मत रखो दोस्त ! शैतान को धता बताओ, उससे दबो मत ! वर्ना वह तो तुम्हें नुकसान ही पहुंचाएगा।

माल० : क्या तुम समझते भी हो कि क्या कह रहे हो ?

मेरिया : यह लीजिए ! आपसे शैतान की सुनकर बोलता कैसा है।

भगवान न करे आप पर भी जादू कर दे कोई। काउण्टेस को मैं छोड़ दूंगी तो क्या उनका दुख उनके शब्दों में समा सकेगा ?

माल० : आह ! श्रीमती !

मेरिया : हे भगवान !

सर टो० : शान्त रहो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं। उससे व्यवहार ऐसे नहीं करना है। देखती नहीं हो, वह तुमसे गुस्सा हो रहा है। इससे तो मुझे बात करने को छोड़ दो।

फेबि० : हां, इससे गर्मी से बर्ताव करना चाहिए। धीरे। देखती हो न शैतान कितना भड़क रहा है, इससे तो ज़रा और ही ढंग से पेश आना है।

सर टो० : कहो। क्या मामला है उस्ताद !

माल० : जी !

सर टो० : चलो दोस्त ! चलो ! अमां कहीं शैतान से याराना किया जाता है ? मारो गोली उसे ! काला चोर है वह !

मेरिया : सर टोबी, देखिए इससे प्रार्थना कराइए न किसी तरह !

माल० : क्या कहा री ! प्रार्थना और मैं !

मेरिया : मुझे तो यकीन था यह अच्छाई की बात तो सुन ही न सकेगा !

माल० : जा-जा ! लटक जा फंदा डाल कर ! चले जाओ काहिलो ! मैं तुम लोगों में से नहीं हूं। अब कुछ ऐसा होने वाला है कि तुम दांतों तले उंगली दबा लोगे। (**प्रस्थान**)

सर टो० : अरे क्या सचमुच यह सिड़ी हो गया ?

फेबि० : मैं कहता हूं ऐसी घटना कहीं किसी नाटक में दिखाई जाती तो उसे अतिशयोक्ति में डाला जाता।

सर टो० : यह तो दिल-दिमाग-जिस्म, सब गुम ! क्या धोखा खाया है !

मेरिया : अरे अभी मत छोड़ो। कहीं जोश उतर न जावे वर्ना मज़ा न रहेगा !

फेबि० : तो सचमुच पागल कर दें इसे !

मेरिया : घर में तो अमन हो जाएगा।

सर टो० : मैं बताऊं, ऐसा करो ! उसे एक अंधेरे कमरे में बन्द करके

बांध छोड़ें। मेरी भतीजी को तो यकीन है ही कि वह पागल है। मज़े में ऐसा कर सकते हैं, तब तक जब तक यह अपने पापों का दण्ड भोगता है। मज़ा रहेगा। बाद में, जब हम ऊब जाएंगे, हम रहमदिली दिखाएंगे और उसकी योजना का बाकी हिस्सा पूरा करने को छोड़ देंगे। इसका सेहरा तुम्हारे सिर बांधेंगे कि तुमने पागल को पहचाना। लेकिन देखो, कौन आ रहा है ?

[सर ऐण्ड्रू एग्यूचीक का प्रवेश]

फेबि० : यह और दिल्लगी का मसाला आ रहा है।

सर ऐ० : मैंने चुनौती लिख ली है। यह रही। पढ़ो, ऐसी तीखी-चटपटी है जैसे सिरका, नहीं, नहीं लाल मिर्च !

फेबि० : इस कदर झपाटा है इसमें ?

सर ऐ० : देखो तो सही, पढ़ते ही पता चल जायेगा।

सर टो० : देखूं। (**पढ़ता है।**) नौजवान तू कोई हो, लेकिन तू है एक लुच्चा !

फेबि० : शाबाश ! शुरू में ही कितना दम है।

सर टो० : (**पढ़ता है।**) इसपर मत चौंक कि मैंने तुझे यह नाम दिया, न चकरा ! क्योंकि मैं तुझे यह नहीं बताऊंगा कि मैंने ऐसा क्यों किया ?

फेबि० : कमाल ! लाजवाब ! क्या अक्लमंदी है कि कानून की पकड़ से साफ किनारा कर दिया।

सर टो० : (**पढ़ता है।**) तू बराबर काण्उटेस के पास आता है और वह मेरी मौजूदगी में तुझ पर अपनी मेहरबानीं दिखाती है, लेकिन यह मत कह कि मैं तुझे इसलिए चुनौती देता हूं।

फेबि० : क्या मुख्तसिर है, बिल्कुल मतलब की बात ! वाह !

सर टो० : (**पढ़ता है।**) जब तू लौटेगा मैं तुझे घेरूंगा और अगर मौका लग गया कि तू मार डाले मुझे,...

फेबि० : क्या बात है !

सर टो० : (**पढ़ता है।**) तो तू मुझे एक लुच्चे और बदमाश की तरह मार डालेगा।

फेबि० : कमाल है कि कानून की पकड़ को अब भी दूर रखा गया है।

सर टो० : (**पढ़ता है।**) विदा ! हम दोनों में से एक पर भगवान दया करे। जहां तक मेरा ख्याल है उसका रहम मुझपर होगा, क्योंकि मेरे मौके तुझसे ज़्यादा जमते हैं। लिहाजा अपना ध्यान रखना। तुम्हारा दोस्त, जैसा कि तू उसे बताता है, और तेरा पक्का दुश्मन —ऐण्ड्रू एग्यूचीक !

अच्छा ! अगर वह इसे पढ़कर भी नहीं लड़ता तो समझ लो उसकी टांगों में ज़ोर नहीं। अब मैं ऐसा करता हूं कि उसे यह पर्चा मिल जाए।

मेरिया : बस ! मौका अच्छा है, क्योंकि वह जवान इस वक्त किसी काम से काउण्टेस के पास आया हुआ है और अभी लौटता होगा।

सर टो० : सर ऐण्ड्रू ! चलिए बाग के कोने से उसके आने पर नज़र रखिए। ज्योंही मौका मिले, और आप उसे देखें, तलवार खींच लीजिए और तलवार खींचते हुए उसे ज़ोर से ललकारिए क्योंकि ज़ोरदार कसम के तड़तड़ाते लफ्ज़ जब धनुष की डोरी की तरह गूंजते हैं तो मर्द की बहादुरी की वह आब देते हैं कि बस ऐसी, कि ऐसी······कि उसमें उतनी तो कभी होती ही नहीं। बस चलिए।

सर ऐ० : नहीं। कसम तो मैं अकेला ही खाऊंगा। (**प्रस्थान**))

सर टो० : इस खत को अब देने की जगह अपने पास रख लूं, क्योंकि वह नौजवान देखकर ही पढ़ा-लिखा और ऊंचे घराने का लगता है। ड्यूक और श्रीमती ओलीविया ने जो उसे इतना विश्वास-पात्र बनाया है, साफ ज़ाहिर करता है कि मेरी बात ठीक है। वह ज्योंही यह खत पढ़ेगा, वह समझ जाएगा कि किसी बेवकूफ ने लिखा है, जिसमें ज़रा भी अक्ल नहीं। उसपर तो इसका कुछ भी असर नहीं पड़ेगा। वह इससे क्या डर सकता है ? मैं ऐसा करूं कि यह चुनौती मुंहज़बानी पहुंचा दूं और सर ऐण्ड्रू की बहादुरी बढ़ा-चढ़ा कर बयान करूं। नौजवान इसपर भरोसा कर लेगा और उसे सर ऐण्ड्रू की बहादुरी, जोश, होशियारी और हुनर का यकीन हो

जाएगा, वह डर जाएगा। और तब दोनों एक-दूसरे से बहुत डरेंगे और यह हालत हो जाएगी कि एक-दूसरे की नज़र से ही उनकी जान निकलने लगेगी।

फेबि० : वह तो मालकिन के साथ नौजवान आ रहा है। अब रास्ते से हटना चाहिए। फिर इसका पीछा करेंगे।

सर टो० : तब तक मैं ज़रा सोच लूं कि भयानक से भयानक ढंग से यह सन्देसा उसको पहुंचाऊं।

[**सर टोबी, फेबियन और मेरिया का प्रस्थान**]

[**ओलीविया और वायोला का प्रवेश**]

ओलीविया : मैंने एक पत्थर दिल से कितना कुछ न कह दिया और बिना झिझक के अपनी इज़्ज़त को भी तुम्हारे रहम के कदमों पर डाल दिया। मैं जानती हूं यह मेरे लिए ठीक नहीं है। मेरा दिल कहता है, लेकिन वह भूल मुझे कितनी अच्छी लगती है और इसे दुहराने की इच्छा कितनी सशक्त है कि कोई भी तिरस्कार मेरा मन नहीं फेरता।

वायोला : तो अपनी अनुभूतियों में मेरे स्वामी की व्यर्थ चाहना और वेदना की झलक देखो न ?

ओली० : मेरी यह भेंट तो स्वीकार कर लो ! यह रत्न पहन लो। देखो मेरा चित्र है। इसके तो जीभ भी नहीं कि बोलकर तुम्हारा गुस्सा बढ़ाए। कल आना ज़रूर ! जो चाहे मुझसे मांग लेना, मैं कुछ भी मना नहीं करूंगी।

वायोला : एक ही प्रार्थना है कि तुम ड्यूक ऑरसिनो से प्रेम करो।

ओली० : मैं अपने सम्मान सहित उन्हें क्या दूं जो तुम्हें दे ही चुकी।

वायोला : मैं क्या दावा करता हूं ?

ओली० : कल आओगे न ? बिदा। तुम जैसा शैतान मेरी आत्मा को नरक में भी ले जाए तो मुझे इन्कार नहीं। (**प्रस्थान**)

[**सर टोबी बेल्च और फेबियन का प्रवेश**]

सर टोबी : श्रीमान् ! भगवान आपकी रक्षा करे।

वायोला : आपकी भी श्रीमान्।

सर टोबी : नौजवान ! जैसे भी कर सको अपनी हिफाज़त करो! मैं नहीं जानता तुम्हारा क्या नुकसान न हो जाएगा ! लेकिन एक सामंत है जो उपवन की सीमा पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है, क्रोध और विकराल प्रतिहिंसा से भरा हुआ। अपनी तलवार म्यान से निकाल लो और उससे दो-दो हाथ करने को तैयार हो जाओ क्योंकि तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी बड़ा चतुर और चुस्त है, और तलवार तो उसके हाथ में गज़ब ढाती है।

वायोला : मुझे विश्वास है आप भूल कर रहे हैं क्योंकि मुझसे झगड़ने का किसीको कारण ही क्या हो सकता है ? मैंने कभी किसीका बुरा किया हो, मुझे तो ऐसा याद ही नहीं आता !

सर टोबी : अजी यह बात नहीं है, मैं बताता हूं। जीवन का मूल्य है तो सावधान हो जाओ। उसमें शक्ति है, यौवन का आवेश है और क्रोध ने तो उसे भड़का दिया है।

वायोला : मैं प्रार्थना करता हूं श्रीमान् ! बताइए न ? वह कौन आदमी है ?

सर टोबी : वह सर है, युद्धभूमि में नहीं, युद्धभूमि में चले किसी खड्ग के कारण नहीं। पर झगड़े में तो वह बड़ा ही बदनाम है। उसने द्वन्द्व-युद्ध में तीन आदमियों को मारा है और इस वक्त तो वह इतना क्रुद्ध है और ऐसा भयानक हो उठा है कि जो कुछ भी हो, अपने शत्रु की हत्या किए बिना उसे क्या चैन आ सकता है ?

वायोला : मैं श्रीमती ओलीविया के पास जाता हूं और रक्षा का प्रबंध करने को कहूंगा। मुझे द्वन्द्वयुद्ध और झगड़े पसंद नहीं। यह सच है, मैं जानता हूं, कुछ लोग अपनी बहादुरी दिखाने को दूसरे से जबरन लड़ जाते हैं। यह आदमी ऐसा ही लगता है।

सर टो० : नहीं नौजवान ! वह तो इस वजह से नाराज़ है कि तुमने उसका भारी नुकसान किया है। आगे बढ़ो और उससे मिलो। वह तो चाहता ही यह है। मैं तुम्हें लौटने नहीं दे सकता, अगर लौटते हो तो पहले मैं तुमसे लड़ूंगा और मुझे भी उससे कम खतरनाक न समझना। बढ़ो ! आओ, मुझसे लड़ो और आज़मा लो ! हम दोनों

में से एक से तो लड़ना ही पड़ेगा तुम्हें ! सच मानो ! या फिर यह मान लो कि तुम तलवार लिए फिरने के काबिल नहीं !

वायोला : क्या अजीब और बेहूदा बात है। मेहरबानी करके उस सामंत से मेरी खातिर यह तो पूछिए कि वह मुझसे खफा क्यों है ? कोई ऐसी बात ज़रूर होगी जिसे मैं नहीं जानता, मैंने तो इरादतन कुछ किया नहीं।

सर टो० : अच्छी बात है। ऐसा तो मैं कर सकता हूं। आप इनको देखते रहें फेबियन साहब ! तब तक मैं आता हूं। (**प्रस्थान**)

वायोला : भाई, यह क्या मामला है, जानते हो तो बताओ न ?

फेबि० : मैं तो इतना जानता हूं कि सामंत आपसे बिगड़ बैठा है और जानी दुश्मन हो गया है, और कुछ नहीं जानता।

वायोला : वह है कैसा ?

फेबि० : देखने से तो आप सोच भी नहीं सकते कि लड़ाई में यह ऐसा हो जाएगा। श्रीमान् ! आपका वह प्रतिद्वन्द्वी बड़ा खूनी-खतरनाक और चालाक है कि आपने तो ऐसा आदमी काहे को देखा होगा। उसकी तरफ चलें ? मैं तो कोशिश करूंगा कि आपकी-उसकी सुलह हो जाए ! जहां तक भी होगा यही करूंगा।

वायोला : अगर ऐसा करो तो मैं बड़ा कृतज्ञ होऊंगा। मैं इसकी चिन्ता नहीं करता कि मेरे ये विचार कोई सुनकर क्या कहेगा। मैं शांति चाहनेवाला आदमी हूं और सैनिकों में गिना जाने की बजाय पादरियों में मेरी गिनती हो, यही पसंद करता हूं।

[**दोनों का प्रस्थान**]

[**सर टोबी और सर ऐण्ड्रू का प्रवेश**]

सर टो० : मैं आपसे कहता हूं, यह नौजवान तो एक खौफनाक शैतान है। मैंने ऐसा गुस्सैल आज तक नहीं देखा। अभी म्यान में ही तलवारें थीं कि उसने ऐसा हाथ दिया मेरे कि बमुश्किल बचा। और पलटकर तो वह अचूक चोट करता है। सुना है वह फारस के शाह को तलवार चलाना सिखाता था।

सर ऐ० : लाहौल ! मुझे उससे क्या ?

सर टो० : ऐं ! मगर वह कब शांत होगा अब ? फेबियन क्या उसे तुम-पर झपटने से ज़्यादा देर रोक सकता है ?

सर ऐ० : उफ ! महरबा ! मुझे अगर सपने में भी यह गुमान होता कि इस कदर खतरनाक और बहादुर दुश्मन है तो काहे को मैं उसे चुनौती देता ! ऐसा नहीं हो सकता कि वह तरह दे जाए। मैं उसे अपना घोड़ा भेंट में दे दूंगा।

सर टो० मैं प्रस्ताव पहुंचा देता हूं। आप यहीं ठहरें। हिम्मत रखिए, ऐसे लगिए जैसे गुस्से में हैं। बिना झगड़े के ही मामला रफा-दफा हो जाएगा। (**स्वगत**) अरे अब मैं तुम्हारे घोड़े पर चढ़ूंगा, जैसे अब तक तुम्हारे सर पर सवार रहा हूं।

[**फेबियन और वायोला का प्रवेश**]

(**फेबियन से**) उसने मुझे झगड़ा रोकने को घोड़ा दिया है। मैंने उसे इस जवान के शैतान होने का यकीन दिला दिया है।

फेबि० : यह भी बुरी तरह डर गया है, सफेद पड़ गया है, हांफ रहा है, जैसे इसके पीछे जंगली जानवर दौड़ रहे हों !

सर टो० : (**वायोला से**) वह तो आपको छोड़ने को राज़ी नहीं होता। तुला बैठा है लड़ने पर। लेकिन झगड़ा देखते हुए वह इस नतीजे पर पहुंचा है कि मामला उतना बड़ा नहीं है, जितना पहली नज़र में लगा था। अब तो कहता है कि महज अपने लफ्ज़ों को निभाने के लिए वह तुमसे लड़ेगा। निकाल लो तलवार ! वह तुम्हारा कोई नुकसान नहीं करेगा।

वायोला : (**स्वगत**) हे भगवान् ! मुझे बचाओ ! अब कब तक छिपाऊं कि मैं एक स्त्री हूं।

फेबि० : सर ऐण्ड्रू ! आइए ! आगे आइए ! ये नहीं मानते। कहते हैं बस एक ही हाथ होगा, इज़्ज़त का सवाल ही जो ठहरा। द्वन्द्वयुद्ध के नियम ही जो हैं। लेकिन इन्होंने वचन दिया है कि यह आपकी कोई हानि नहीं करेंगे, आइए शुरू करिए।

सर ऐ० : हे भगवान् ! ऐसा कर कि यह अपने वचन से न पलट जाए। (**तलवार निकालता है।**)

[**ऐण्टोनियो का प्रवेश**]

वायोला : मैं कहता हूं, मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं है। (**तलवार खींचती है।**)

एण्टो० : तलवार म्यान में रख लो। अगर इस नौजवान ने तुम्हारा कुसूर किया है तो जुर्म को मैं अपने ऊपर लेता हूं, अगर तुम्हीं इसके मुजरिम हो, तो इसकी बजाय मैं तुमको बदले की चुनौती देता हूं।

सर टो० : ओह हो ! जनाब की तारीफ !

ऐण्टो० : श्रीमान् ? मैं वह हूं जिसके शब्दों को उसके कार्य प्रमाणित करेंगे, ऐसा मुझे इस युवक से स्नेह है। (**तलवार खींचता है।**)

सर टो० : बहुत अच्छा ! तुम बीच में बोलोगे तो फिर मैं भी मौजूद हूं।

फेबि० : ठहरिए ! ठहरिए ! सर टोबी ! न्याय के रक्षक अफसर इधर आ रहे हैं।

सर टो० : मैं तुम्हें अभी देखे लेता हूं।

वायोला : श्रीमान् ! तलवार, मेरी प्रार्थना है, म्यान में रखें।

सर टो० : बहुत अच्छा श्रीमान् ! मैंने वचन दिया था अब यही करूंगा। और जो भेंट मैंने आपको दी है वह आपके खूब काम आने वाला है। बड़ा अच्छा है।

[**अफसरों का प्रवेश**]

पहला अफसर : यह रहा। अपनी ड्यूटी का अंजाम दो।

दूसरा अफसर : ऐण्टोनियो ! हम ड्यूक की आज्ञा से तुम्हें गिरफ्तार करते हैं।

ऐण्टो० : तुम निहायत गलती कर रहे हो !

पहला अफसर : जी नहीं जनाब ! मैं आपकी सूरत खूब पहचानता हूं। हालांकि आप अब जहाज़ी की वेश-भूषा में हैं। ले चलो जी इसे। यह जानता है कि मैं इसे पहचान रहा हूं।

ऐण्टो० : मैं आज्ञा मानने को विवश हूं। (**वायोला से**) तुम्हें ढूंढ़ते हुए यह नतीजा मिला। लेकिन और कोई चारा भी नहीं था। मैं तो भुगत

ही लूंगा। पर अब तुम क्या करोगे, क्योंकि न सिर्फ मैं तुम्हें छोड़ने को मजबूर हूं, बल्कि तुमसे अपना धन मांगने को भी हो गया हूं। अपनी गिरफ्तारी से ज़्यादा चिन्ता मुझे तुम्हें इस हालत में छोड़ने से होती है। तुम तो इस तरह हक्के-बक्के खड़े हो ? हिम्मत रखो !

दूसरा अफसर : चलिए सा'ब। हो गया।

एण्टो० : मुझे कुछ धन तो लौटा दो !

वायोला : अरे कैसा धन भाई ! यह जो तुमने झगड़े में मेरी मदद की इसके लिए और फिर तुम मुसीबत में पड़ गए हो इसलिए भी मैं तुम्हें ज़रूर धन दूंगा पर मेरे पास बहुत थोड़ा है। जो है उसका आधा तुम्हें दे देता हूं।

एण्टो० : यह कैसे हो सकता है कि तुम ऐसे वक्त मुझसे इंकार कर सको। क्या तुम्हारे प्रति जो मैंने किया है उससे तुम इतना ही कर पाओगे ? मेरे दुःख को इतना न बढ़ाओ, अन्यथा मुझे अहसानों को याद दिलाने के कमीनेपन पर उतर आना पड़ेगा।

वायोला : सच ! मुझे तो एक भी याद नहीं आता ! न मैं तुम्हें जानता हूं ; तुम्हारी आवाज़ कभी सुनी हो, या तुम्हारा चेहरा कहीं देखा हो, ऐसा भी याद नहीं आता। यह मेरी प्रकृति में नहीं कि अकृतज्ञ बनूं। मुझे कृतघ्नता से घृणा है। उसे मैं झूठ, गर्व, वाचालता, नशा करना, और मनुष्यों को संभवनीय सारे अपराधों से अधिक नीच समझता हूं।

एण्टो० : ओह भगवन् ! सुन ले !

दूसरा अफसर : चलो ! चलते हो या नहीं ?

एण्टो० : मुझे दो बातें कहने दो बस। मैंने इस नौजवान को, देखते हो न तुम इसे, अधमरा था, तब मौत के जबड़ों से निकाला था। पूरी मुहब्बत से मैंने इसे ठीक किया, पूजा की इसकी बिना किसी हिचक के। इसकी खूबसूरत शक्ल जैसा ही इसका मन समझा था मैंने।

पहला अफसर : पर हमें इस सबसे क्या ? वक्त निकला जा रहा है, चलो।

ऐण्टो० : धिक्कार है। मेरा आराध्य एक व्यर्थ की मूर्ति ही प्रमाणित हुआ। सैबैस्टियन! तेरी नीचता ने तेरे रूप को भी शर्म से ढक दिया। बाहर का रूप कुछ नहीं होता, यदि मन पवित्र और अच्छा हो, तो कुरूप भी सुन्दर है, ग्राह्य है। जिसका मन निष्ठुर है, वही वास्तव में कुरूप है। सद्गुण ही सौन्दर्य है, किन्तु रूपमय कुटिल पाप क्या है, एक पोला पेड़, जिसे शैतान ने बाहर से इतना अलंकृत कर दिया है।

पहला अफसर : इसकी अक्ल गुम होती जा रही है। ले चलो इसे। चलो जी।

ऐण्टो० : तो चलो फिर।

[**अफसरों के साथ ऐण्टोनियो का प्रस्थान**]

वायोला : उसकी बात में कितनी दिल की आवाज़ थी, ऐसा लगता है यह कुछ सच कह रहा था। उसने मेरी मदद की ज़रूर होगी, जिससे मैंने इंकार कर दिया। ओह! कितना अच्छा हो जो यह सच हो कि उसने मुझे गलती से मेरा भाई समझ लिया है।

सर टो० : सर ऐण्ड्रू और फेबियन! हम कुछ बुद्धिपूर्ण बातें कर लें।

वायोला : उसने नाम लिया था सैबैस्टियन! दर्पण में देखने पर तो बिल्कुल अपने भाई की-सी ही मेरी शकल है। मेरा-उसका चेहरा, कितने मिलते हैं दोनों! और मैंने कपड़े भी उसके-से ही पहन रखे हैं! उसके वस्त्रों का रंग और ढंग मैंने अपनाया था। ओह! काश यह सचमुच ठीक हो, तो वह तूफान, वह आंधी, वह समुद्र, सब ही मेरे लिए बहुत दयालु थे। (**प्रस्थान**)

सर टो० : यह तो बड़ा धोखेबाज़ लड़का है। खरगोश से भी डरपोक! अगर तुम्हें इसकी धोखेबाज़ी का सबूत चाहिए तो देखो न, यह अपने दोस्त को मुसीबत में देख पहचानने से मुकर गया, और अगर तुम्हें उसके डरपोक होने का सबूत चाहिए, तो फेबियन से पूछो।

फेबि० : बिल्कुल ठीक कहा आपने। इसमें तो हिम्मत ही नहीं।

सर ऐ० : हे भगवान्! मैं इसका पीछा करूंगा और इसकी कस करके

पिटाई करूंगा।
सर टो० : तुम इसे खूब ठोंकना पर तलवार का इस्तेमाल न करना।
सर ऐ० : अगर न मारूं तो··· (**प्रस्थान**)
फेबि० : चलिए, अब हम नतीजा देखने चलें।
सर टो० : मैं शर्त बदता हूं। नतीजा कुछ नहीं निकलेगा। (**प्रस्थान**)

चौथा अंक

दृश्य १

[ओलीविया के घर के सामने की सड़क]

[सैबैस्टियन और विदूषक का प्रवेश]

विदूषक : क्या आप मुझे यकीन दिलाना चाहते हैं कि मेरी मालकिन ने मुझे आपको बुलाने को नहीं भेजा है ?

सैबैस्टियन : अरे चलो हटो ! तुम बेवकूफ आदमी हो। मेरा पीछा छोड़ो।

विदू० : खूब ! आप तो जमे हुए खिलाड़ी निकले। मैं आपको नहीं जानता, मेरी मालकिन ने आपको नहीं बुलाया कि आप उनसे चलकर बात करें ! आपका नाम भी श्रीमान् सिज़ैरियो नहीं है ? और देखते हैं, यह है न, यह मेरी नाक भी नहीं है। जो-जो कुछ है, वह अब वह नहीं है।

सैबै० : शांत ! अपनी बेवकूफी का जोश कहीं और जाकर निकाल लो। हम दोनों एक-दूसरे को बिल्कुल नहीं जानते।

विदू० : बेवकूफी का जोश ! ज़रूर किसी बड़े आदमी के मुंह से सुनकर रटी हुई बात है और अब एक विदूषक पर लागू की गई है ! ऐसा लगता है यह दुनिया अब एक मगरूर इन्सान की शक्ल में बदल जाएगी। बस, चलो नौजवान, अब बनना छोड़ो और मुझे यह बताओ कि मैं काउण्टेस को क्या जवाब दूं ! कह दूं तुम आओगे ?

सैबै० : अरे मैं कहता हूं जाओ ! अच्छा यह पैसे ले लो उल्लूदास ! मुझे छोड़ो ! मगर अब रुके तो समझ लो मुझसे बुरा कोई न होगा।

विदू० : कसम से, बड़े दरियादिल हैं आप तो ! अगर अकलमंद लोग इसी तरह हम लोगों को अरसे तक देते रहते हैं तो बड़ा अच्छा नाम कमा लेते हैं।

[**सर ऐण्ड्रू का प्रवेश**]

सर ऐ० : अच्छा आप फिर मिल गए। लीजिए, यही आपके लिए ठीक है।

[**सैबेस्टियन को मारता है।**]

सैबै० : अच्छा, और तुम्हारे लिए यह है, लो, और लो, और लो······ क्या सबके सब पागल हैं ?

[**ऐण्ड्रू को मारता है।**]

[**सर टोबी और फेबियन का प्रवेश**]

सर टोबी : ठहर जाओ, वर्ना मैं तुम्हारा शस्त्र छीन लूंगा।

विदू० : मैं अभी मालकिन से सीधे जाकर सब कहता हूं। वह सुन लेगी तो मैं किसी कीमत पर भी आप लोगों के साथ नहीं रह सकूंगा। (**प्रस्थान**)

सर टोबी : रुकिये जनाब ! रुक जाइए।

सर ऐ० : छोड़ दो उसे, सर टोबी, बीच में न आओ। मैं दूसरी तरह से इससे बदला निकाल लूंगा। इसने हमला किया है, मैं इसे कचहरी में खींचूंगा, अगर इलिरिया में कोई कानून भी है तो देख लूंगा। इससे क्या होता है कि मैंने इसपर पहले हमला किया था।

सैबै० : अरे हाथ छोड़ो।

सर टो० : छोड़ना कैसा ! तलवार म्यान में करो। काफी चला ली। भीतर-भीतर !

सैबै० : अरे तो क्या मैं छुड़ा न पाऊंगा। (**छूट जाता है**) बोलो अब क्या करोगे ? और मत बोलना, कसम से वर्ना, तुम भी तलवार खींच लो।

सर टो० : क्या कहा ! अब तो मुझे तुम्हारा तोला-दो तोला गर्म-गर्म खून बहाना ही पड़ेगा।

[**तलवार खींचता है।**]

[**ओलीविया का प्रवेश**]

ओली० : रोक दो। टोबी ! मैं आज्ञा देती हूं। अगर जान प्यारी है तो रुक जाओ !

सर टो० : श्रीमती ?

ओली० : तुम्हारी यह हालत ! ओ कृतघ्न अधम ! तुम तो जंगलों और पहाड़ों में रहने योग्य बर्बर हो जहां सब ही असभ्य होते हैं। निकल जाओ मेरी आंखों के सामने से ! प्रिय सिज़ेरियो ! बुरा न मान जाना। चले जाओ, हुश ! तुम लोग !

[सर टोबी, ऐण्ड्रू और फेबियन का प्रस्थान]

ओली० : प्रिय मित्र, शांत हो जाओ। विवेक से ही क्षमा कर दो। अपना भावावेश त्याग दो, यह क्रूर और असभ्य व्यवहार भूल जाओ। मेरे साथ मेरे घर में चलो और तुम्हें मैं बताऊंगी कि यह लुच्चा किस तरह हरामखोरी करता हुआ रोज़ नई परेशानियां और झगड़े खड़े किया करता है ! तुम्हें तो सुनकर हंसी आ जाएगी। चलो न, मना मत करो। लानत है उसकी रूह को ! मुझे क्या कम बुरा लगा है ? यह तुमपर हमला नहीं, मेरे दिल पर हुआ है।

सैबै० : इसका मतलब ! क्या हो रहा है ये ! क्या मेरी अकल खराब हो गई है, या मैं सुपना देख रहा हूं ! या मेरी कल्पना का साम्राज्य छा गया है, मेरा तर्क कहां गया ? यदि यह स्वप्न है तो इसमें से कभी भी न जागूं।

ओली० : आओ न ? मैं विनती करती हूं। काश, तुम मेरी बात मान लेते !

सैबै० : मानूंगा श्रीमती।

ओली० : आह ! फिर कहो, सच यही होगा। **(प्रस्थान)**

दृश्य २

[ओलीविया के घर का कमरा]

[मेरिया और विदूषक का प्रवेश]

मेरिया : देखो, जल्दी से यह चोगा पहनकर यह दाढ़ी लगा लो। उसे यह विश्वास दिलाओ कि पादरी सर टोपाज़ हो। जल्दी करो। मैं सर टोबी को बुला लाती हूं।

विदू० : मैं पहनता हूं और इस दौरान में अपना पार्ट भी दुहरा लेता हूं। मुझे यकीन है कि मुझसे पहले कितने लोग जिन्होंने चोगे पहने हैं, ऐसे ही दुरंगे लोग रहे हैं। काश मैं ज़रा और लम्बा होता तो इस पद के उपयुक्त होता और ज़रा और दुबला होता, तो एक अध्ययनशील पादरी मालूम देता। जो हो, अरे सच्चा और अतिथि-सत्कार करने वाला व्यक्ति भी एक विद्वान जैसा ही समझा जाता है। लो सारे षड्यंत्रकारी आ पहुंचे।

[**सर टोबी और मेरिया का प्रवेश**]

सर टो० : श्रीमान् पादरी साहब ! ईश्वर आपकी रक्षा करे।

विदू० : नमस्कार सर टोबी ! आप ठीक कहते हैं, मैं अब श्रीमान् पादरी साहब ही हूं, जैसे प्राहा नगर के साधू ने जिसने कभी कलम और दवात तक नहीं छुई थी, राजा गोरबोडुक की भतीजी से बड़ी चतुरता से कहा : "अब जो कुछ भी हो, जो है, सो है।" तो मैं भी हो गया पादरी साहब, जी हां पादरी साहब ! क्योंकि जो है न ? वह है, सो, वह जब है, तो है।

सर टो० : सर टोपाज़ ! चलिए उससे बातें तो करिए।

विदू० : अरे ! कौन बंद है यहां। भगवान उसको शांति दे !

सर टो० : यह बदमाश तो खूब अभिनय करता है। कमाल का बदमाश है।

मालवोलियो : (**भीतर से**) कौन है ?

विदू० : सर टोपाज़, पादरी, जो पागल मालवोलियो से मिलने आया है।

माल० : सर टोपाज़ ! सर टोपाज़ ! हे श्रेष्ठ सर टोपाज़ ! मेरी श्रीमती को खबर दे दो !

विदू० : ओ भयानक शैतान ! इसपर से निकल ! तू इसे कैसे सता रहा है। उतर रे भूत ! उतर ! तुझे स्त्रियों के सिवाय बात करने को कुछ सूझता ही नहीं ?

सर टो० : ठीक कहा पादरी साहब !

माल० : सर टोपाज़ ! कभी भी इंसान के साथ ऐसा जुल्म नहीं हुआ।

हे श्रेष्ठ सर टोपाज़ ! मुझे पागल मत समझिए। इन्होंने मुझे इस जघन्य अंधकार में डाल दिया है।

विदू० : निकल, निकल, बेईमान, शैतान ! उतर इसके सिर से। मैं दयालु व्यक्ति हूं तभी तुझे दुर्वचन नहीं कहता। तू इस जगह को अंधेरे से स्याह करता है ?

माल० : सर टोपाज़ ! यह तो नरक है नरक !

विदू० : अरे इसकी ऊपरी खिड़कियां तो मुझे किसी किले की दीवार-सी दीख रही हैं। चमकदार आबनूस की लकड़ी-सी उत्तर और दक्षिण की खिड़कियां उजालेदार हैं, और फिर भी तू कहता है कुछ नहीं दीखता।

माल० : मैं पागल नहीं हूं सर टोपाज़ ! मैं कहता हूं यहां बड़ा अंधेरा है।

विदू० : पागल ! तू भूल करता है। अज्ञान के अतिरिक्त यहां कोई ऐसा अंधकार नहीं। जैसे मिस्री लोग कुहरे में ढके रहते थे, तू उस अंधकार में डबा हुआ है।

माल० : यह घर अज्ञान की भांति अंधकारमय है, और अज्ञान नरक का-सा काला है। मैं कहता हूं कि शायद ही कोई ऐसा आदमी होगा जिसे इतना सताया गया हो और बेवजह ! जितने तुम ठीक हो, उतना ही मैं भी हूं। मैं पागल नहीं हूं, मुझसे कोई भी सवाल पूछकर मेरा इम्तहान ले लो।

विदू० : बताओ जंगली फाख्ता के बारे में ग्रीक दार्शनिक पाइथागोरस का क्या मत था !

माल० : उसका यह मत था कि बहुत संभव है हमारे पूर्वजों की आत्माएं उनमें रहती थीं।

विदू० : और तुम्हारी इस बारे में क्या राय है ?

माल० : मैं इसपर बिल्कुल विश्वास नहीं करता, मैं तो आत्मा के विषय में ऊंची धारणा रखता हूं।

विदू० : तब तो तुम्हें नमस्कार ! मैं तुम्हें तब तक पागल ही मानूंगा जब तक तुम उस दार्शनिक से सहमत नहीं हो जाते, और जंगली फाख्ता मारने में इस डर से नहीं रुक जाते कि कहीं तुम्हारी दादी न मर

जाए। बिदा।

माल० : पादरी साहब ! पादरी साहब !

सर टो० : कमाल के पादरी हैं !

विदू० : ओह ! मैं तो चाहे कोई पार्ट कर सकता हूं।

मेरिया : इसके लिए तो तुम्हें वेश बनाने की ज़रूरत नहीं थी। वह तुम्हें देख थोड़े ही सकता है।

सर टो० : अब अपनी असली आवाज़ में उससे बातें करो और इस मुलाकात का नतीजा मुझे बताओ। अब तो इस कारगुज़ारी का किसी तरह ठीक से अंत हो जाए तो ही भला, इसे किसी ढंग से निकालो यहां से, तभी बचत है, हां, पर हाथ-पांव बचाकर ही। काउण्टेस वैसे ही मुझसे बहुत नाराज़ हो गई है और अब मालवोलियो को सताने का काम छोड़ो ! मेरे कमरे में आकर सब बताना !

[**सर टोबी और मेरिया का प्रस्थान**]

विदू० : (**गान**)

रोबिन ! मेरे रोबिन ! दिल खुश रोबिन !
तेरी प्रिया के हैं क्या हाल ?

माल० : विदूषक !

विदू० : (**गान**) ऐ हो, वह तो निष्ठुर बड़ी कठोर है……

माल० : विदूषक !

विदू० : (**गान**) ऐसा क्यों है कहो मलाल ?

माल० : विदूषक ! अरे सुनते हो !

विदू० : (**गान**) किसी और से करती है वह प्यार अरे ……हैं ! किसने बुलाया मुझे ?

माल० : अच्छे विदूषक ! मुझे कुछ लिखने का सामान ला दो, मैं तुम्हें इनाम दूंगा। इस काम को कर दो, मैं कसम खाता हूं, तुम्हारे काम आऊंगा !

विदू० : कौन ? कारिन्दा साहब !

माल० : हां, मेरे दयालु विदूषक !

विदू० : अरे ! आप पागल कैसे हो गए ?

माल० : विदूषक ! मुझ जैसी ज़्यादती तो कभी किसीपर नहीं हुई होगी। विदूषक ! जैसे तुम पागल नहीं हो, मैं भी नहीं हूं।

विदू० : सोचकर बोलो भाई ! अगर तुम विदूषक की-सी बुद्धि वाले हो तो मूर्ख हो, यानी कि पागल हो !

माल० : उन्होंने मुझे सामान की तरह बंद कर दिया है। यहां बड़ा अंधेरा है, वे पादरियों को भेजते हैं, गधे कहीं के ! और सारी ऐसी कोशिश कर रहे हैं कि मैं पागल हो जाऊं।

विदू० : क्या कहते हो सोचकर बोलो ! लो पादरी साहब आ गए। (**स्वर बदलकर**) मालवोलियो ! मालवोलियो ! ईश्वर तुम्हारी बुद्धि को ठीक करे। सोने का प्रयत्न करो और यह बेकार की बक-बक बंद करो।

माल० : सर टोपाज़ !

विदू० : ऐ भले आदमी इससे बातें मत करो (**अपने स्वर में**) हां कौन, श्रीमान् मैं ? नहीं श्रीमान् ! कभी नहीं। भगवान आपके साथ है पादरी साहब ! सर टोपाज़ ! आप धन्य हैं। (**स्वर बदलकर**) ऐसा ही हो ! आमीन ! (**अपने स्वर में**) हां श्रीमान् ! वही करूंगा जैसी आज्ञा ! जैसी आज्ञा।

माल० : ओ विदूषक ! विदूषक ! अरे विदूषक !

विदू० : ठहरिए सा'ब। ज़रा धीरज धरिए। अब कहिए ! मैं आपसे बोलता हूं तो मुझे डांट लगती है।

मालवोलियो : प्यारे विदूषक। मुझे ज़रा रोशनी और कागज़ तो ला दो ! मैं कहता हूं, मैं उतना ही ठीक हूं जितना इलिरिया का कोई भी आदमी।

विदू० : मैं भी चाहता हूं ऐसा ही जल्दी से हो जाए।

माल० : कसम से मैं ठीक हूं। मुझे स्याही, कागज़ और रोशनी ला दो अच्छे विदूषक! जो मैं लिखकर दूं वह श्रीमती को ले जाकर देना। ऐसा लाभ तुम्हें किसी पत्र को पहुंचाकर न हुआ होगा, जो इससे होगा।

विदू० : अच्छी बात है, मैं मदद करूंगा। पर मुझे यह बता दो ठीक से

कि तुम सचमुच पागल हो या बन रहे हो ?

माल० : मैं न हूं, न बन रहा हूं, कसम खाता हूं, मेरा भरोसा करो।

विदू० : पागल की बात का क्या भरोसा ! लेकिन मैं वह लाता हूं जो तुम चाहते हो।

माल० : तुम्हें इसका बड़ा इनाम मिलेगा। जल्दी करो।

विदू० : [गीत]

चला चला सरकार, गया मैं गया गया,
अभी अभी मैं लौट यहीं पर आऊंगा,
जैसे नाटक[1] में आता था पाप सदा,
वैसे ही मैं लौट लौट कर आऊंगा।
हिम्मत रखना, जैसे पाप खड्ग लेकर,
करता था हमला बढ़कर शैतान पर,
भर गुस्से से, भर द्वेषों से जोशीला—
लौटा करता था फिर कन्नी काटकर…

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[ओलीविया का उपवन]

[सैबैस्टियन का प्रवेश]

सैबैस्टियन : यह है वायु, वह है उज्ज्वल सूर्य। यदि यह मेरी पहचान ठीक है, तो यह भी सत्य है कि उसने मुझे यह देदीप्यमान रत्न भेंट किया। यह मेरे हाथ में है, मैं इसे छू रहा हूं। मैं इसे देख रहा हूं। नहीं, मैं पागल नहीं हूं। किन्तु आश्चर्य ने मुझे विह्वल कर दिया है। मैंने ऐण्टोनियो को सराय हाथी में देखा लेकिन वह मुझे नहीं मिला। वह वहां गया ज़रूर था और उन्होंने यह भी बताया कि

---

१. शेक्सपियर के पहले मिरैकिल प्ले होते थे। यह रूपक होते थे, जैसे हिन्दी में 'प्रबोध चन्द्रोदय' है। इसमें पात्र होते थे, सज्जनता, पाप, शैतान, क्रोध आदि। यहां ऐसे ही एक तत्कालीन प्रसिद्ध रचना का हवाला दिया गया है।

वह मुझे ढूंढ़ने शहर चला गया था। उसीकी सलाह की मुझे इस वक्त कितनी ज़्यादा ज़रूरत थी! क्या करूं, किसपर भरोसा करूं! मेरा विवेक और जो कुछ मैं देख रहा हूं इनमें कोई पटरी ही नहीं बैठ रही है। मेरी अक्ल कहती है कि इस सबमें कहीं कुछ गड़बड़ ज़रूर है। मैंने तो अपनी बुद्धि नहीं खोई है, फिर भी सब कितनी अनहोनी है, और जो मैंने आज तक इस दुनिया में देखा-समझा है, सचमुच जो यहां देखा है, वह ऐसा असम्भव-सा लगता है कि मुझे स्वयं ही उसपर विश्वास नहीं होता। अब तो मैं ऐसी परिस्थिति में पड़ गया हूं कि जो कुछ हो चुका है, उसके लिए कहूं कि यह हुआ ही नहीं। या तो मेरा दिमाग़ खराब हो गया है, या उस स्त्री का। लेकिन वह पागल होती तो क्या ऐसे घर-बार चला लेती! नौकरों पर हुकूमत कर लेती! सूचनाएं पाकर जवाब देती और सबको काम में लगाए रहती! और वह भी किस धीरज, शांति, बुद्धिमानी और आत्मविश्वास से किया था सब उसने मेरी उपस्थिति में! समझ में नहीं आता। लो काउण्टेस ही आ रही है।

[**ओलीविया और एक पादरी का प्रवेश**]

ओली० : मेरी जल्दबाज़ी का बुरा न मानना। यदि जो कुछ तुमने कहा है, वह सत्य है तो पास के गिरजे में मेरे और पादरी साहब के साथ चलो, और इनकी मौजूदगी में उस पवित्र स्थान में अपना वचन दो, मुझसे प्रतिज्ञा करो ताकि मेरे मन का शक और डर दूर हो जाय और शांति से वह तुम्हारी बात की सचाई को मानकर ढाढस पाए। जब तक तुम चाहोगे, हमारी सगाई गुप्त रहेगी और जब तुम चाहो विवाह की घोषणा करके आनन्द मनाना, ऐसा जो मेरे सम्मान के अनुकूल हो। सहमत हो?

सैबै० : मैं तैयार हूं। तुम्हारे और इनके साथ चलता हूं। जो वचन मैंने दिया है उसके प्रति मैं सदैव दृढ़प्रतिज्ञ रहूंगा।

ओली० : आदरणीय पादरी साहब! हमें रास्ता दिखाएं, ईश्वर हमारे इस कार्य से प्रसन्न हो! (**प्रस्थान**)

पांचवां अंक

दृश्य १

[ओलीविया के घर के सामने]

[विदूषक और फेबियन का प्रवेश]

फेबि० : अच्छा, अगर तुम्हें मुझसे प्रेम है, तो उसका पत्र दिखा दो।

विदू० : मेरे अच्छे दोस्त ! मेरी भी एक प्रार्थना मानोगे ?

फेबि० : मानता हूं। जो कहो।

विदू० : तो इस पत्र को देखने की इच्छा न करो।

फेबि० : यह तो कुत्ता देकर, उसीको फिर मांग लेना हुआ।

[ड्यूक, वायोला, क्यूरियो और लार्ड लोगों का प्रवेश]

ड्यूक : क्या तुम श्रीमती ओलीविया के अनुचर हो ?

विदू० : जी हां श्रीमन्त ! हमें उन्हींकी संपत्ति समझिए।

ड्यूक : तुम्हारा चेहरा मुझे पहचाना-सा लगता है। क्या हाल हैं तुम्हारे !

विदू० : जी दुश्मनों को भले, दोस्तों को बुरे।

ड्यूक : उल्टी बात कह गए गलती से। दोस्तों को भले कहो।

विदू० : जी नहीं मेरा मतलब वही है जो मैंने कहा।

ड्यूक : समझाओ।

विदू० : श्रीमंत सुनिए ! मेरे दोस्त मेरी खुशामद करते हैं। और इस तरह मुझे बेवकूफी करने में बढ़ावा देते हैं। अच्छा। मेरे दुश्मन मेरी प्रकट रूप से नुक्ताचीनी करते हैं और कहते हैं कि मैं बेवकूफ हूं, मुझे उनसे अपना सुधार करने की प्रेरणा मिलती है। दोस्तों से होता है नुकसान, दुश्मनों से फायदा। जैसे दो होते हैं तभी चुम्बन लिया जा सकता है, उसी तरह दो अभावात्मकों के मिलन से एक भावात्मक जो बनता है, यानी कि हुआ यह कि मुझे दोस्तों की बजाय दुश्मनों से ज़्यादा फायदा होता है।

ड्यूक : शाबाश !

विदू० : नहीं श्रीमान् ! ऐसा कहना उचित नहीं, आप तो मेरी मित्रता में ऐसे कहते हैं।

ड्यूक : तुम मेरे लिए बुरे साबित न होगे। यह लो··· (धन देता है।)

विदू० : अगर मैं आपको गलत सलाह नहीं देता तो आपको अपना काम दुहराना चाहिए।

ड्यूक : यह तो बात ठीक नहीं लगती।

विदू० : श्रीमान्, जेब में बटुआ रख लीजिए और हाथ को उसका पीछा करने दीजिए।

ड्यूक : अच्छी बात है, फिर दुतरफा चाल का कुसूर मैं किए लेता हूं। यह लो··· (फिर धन देता है।)

विदू० : एक, दो, तीन तो बड़ा अच्छा खेल है। पुरानी कहावत है कि, तेली की तीन बार ! श्रीमान्, संगीत में भी तीसरी टेक की गत ही क्या कमाल करती है। श्रीमान् ने गिरजे के घंटे सुने होंगे जो याद दिलाते हैं—एक-दो-तीन !

ड्यूक : नहीं ! एक खेल में तीन बार नहीं काट सकते। फिर और ज़्यादा ही मिलेगा अगर तुम काउण्टेस से जाकर कहो कि मैं उनसे मिलने आया हूं, और अगर उन्हें तुम ले आए कि वह मुझसे बात करें तब ही।

विदू० : श्रीमान् की दयावृत्ति मेरे लौटने तक सोई रहे। मैं आपका काम करूंगा, पर यह न समझें कि और इनाम पाने की खातिर मैंने ऐसा किया है। पर उसे सुलाए रखें, क्योंकि उसे मैं ही जगाऊंगा आकर। (प्रस्थान)

वायोला : लीजिए श्रीमान् ! वह आदमी आ रहा है जिसने मुझे बचाया था।

[अफसरों के साथ एण्टोनियो का प्रवेश]

ड्यूक : यह चेहरा तो मुझे पहचाना-सा लगता है। हां, मैंने इसे आखिरी बार जब देखा था तब यह लड़ाई के धुएं से ऐसा काला हो रहा था जैसे देवताओं के लुहार वल्कन का मुंह हो ! यह एक बहुत

छोटे जहाज़ का कप्तान था, मगर उस ज़रा-सी चीज़ के बल पर ही इसने ऐसा जबर्दस्त हमला किया और हमारे बेड़े के सबसे अच्छे जहाज़ को तोड़ दिया, यहां तक कि उस चोट से नुकसान उठाने वाले भी 'वाह-वाह' कहे बिना न रह सके ! अब क्या बात हुई !

पहला अफसर : ऑरसिनो ! यह वही ऐण्टोनियो है जिसने फीनिक्स जहाज़ और उसका माल कैण्डी में छीना था। जब आपके तरुण भतीजे टाइटस का पांव कट गया था तब टाइगर जहाज़ को इसीने किनारे पर सफलता से पहुंचाया था। इसे हमने शहर में झगड़ा करते पकड़ा है। अब इसके पास कुछ नहीं है और बड़ी बुरी हालत में है।

वायोला : श्रीमान् ! इसने मुझपर दया की थी, मेरी ओर से तलवार खींचकर खड़ा हुआ था, पर बाद में इसने मुझसे जाने क्या कहा कि मैं समझ न सका। मुझे लगा धक्का था परेशानी का, दिमाग शायद चल गया था।

ड्यूक : सचमुच यह तो तुम्हारा बिल्कुल विवेकहीन कार्य ही कहा जाएगा कि तुम जो एक प्रसिद्ध समुद्री डाकू और नामी लुटेरे हो, हमारी पकड़ के भीतर आने की हिम्मत कर गए, जो तुम्हारे दुश्मन हो चुके हैं, क्योंकि तुमने हमें जान और माल का नुकसान पहुंचाया है।

ऐण्टो० : श्रीमंत ऑरसिनो ! प्रसन्न होइए कि मैं आपके दिए नामों को स्वीकार नहीं करता, न ऐण्टोनिया कभी चोर था, न समुद्री डाकू। मैं स्वीकार करता हूं कि मैं आपका शत्रु था, परन्तु अकारण नहीं। मैं यहां क्यों हूं? क्योंकि मैं इस युवक से अलग नहीं रह सका जो आपके पास खड़ा है। हालांकि इसके हृदय में मेरे प्रति तनिक भी कृतज्ञता नहीं है। मैंने इसे भीषण समुद्र में बचाया, जब यह मर रहा था, निराश होकर डूब रहा था। मैंने इसे फिर जीवन दिया और अपना प्रेम दिया, प्रेम कि जिसकी सीमा नहीं। इसीके स्नेह के कारण मैं इस शत्रु नगरी में भी आते नहीं डरा। मैं इससे

फिर मिला जब इसे शत्रुओं ने घेर रखा था, इसपर वे हमला कर रहे थे। मैंने तलवार खींच ली और मुझे प्रसन्नता है कि मैंने इसकी रक्षा की। तभी मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और यह युवक कायर और धोखेबाज़! इसने मुझे पहचानने से इन्कार कर दिया कि कहीं इसे भी मेरी मुसीबत का हिस्सेदार न बनना पड़ जाए! डरपोक मेरे लिए अजनबी बन गया। ज़रा-सी मुसीबत ने इस पुरानी मुहब्बत को ऐसा तोड़ दिया! पलक मारते पलट गया। अरे, मेरा धन ले रखा था, उससे भी मुकर गया। और घंटा-भर भी न हुआ जब मैंने इसे बटुआ दिया था।

वायोला : यह कैसे हो सकता है?

ड्यूक : यह इस शहर में कब आया?

ऐण्टो० : आज ही श्रीमंत! पूरे तीन महीने निकल गए, क्षण-भर भी मैं इससे दूर न हुआ, रात-दिन का साथ था।

[**ओलीविया और सेवकों का प्रवेश**]

ड्यूक : काउण्टेस आ रही हैं। पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आया है। मगर तुम्हारी कहानी पागल की बकवास है। तीन महीने से यह जवान मेरे पास है, इसके बारे में फिर बातें करेंगे। अफसरो! इस कैदी को इस वक्त किनारे खड़ा करो।

ओली० : श्रीमंत की मैं क्या सेवा करूं? ओलीविया के पास सिवाय उसके कि जो वह पहले अस्वीकार कर चुकी है, बाकी कुछ भी आपकी सेवा में अदेय नहीं है। सिज़ैरियो! तुमने मुझसे अपना वचन नहीं निबाहा?

वायोला : श्रीमती!

ड्यूक : सुन्दरी···

ओली० : हां सिज़ैरियो! ड्यूक। हां श्रीमान्···

वायोला : ड्यूक बोल रहे हैं। जब तक वे कह न चुकें तब तक मेरे लिए चुप रहना ही उचित है।

ओली०: यदि श्रीमान् उसी पुरानी कहानी को क्रमशः चलाना चाहते हैं तो वह मेरे कानों में ऐसे ही गूंजेगी जैसे मीठा संगीत सुनकर कोई

जंगली जानवरों की दहाड़ सुने।

ड्यूक : क्या तुम अभी भी इतनी कठोर हो ?

ओली० : नहीं श्रीमान् ! मैं पतिव्रत की बात कहती हूं।

ड्यूक : पतिव्रत ! ओ दाक्षिण्यहीन स्त्री ! तुम्हारी वेदी पर ही मैंने अपनी समस्त आराधना और प्रेम न्यौछावर किया था ! तुमने कभी मेरी बात नहीं मानी ! हाय ! अब मैं क्या करूं ?

ओली० : श्रीमान् जो चाहें करें, पर वह हो आपके पद और स्थान के गौरव के अनुरूप ही।

ड्यूक : क्या है जो मेरे प्रेम के केन्द्र को मेरे हाथों से नष्ट होने से बचा सकता है, ताकि कोई दूसरा उसे न पा सके, जैसा उस मिस्र के डाकू ने मरते समय किया था। यह एक बर्बर, वहशी और ईर्ष्या-भरा प्रेम है, नहीं, किन्तु इसमें एक उदात्त भाव भी है। जो हो। मैं कहता हूं कि जब तुम मेरे प्रेम को ठुकराती हो, मेरे स्नेह को स्वीकार नहीं करतीं, तो पाषाणहृदया ही बनी रहो और क्योंकि मैं जान गया हूं कि किसने तुम्हारा वह हृदय छीना है, जो मेरा होना चाहिए था। मैं अब इसका ध्यान रखूंगा कि वह अब तुम्हारे पास तुम्हें सुख देने नहीं आ सकेगा, जिसे देखकर तुम प्रफुल्लित होती हो ! वह अपने स्वामी के ही हित का घातक नहीं बनेगा। मैं स्वयं उसे बहुत चाहता हूं, वह मेरे साथ जाएगा। आओ सिज़ैरियो ! मैं इस निष्ठुर स्त्री से प्रतिशोध लेने पर तुल गया हूं और मैं अपने ही प्यारे मेमने की बलि दूंगा, ताकि यह जो सुन्दर चिड़िया भीतर एक गिद्ध का दिल छिपाए हुए है, तड़प-तड़प उठे। (**चलता है।**)

वायोला : और श्रीमान् ! आपके सुख के लिए मैं अत्यन्त प्रसन्नता, तत्परता और स्वीकृति से, आपका हूं, हज़ार बार मर सकता हूं आपके लिए। (**पीछे चलती है।**)

ओली० : सिज़ैरियो ! कहां जाते हो ?

वायोला : उसके पीछे जिससे मुझे प्रेम है, जिसे मैं अपनी आंखों से भी ज़्यादा चाहता हूं। उसकी तुलना में मैं हज़ार पत्नियों को नहीं

चाह सकता। यदि मैंने झूठ कहा है, तो अरे स्वर्ग के साक्षी देवताओ! मुझे दण्ड दो, कष्ट दो कि मैंने अपने प्रेम के बारे में झूठ कहा!

ओली० : हाय मुझे धोखा दिया गया! मैं कितनी निरीह और घृणित हो गई!

वायोला : तुम्हें किसने धोखा दिया? किसने तुम्हें सताया?

ओली० : क्या तुम भूल गए? क्या वह बहुत पुरानी बातें हैं? क्या पादरी साहब को बुलवाऊं?

ड्यूक : (**वायोला से**) चलो, चलो!

ओली० : कहां श्रीमान्! सिज़ैरियो! मेरे पति! ठहरो, मत जाओ!

ड्यूक : पति!

ओली० : हां पति! क्या यह अस्वीकार करेंगे?

ड्यूक : पति! एं! क्यों जी?

वायोला : नहीं श्रीमान्! यह झूठ है। मैं नहीं हो सकता।

ओली० : हाय! मालिक की अप्रसन्नता के भय से तुम अपना सत्य भी गंवा बैठे! पर डरो मत! अपने भाग्य को साहस से पकड़ो और अपनी वस्तुस्थिति को स्वीकार करो। तुम जिससे डर रहे हो, अब तुम उसके बराबर के दर्जे के हो गए हो!

[**पादरी का प्रवेश**]

आह! श्रेष्ठ पादरी! आप भी कैसे मौके से आ पहुंचे! बताइए मैं प्रार्थना करती हूं, जो अभी हाल में हुआ, यह तरुण और मैं, क्या है, क्या उसे कुछ समय गुप्त रखने की बात तय नहीं हुई थी, पर क्या करूं घटनाओं ने ही इसे इतनी शीघ्र प्रकट करने को विवश कर दिया।

पादरी : वह एक अखंड प्रेम की प्रतिज्ञा थी, जो मेरे सामने इन दोनों ने की थी। मैंने आवश्यक संस्कार भी पूर्ण कर दिए थे और हाथ मिलवाए थे, इन्होंने पवित्र चुम्बन लिया था, अंगूठियां बदली थीं। यह मैंने अपने पवित्र पद से सब कराया था, मैं इसका साक्षी हूं। और यह सब हुए अभी दो घंटे भी नहीं हुए हैं।

ड्यूक : ओ झूठे, मक्कार, दगाबाज़ ! अगर तू इस कमसिनी में ऐसा है तो वड़ा होकर तो न जाने कितना बदमाश वनेगा ! वह तो तुझे ज़रूर बरबाद कर देगी ! ले अब अपनी दुल्हन को संभाल, पर खबरदार आयंदा मेरे सामने कभी न आना।

वायोला : श्रीमान् ! मैं विरोध करता हूं···

ओली० : नहीं। कसम मत खाओ। सच से डरो। इतना भी क्या डरना ?

[सर ऐण्ड्रू का प्रवश]

सर ऐ० : भगवान के लिए ! डाक्टर ! सर टोबी के लिए एक डाक्टर भेजिए !

ओली० : क्यों क्या हुआ ?

सर ऐ० : मेरा सिर फट गया है, सर टोबी का भी। बचाइए। भगवान् के लिए। काश मैं अपने घर पहुंच सकता, चाहे जो भी खर्च हो जाए···

ओली० : तुम्हारा सिर किसने तोड़ दिया ?

सर ऐ० : तरुण सिज़ैरिओ ने ! वह जो ड्यूक ऑरसिनो की सेवा में रहता है। हम समझे थे वह हमसे डरेगा, पर वह तो खतरनाक शैतान निकला।

ड्यूक : सिजैरिओ ? मेरा सेवक ?

सर ऐ० : हे भगवान् ! वह खड़ा तो है। अच्छा। तुमने बिना मेरे कुछ कहे मुझे घायल किया, और जो मैंने किया, वह सर टोबी के ही कहने से तो किया था।

वायोला : यह सब मुझसे क्यों कहते हो ? मैंने कुछ नहीं किया। तुमने ज़रूर मुझपर तलवार खींची थी। मैंने तो हल्का-सा जवाब दिया था, तुम्हें घायल मैंने कब किया था ?

सर ऐ० : नहीं, तुमने किया। अगर लहू निकालना घायल करना है, तो देखो। अरे, तुम्हें तो यह बड़ी मामूली बात-सी लगती है। यह लो सर टोबी भी लंगड़ाते हुए आ रहे हैं। वह तो तुम्हें याद दिला देते, जो वे नशे में न होते, अभी तो फिर देखा जाएगा।

[सर टोबी और विदूषक का प्रवेश]

ड्यूक : अरे भई ! यह क्या मामला है ! बात क्या है ?

सर टो० : कोई बात नहीं। इसने मुझे घायल किया और कोई बात नहीं। कहीं डाक्टर भी है रे विदूषक ?

विदू० : वह बेकार है सर टोबी ? वह तो सबेरे ही नशे में डूबा हुआ था।

सर टो० : वह लुच्चा है। नशेबाज़, बेवकूफ ! हद के बाहर ! मुझे नशेबाज़ आदमी पसंद नहीं।

ओली० : ले जाओ इन्हें। इनका यह हाल किसने किया ?

सर ऐ० : सर टोबी, मैं आपकी मदद करूं, तब हम दोनों के घावों का एक साथ इलाज हो जाएगा।

सर टो० : तुम मेरी मदद करोगे ! बेवकूफ ! बदमाश ! बदशक्ल ! लुच्चे ! मग़रूर ! चिड़चिड़े ! मूर्ख !

[विदूषक, फेबियन, सर टोबी और सर ऐण्ड्रू का प्रस्थान]

[सैबैस्टियन का प्रवेश]

सैबै० : श्रीमती ! मुझे इसका बड़ा दुःख है, कि मैंने ही आपके आदमियों को घायल किया, पर मैं और करता भी क्या ? मेरी इज़्ज़त का सवाल था, और मेरा ही कोई घर का आदमी होता तो भी मैं यही करता। तुम्हारे चेहरे को देखकर लगता है, तुम मुझसे नाराज़ हो, पर मुझे माफ कर दो, मेरी प्रिये, अभी हमने जो इतनी प्रेम-भरी प्रतिज्ञाएं की हैं, उनकी याद से ही मुझे माफ कर दो !

ड्यूक : वही चेहरा, वही रूप, वही कपड़े, वही वेश और वही आवाज़ और फिर भी दो आदमी ! एक के ही दो रूप ! है न यही बात ?

सैबै० : मेरा प्रिय ऐण्टोनियो भी यहीं है। अरे मेरे दोस्त ! जब से तुमसे बिछोह हुआ है, तब से मैं तुमसे मिलने को कितना बेचैन था !

ऐण्टो० : यह है सैबैस्टियन !

सैबै० : क्यों क्या तुम्हें शक है ?

ऐण्टो० : क्या तुमने बिल्कुल अपने जैसा एक और आदमी भी बना डाला है ? देखो ! दोनों जवान बिलकुल एक-से हैं, ऐसा लगता

है एक ही फल काटकर दो हिस्से कर दिए हों ! कौन-सा है सैबैस्टियन !

ओली० : अद्भत ! नितांत अद्भुत !

सैबै० : हैं ! यह क्या मैं ही खड़ा हूं ? यह भाई तो नहीं हो सकता, क्योंकि मेरे भाई हैं ही नहीं। न मुझमें दैवी शक्ति है कि मैं एक से अधिक रूप में एक ही जगह एक ही समय में प्रकट हो सकूं ! पहले सौभाग्य से एक बहन थी, पर वह तूफानी लहरों में खो गई। (**वायोला से**) दया करके बताओ, तुम मेरे कौन हो ? किस देश के वासी हो और तुम्हारा क्या नाम है। तुम्हारे पिता कौन हैं ?

वायोला : मैं मेसैलिनी परिवार का हूं। मेरे पिता का नाम सैबैस्टियन था। मेरे भाई का भी यही नाम था, और ठीक तुम्हारे ही जैसा जवान था जब वह समुद्र की कब्र में समा गया। ऐसे ही कपड़े पहने था। यदि मृत व्यक्ति आत्मा बनकर हमारे पास आ सकते हैं, ठीक जीवित व्यक्ति के रूप और वेश में, तो तुम हमें कब्र में से हमें डराने ही आए हो।

सैबै० : मैं सचमुच आत्मा हूं, पर इसी पृथ्वी का, यहीं का वासी, यहीं के वेश में, इसीने मुझे जन्म दिया है। किन्तु यदि तुम युवक की जगह युवती होते, तो बाकी सब साक्ष्य ठीक है कि मैं इस सबको ज्यों का त्यों मान लेता और हर्ष के आंसुओं में तुम्हारे गालों को भिगोकर अपनी बहन का स्वागत करता। कहता : "आ वायोला, स्वागत है, तेरा स्वागत है।"

वायोला : मेरे पिता की भौंह पर एक तिल था।

सैबै० : मेरे पिता के भी था।

वायोला : और उनकी बेटी की १३वी सालगिरह पर उनका स्वर्गवास हुआ था।

सैबै० ठीक याद है यह भी। उनकी मृत्यु ठीक मेरी बहन की १३वीं सालगिरह को हुई थी।

वायोला : यदि मेरा पुरुष वेश ही अब हमारे पूर्ण आनन्द के अधिकार में बाधा डाल रहा है, तो कुछ देर धैर्य रखो और देखो कि सारी

घटनाएं और परिस्थितियां ठीक बैठ जाती हैं। इसका प्रमाण प्रस्तुत करने को मैं तुम्हें एक दयालु जहाज़ी के पास ले चलूं जिसके यहां मैंने अपना स्त्री वेश रखा है। उसने मेरी जान बचाई थी और उसकी मदद से मुझे इस योग्य स्वामी की सेवा करके जीवन-निर्वाह करने का अवसर मिला। बाकी जो हुआ है वह सब स्वामी और इन श्रीमती के संबंध की बात है।

सैबै० . (**ओलीविया से**) यह बात है श्रीमती ! तुमको धोखा हो गया। प्रकृति से तो यह सहज ही है कि स्त्री का आकर्षण स्त्री के प्रति हो। यदि यह प्रकट न होता तो तुम तो एक स्त्री से ही विवाह करना चाहती थीं। तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं हुई। और बीच में मैंने आकर धोखा दे दिया। तुम्हारी तो एक स्त्री और एक पुरुष दोनों से ही सगाई हो गई ?

ड्यूक : चकित-विभ्रांत न हों श्रीमती ! यह तरुण भी कुलीन है जन्म से। यदि यह जैसा है, सत्य है तो मेरे अरमानों की बरबादी में भी मुझे बड़ी तसल्ली मिली है। (**वायोला से**) सुन्दर युवक ! तुमने मुझसे हज़ारों बार कहा कि तुममें जो मेरे प्रति प्रेम है वह कभी स्त्री के प्रति नहीं हो सकता।

वायोला : मैं तो हज़ार बार यही कहूंगी और पूरी सचाई से अपनी बात ऐसे ही निभाऊंगी जैसे यह जगमाता सूरज दिन और रात का फ़र्क़ डाला करता है।

ड्यूक : मुझे अपना हाथ दो। अब स्त्री का वेश धारण करो, मैं तुम्हें देखना चाहता हूं।

वायोला : मेरा स्त्रीवेश उस कप्तान के घर है, जिसने मुझे बचाया था। वह किसी कारण से बंदी हो गया है। काउण्टेस के कारिन्दे मालवोलियो के कहने से। उसने उसपर कुछ अभियोग लगाया है।

ओली० : मालवोलियो को बुलाओ ताकि वह उसे छोड़ दे और मुझे याद आता है, मालवोलियो तो पागल हो गया है।

[**विदूषक का एक पत्र लिए फेबियन के साथ प्रवेश**]

मालबोलिया कैसा है विदूषक ?

विदू० : श्रीमती ! इन हालतों में जहां तक हो सकता है वह शैतान को हाथ-भर दूर रख रहा है। उसने आपको एक पत्र लिखा है। मैं इसे आपको सुबह ही दे देता, पर पागल की बात का क्या विचार करना, इसलिए मैंने इसको पहुंचाना ज़रूरी नहीं समझा था।

ओली० : अच्छा खोल के पढ़ो।

विदू० : तो श्रीमती एक मूर्ख के मुंह से एक पागल की बातचीत सुनने को तैयार हो जाएं। (**पढ़ता है**) भगवान के लिए, श्रीमती…

ओली० : क्या तुम्हारी अक्ल बिगड़ गई है ?

विदू० : नहीं श्रीमती ! मैं तो पागलपन पढ़ रहा था, अगर आप जैसा यह है वैसे ही सुनना चाहें तो आपको थोड़ी-सी छूट देनी ही होगी।

ओली० : कायदे से पढ़ो। ढंग से। होश में।

विदू० : हां श्रीमती, मैं यही तो कह रहा हूं। लेकिन उसके लिखे भाव को पढ़ने को मुझे वही करना होगा जो मैंने अभी किया, अतः श्रीमती ! ध्यान दें और ज़रा सोचें तो सही।

ओली० : (**फेबियन से**) अरे तुम लेकर पढ़ो।

फेबि० : (**पढ़ता है**) भगवान के लिए, श्रीमती ! आपने मुझसे दुर्व्यवहार किया है, मैं हर एक को सुना-सुनाकर कहूंगा। मैं आपकी ही भांति ठीक हूं, यद्यपि मुझे नशेबाज़ सर टोबी की देख-रेख में एक अंधेरे कमरे में बंद कर दिया गया है। मेरे पास अब भी आपका वह कागज़ है, जिसने मुझे वह सब करने को उकसाया, जो मैंने किया है और इसीलिए मैं आपके सामने इस रूप में आया। मैं उस पत्र से प्रमाणित करूंगा कि मैं ठीक हूं या आप दोषी हैं। आप मेरे बारे में चाहें सोचें यह शब्द तो आपने जो मुझ सताया है, इसी भाव से प्रेरित हुए हैं, और मैं आपके प्रति सेवक का व्यवहार छोड़कर ही इस समय ऐसा व्यवहार कर रहा हूं। दुर्व्यवहार से पीड़ित—मालवोलियो !

ओली० : यह उसीने लिखा है ?

विदू० : जी हां।

ड्यूक : इसमें तो कोई पागलपन नहीं झलकता।

श्रोली० : फेबियन, उसे आज़ाद करो और यहां लाओ!

[**फेबियन का प्रस्थान**]

श्रीमान्! जो संवाद मैंने अभी सुना है कि मैं अब सैबैस्टियन की पत्नी और वायोला की भाभी हो गई हूं, और इस नाते आपकी सरहज हूं, मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि हम सबका विवाह एक ही दिन हो, सारी दावत मेरे खर्चे से मेरे इसी घर में हो।

ड्यूक : मैं बिल्कुल स्वीकार करता हूं। (**वायोला से**) अब तुम्हारा स्वामी तुम्हें मुक्त करता है और तुमने जो स्नेह-भरे कष्ट उठाए हैं, इतना ध्यान देकर देख-भाला की है, और वह कार्य किया है जो स्त्री के कर्तव्य से इतना भिन्न है, और तुम्हारे पद और कोमल स्वभाव के इतना अधिक प्रतिकूल है, मैं कहता हूं कि तुमने जो मुझे स्वामी मानकर इतने दिन सेवा की है, इसलिए मेरा हाथ पकड़ो अब मैं तुम्हारी मालकिन की तरह सेवा करूंगा? तुम स्वामी की स्वामिनी होगी।

श्रोली० : आखिर मुझे बहन ही-सी मिल गई! वह भी वही जिसे मैं प्यार करती हूं।

[**फेबियन तथा मालवोलियो का प्रवेश**]

ड्यूक : यही वह पागल है?

श्रोली० : हां श्रीमान्! यही है! क्या बात है मालवोलियो!

माल० : श्रीमती! आपने मुझसे दुर्व्यवहार किया है! घोर दुर्व्यवहार किया है।

श्रोली० : मैंने? मालवोलियो! नहीं!

माल० आपने ही श्रीमती! देखिए अपना पत्र पढ़िए, अब मत कहिए कि यह आपका लिखा नहीं है। अगर आप इससे अलग तरह का लिख सकें तो लिखिए! लिखकर दिखाइए। कहिए यह आपकी मुहर नहीं है? अपने सम्मान का ध्यान रखकर कहिए, आपने मुझे इतना क्यों उकसाया! ऐसा स्नेह क्यों दिखाया! आपने ही मुझे मुस्काने, आड़ी गेटिसें पहनने, पीछे मोज़े पहनने को बढ़ावा

दिया, आपने ही सर टोबी और निचले तबके के लोगों पर कठोरता करने को कहा और मैंने आपका स्नेह पाने को यह सब किया, फिर आपने मुझे अंधेरे कमरे में क्यों बन्द करा दिया, वहां मेरे पास एक पादरी क्यों भेजा जाता था ? मुझे ऐसा बेवकूफ बनाया गया जैसा शायद ही कोई बनाया गया हो ! बताइए क्यों ! मैंने क्या किया ऐसा ?

ओली० : उफ ! मालवोलियो ! यह मेरे हाथ की लिखावट नहीं है। हां, मेरे लेख से मिलती-जुलती ज़रूर है। निश्चय ही यह मेरिया का लेख है। हां, याद आया, उसीने मुझसे पहले-पहल कहा था कि तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। तब तुम मुस्काते हुए आए, ऐसे ही जैसे इस पत्र में करने को कहा गया है। शांत रहो, धीरज धरो। तुमपर एक चाल खेली गई है, जो बड़ी निर्दय है। इस मामले में पूरी जांच की जाएगी, और जब पता चलेगा कि यह किसकी करिस्तानी है, क्यों की गई है, तब मैं तुमसे वादा करती हूं कि तुम्हारे दुःख को अपना समझकर ही दोषी को दण्ड दूंगी।

फेबियन : श्रीमती इस आशा में कि भविष्य में होने वाली अप्रिय घटना की सम्भावना ही दूर हो जाए, जो निश्चय ही इन सुखद घटनाओं के साथ अप्रासंगिक सिद्ध होगी, क्योंकि हम सब इस समय विस्मय से घिरे हुए हैं, मैं स्वीकार करता हूं कि मालवोलियो पर खेली गई चाल सर टोबी ने और मैंने बनाई थी यह सिर्फ इसके अभद्र और कटु व्यवहार से बदला लेने के लिए। सर टोबी ने मेरिया से प्रार्थना की, और उसने उन्हें प्रसन्न करने को पत्र लिखा इसलिए सर टोबी ने उसे पुरस्कार दिया है कि उससे विवाह कर लिया है। और बाकी कैसे यह चली गई, उस कहानी को सुनकर आप लोगों को गुस्सा नहीं, हंसी ही आएगी। आप भले हों दोनों तरफ की बातें सुन लें।

ओली० : उफ ? बेचारा ! कैसा बेवकूफ बनाया गया है। इन सबने कैसा घेरा है !

विदू० : क्यों ? 'कुछ जन्म से महान होते हैं, कुछ महानता प्राप्त करते

हैं और कुछ पर जबरन लाद दी जाती है।' मैं भी इस नाटक के एक विष्कंभक में सर टोपाज़ बना था। पर अब जाने भी दो। 'भगवान् कसम मैं उतना ही ठीक हूं जितने तुम हो?' याद है न? 'श्रीमती! आप भी इस रूखे-सूखे दिमाग के बेवकूफ की बातों पर जाने कैसे हंस लेती हैं! आप न हंसें तो इसमें है क्या?' और बस समझ लो। समय का चक्र घूमता हुआ ऐसे ही प्रतिशोध लिया करता है।

माल० : मैं तुम सबको इसका बदला चुकाऊंगा। (**प्रस्थान**)

ओली० : उसके साथ सचमुच बड़ी ज़्यादती हुई है।

ड्यूक : उसके पीछे जाओ और उसे मना लो। उसने अभी उस कप्तान के बारे में कुछ नहीं बताया! जब वह भी हो जाएगा और अच्छा समय आएगा, हमारे प्रेम-भरे हृदय सदा के लिए एक हो जाएंगे! तब तक ओलीविया बहन! हम तुम्हारे ही घर रहेंगे। मेरे साथ चलो सिज़ैरियो! तुम अभी अपना यही नाम रखो जब तक तुम पुरुषवेश में हो। बाद में जब तुम स्त्रीवेश धारण कर लो तब तुम मेरी प्रिय हो जाना, मेरी रानी! मेरी कल्पना की रानी!

[**सबका प्रस्थान, केवल विदूषक रह जाता है।**]

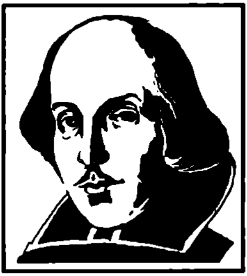
विदूषक : [**गीत**]

जब मैं प्रिय था रे छोटा शिशु, छोटा शिशु, रे छोटा बालक,
हेई हेई हेई, चला पवन तब, बरसा रे बादल सुखदायक!
किन्तु खिलौनों से मैं खेला, दिया न दोष किसी ने मुझको!
नित्य बरसता था रे बादल, नित्य पवन बहता सुखदायक!
किन्तु हुआ जब तरुण पुरुष मैं, बढ़ा काल में चलकर लायक!
हेई हेई हेई, चला पवन तब, बरसा रे बादल सुखदायक!
गुण्डों चोरों से रक्षा हित, सबने द्वार बन्द कर डाले,
नित्य बरसता था रे बादल, नित्य पवन बहता सुखदायक!
किन्तु ब्याह जब मैंने अपना किया कि मैं भी हूं, सुखपालक,

हेई हेई हेई, चला पवन तब बरसा रे बादल सुखदायक,
आत्मप्रशंसा से मैं कोई उन्नति अपनी कर न सका रे
नित्य बरसता था रे बादल नित्य पवन बहता सुखदायक !
आई रे जब वृद्धावस्था, शय्या मिली मुझे सुखदायक,
हेई हेई हेई, चला पवन तब बरसा रे बादल सुखदायक,
मैंने मदिरा ढाल नशे में बहलाया इस जी को कितना,
नित्य बरसता था रे बादल नित्य पवन बहता सुखदायक !
बहुत दिनों के पहले सचमुच कभी बनी ये दुनिया लायक,
हेंई हेई हेई, चला पवन तब बरसा रे बादल सुखदायक !
पर उससे क्या होता है अब, खेल खतम हो गया हमारा,
हम तो तुम्हें सदा खुश रखना अपना काम समझते लायक !

[प्रस्थान]

मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा-दिल्ली–110032
1515



विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेज़ी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म 26 अप्रैल, 1564 ई. को स्ट्रैटफोर्ड-ऑन-एबोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबंध भी नहीं किया। 1582 ई. में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी एलिज़ाबेथ के शासन काल में 1587 ई. में शेक्सपियर लंदन जाकर नाटक कम्पनी में काम करने लगा। अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाए। 1616 ई. में उसका स्वर्गवास हुआ।

शेक्सपियर ने लगभग 36 नाटक लिखे हैं, कविताएं अलग। उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं : जूलियस, सीज़र, ऑथेलो, मैकबेथ, हैमलेट, सम्राट लियर, रोमियो जूलियट-दुःखान्त, वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एडू अबाउट नथिंग), तूफान-सुखांत। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी।

राजपाल